श्री सयाजी साहित्यमाला पुष्प २२८

कुङ्मुनि ज्ञानामृत

卐

चीनी ग्रंथ से
अनुवादक

डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री.
डी. लिट्.

प्रकाशक
जयदेव ब्रदर्स
पुस्तक प्रकाशक, विज्ञापक,
आर्यपुरा, बड़ोदा.

मुद्रक
छोटालाल लालभाई पटेल
लक्ष्मी इलेक्ट्रिक प्रेस
बड़ोदा.

मूल्य १-०-०
प्रतिएं १०००
तारीख ३१-१२-३३

श्री.

विज्ञप्ति

स्वदेशीय भाषा की उन्नति कराने के सदुद्देश से **श्रीमंत महाराजा श्री सयाजीराव गायकवाड** सेनाखासखेल शमशेर बहादुर जी. सी. एस्. आई., जी. सी. आई. ने कृपा पूर्वक दो लाख रूपए सुरक्षित रख दिए हैं। उसके व्याज में से विविध विषयोंका उत्तम लोक साहित्य रचाकर "**श्री सयाजी साहित्य माला**" नामक ग्रन्थावलीद्वारा प्रकाशित कराने की योजना की गई है।

इस योजना के अनुसार श्री डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री डी. लिट्. द्वारा "**कुङ्गमुनि ज्ञानामृत**" नामक यह पुस्तक असल चीनी भाषा के कोन्फ्युशियस के ग्रंथसे अनुवाद करवा कर इस माला के पुष्प २२९ के रूप में प्रकाशित की जाती है।

प्राच्य विद्यामंदिर भाषान्तर शाखा **बड़ोदा.**	**मं. र. मजमुदार** भा. म.	**भा. का. भाटे.** राज्य विद्याधिकारी.

*　　कुङ्कमुनि वचनामृत　　*

बुद्धिमान् को जलसे प्रेम होता है
धर्मात्मा को पर्वत् से।
बुद्धिमान् क्रियावान होता है
धर्मात्मा शान्त चित्त होता है॥



चीन देश का तत्ववेत्ता

कनफ्यूशियस अर्थात् कुङ्गमुनि.

भूमिका

चीन मुनि लोगों का देश है। यहां पीर पैगंबर, अवतार आदि नहीं माने जाते। प्राचीन काल से तत्त्वदर्शी मुनि लोगों का उपदेश माना गया है। ५००० से अधिक वर्ष बीत, जब चीन में मुनि ज्ञान का प्रचार था।

चीन के मुनि साधारण पुरुषों के समान रहते सहते थे। उन का जन्म और कर्म दिव्य न था और न उनमें कोई चमत्कार था। जो धर्म वह सिखाते थे उसको पूर्ण रूप से पालन भी करते थे। बस यही उनका चमत्कार था। मुनि-धर्म में ईश्वर का अस्तित्व माना गया है। प्राचीन काल में ईश्वर को "शांगटी" कहते थे। वह एक, निराकार, और विभु था। आत्मा और ईश्वर का क्या संबंध था, इस विषय की कोई चर्चा नहीं देखी जाती। आत्मा को अमर मानते थे, पर पुनर्जन्म-वाद चीन में बौद्ध मत के प्रभाव का फल है। मुनि-धर्म में मृत आत्मा संबंधी होम यज्ञ करने की प्रथा थी। श्राद्ध भी होताथा। यह भी माना जाता था कि मृतआत्मा अपने अलौकिक देह में कभी कभी अपने पुत्र और पौत्रों के पास आती हैं। मृत्यु के पश्चात् आत्मा की क्या गति होती है, इस का विचार करना

चीनी लोग व्यर्थ समझते हैं। नरक और स्वर्ग की चर्चा कहीं नहीं है। मृत आत्माओं से प्रार्थना नहीं की जाती और न वह दूसरों के जीवन में किसी प्रकार हस्तक्षेप करती हैं।

मुनि-धर्म ईश्वर प्रदत्त नहीं है। इन के उपदेश वेद, कुरान, बाइबिल आदि के समान आकाश वाणी नहीं माने जाते। मुनि लोगों ने अपने लौकिक ज्ञान द्वारा यह जान कर कि मनुष्य समाज का हित किन किन नियमों पर अवलम्बित है और मनुष्य किस प्रकार दूसरों की भलाई में अपनी भलाई भी चाहता है, अपने धर्म का उपदेश किया है। मनुष्य समाज एक विशाल वृक्ष है, जिस में प्रत्येक मनुष्य एक पत्ता अथवा कली है। किसी के भी दुःखी रहते हुए अन्य भी कभी सुखी नहीं रह सकते, इस लिए प्रत्येक को सब का सुख साधना आवश्यक है। यही मुनि-नीति है।

मनुष्य की प्रकृति बुरी है अथवा भली, इस पर प्राचीन चीन में गम्भीर विचार किया गया था। अनेक मुनियों का सिद्धान्त है कि मनुष्य का स्वभाव वास्तव में बुरा है। स्वार्थ, अपना सुख, लोभ, आदि अवगुण इसकी प्रकृति में हैं और इनको सुधारने के लिए शासन और शिक्षा की आवश्यकता है; पर कुंगमुनि का सिद्धान्त इसके विरुद्ध है। मुनिवर मनुष्य की आत्मा को ईश्वर-रूप तो नहीं मानते पर इसके स्वभाव को शुद्ध मानते हैं। मेन्सियस जो कुंग मुनिका प्रधान शिष्य उनसे ८

वर्ष पीछे हुआ है कुंगमुनि के सिद्धान्त को अनेक युक्तियों द्वारा पुष्ट कर गया है ।

मसीह से ३५०० वर्ष पूर्व पीत—सम्राट चीन के महाराजा हुए हैं । यह भी महामुनि माने जाते हैं । यावो, शुनु यू, टांग जो मसीह से २५०० वर्ष पूर्व चीन के महाराजा हुए हैं वे सब मुनि—धर्म के आदर्श माने जाते हैं । न्याय, त्याग, परोपकार, नीति में आदर्श होगए हैं । उस समय चीन में योग्य पुरुष को राजसिंहासन मिलता था । इन में से किसी ने भी अपने पुत्र को राज्य नहीं दिया । महाराजा शुन को यदि चीन का युधिष्ठिर कहाजाय तो अत्युक्ति न होगी । शुन ने मदिरा का निषेध किया था, जूए को वर्जित किया था, नदियों के सेतू बनवाए, पटवस्त्र बनाने के शिल्पालय खोले और अखिल एशिया की एक विराट—सभा बनाने का उद्योग किया था । इनका द्वार दिन रात खुला रहता था । प्रजा में से जिस किसी को दुःख हो वह महाराजा के द्वार पर पुकार कर सकता था ।

यू ने दस साल खेतों में श्रमजीवियों के समान काम कर चीन को नदियों की भीषण बाढ़ से बचाकर सभ्यता का प्रचार किया । यह महाराजा नौ वर्ष तक घर में नहीं आए बराबर क्षेत्रोंमें बंध बनवाते रहे । चीन में दंत कथा है कि महाराजा यू कि कीर्ति अकाश के समान थी ।

कुंगमुनि ने अपने उपदेशों में इन पांच आदर्श महाराजाओं का वर्णन ही नहीं किया बल्कि इनको अपने उपदेशों का धर्मगुरु माना है।

चीनी लोग ज्ञान और विद्या के उपासक हैं धन और शक्ति की उपासना चीन में नहीं होती। मुनि धर्म का सिद्धान्त भी यही है जिस प्रकार हो सके मनुष्य को साधु रहना चाहिए। कभी भी स्वार्थ के वश हो दूसरों का बुरा चाहना ठीक नहीं।

अपने पांच सहस्र वर्षों से ऊपर के इतिहास में चीन दोबार संसार में महाशक्तिशाली राज्य रह चुका है। हान राज के समय चीन की सीमा कैस्पियन सागर तक थी और रोम के महाराज्य की सीमा चीन की सीमा से मिलतीथी। रोम ने चीन की शक्ति और प्रभाव को अनुभव कर कभी चीन पर आक्रमण नहीं किया।

टांग वंश में एक बार चीन फिर संसार में अद्वितीय शक्ति थी। चीन का शासन ऐसा अच्छा था कि अन्य देश अपनी प्रसन्नता से चीन के महाराजा की प्रजा बनना चाहते थे। जावा और स्याम ने यह इच्छा प्रकट की थी। एक बार लंका और अदन भी चीन के अंतर्गत थे। बर्मा और नेपाल तो ४० साल पूर्व तक चीन के आधीन थे।

कुब्लईखां जो बुद्धधर्मानुयाई थे उनका राज्य चीन से लेकर आधे युरोप तक था। एशिया तो प्रायः सब ही चीन के आधीन था।

मसीह से ६०० वर्ष पूर्व चीन में काव्य, विज्ञान, इतिहास, आयुर्वेदादि की विशाल उन्नति हो चुकी थी। सुम्माचीन नामक महा इतिहास वेत्ता जो कंटान निवासी था मसीह से २०० वर्ष पूर्व चीन का पूर्ण इतिहास लिख गया है। केवल मनुष्य ही नहीं विदुषी स्त्रियां भी अपना नाम चीन के विद्या-क्षेत्र में छोड़ गई हैं। हान वंश का इतिहास जो चीन में काव्य दृष्टि से महा आदर के साथ देखा जाता है एक स्त्री द्वारा रचित है। कविता में तो चीनी नारियों ने परम सिद्धि प्राप्त की है।

चीन में मंगोल आए, मानचू आए, तारतार आए पर कुछकाल के बाद सब चीनी बन गए। चीनीखाना, चीनी रहना सहना, चीनी भाषा, चीनी धर्म, चीनी सभ्यता सब कुछ ग्रहण कर पूरे चीनी बन गएं। जो मंगोल चीन को जीत कर चीन के महाराजा बने चीन ने उन की आत्मा को अपनी सभ्यता द्वारा जीत कर उन को चीनी बना लिया। चीनी सभ्यता एक ऐसा महासागर है कि जो बाहर की नदी इस में मिली वह इस के रूप में अपना अस्तित्व खो बैठी।

जापान चीन का प्रधान शिष्य है। जापान की भाषा, काव्य, कला कौशल, रीतभात सब चीन से आई है। जापान में चीन का प्रभाव प्रत्येक बात में देखा जा सकता है। राज-पद्धति भी चीन से ली गई थी, जापान की परम प्राचीन शिन्तो धर्म की पुस्तक जो सन् ७१२ में प्रकाशित हुई चीनी भाषा में है। शिन्तो धर्म में चीनी प्रभाव है।

इसी प्रकार कोरियाभी चीनका शिष्य है। चार सहस्र वर्ष से चीन के साथ रहकर कोरिया ने चीनी सभ्यता सीखली है। मंगोलिया, मंचूरिया, अन्नाम, कामभोज, बर्मा, स्याम, जावा, तिब्बत आदि सब चीन की सभ्यता के ऋणी हैं।

इटली देशवासी मार्कोपोलो जो चीन में हैंगचाऊ प्रान्ताधीश था चीन के संबंध में कुछ लेख लिखगया है। उसने चीन की प्रशंसा करने में कोई त्रुटि नहीं उठा रक्खी। मार्कोपोलो स्वयं कुंगमुनि का अनुयायी बन गया था। रानी कोकाचुन पर आसक्त होते हुएभी रानी को अपने हाथ में पाकर भी उसने उस महासुन्दरी से यही समझकर विवाह नहीं किया कि वह कुंगमुनि कि सिद्धान्त को तोड़ना नहीं चाहता था।

जब फादर फ्रांसिस जेवियर जापान में सत्रहवीं शताब्दी में ईसाई धर्म प्रचार करने गए तो जापानियों ने उनसे कहा : क्या चीन ने आपका धर्म स्वीकार कर लिया ? यदि ईसाई धर्म चीन ने नहीं माना तो हम भी नहीं मानेंगे।

चीन जैसी ज्ञान सम्पन्न जातिने बुद्ध धर्म को ग्रहण किया यह बात बुद्ध धर्म का महत्व बतलाती है। बुद्धदेव का विज्ञान चीन के मन में घर कर गया और चीनी ज्ञानियों ने बुद्ध धर्म की उन्नति की। सहस्रों नए ग्रंथ बुद्ध धर्म पर लिखे गए। लाखों मन्दिर और स्तूप बने। फिर भी चीन ने अपना मुनि-धर्म नहीं त्यागा।

मिंग राज में वांग यांग मिन नामक धुरंधर तत्ववेत्ता था। उसने बुद्ध धर्म की छाया लेकर मुनिधर्म पर नूतन प्रकाश डाला और एक ऐसी शक्ति उत्पन्न करदी कि जिसने जापान की जागृति में भारी सहायता की। १८६८ में जब जापान ने नवीन शासन पद्धति ग्रहण कर संसार–क्षेत्र में पद रक्खा तो उस समय के नेताओं में अनेक वायांग मिन के अनुयायी थे।

जिस चीनी ग्रंथ का अनुवाद हमने किया है यह कुङ्गमुनि के चार ग्रंथों में प्रधान माना जाता है। इसकी सहस्रों टीकाएं और भाष्य विद्यमान हैं। कहाजाता है कि जिस एक पुस्तक ने चीनी जाति को सभ्यता सिखाई और अबतक जीवित रक्खा वह यही पुस्तक है। हमने पीकिंग, नानकिंग, हैंगचाव आदि के विद्वानों से मित्रता कर कुङ्गमुनि के सिद्धान्तों को सुना। जब हम हारडून कालिज में विज्ञान और साहित्य के मुख्य अध्यापक थे तो चीन के महाराजा के गुरु श्री वांग भी वहां इसी ग्रंथ पर व्याख्यान देते थे। हमने इन महोदय से उस विज्ञान का तत्व सुना। उन दिनों हम को चीनी भाषा का अल्प ज्ञान था और वांग महाशय टोक्यो विश्व विद्यालय में रह चुके थे इस कारण जापानी भाषा से परिचित थे। इन्हों ने हम को जापानी भाषा में इस विज्ञान का तत्व समझाया। चीन के परम विद्वान् और ज्ञानियों के शिरोमणि महाशय चांग–पि–लिन से और हम से चीन में भेंट हुई। इन्हों ने भी कृपा कर मुनि धर्म हम को सुनाया। डाक्टर सन यट सेन जो चीनी प्रजा-

तंत्र शासन के जन्मदाता और प्रथम सभापति थे हमारे परम मित्र थे। इन के घर पर ज्ञानवान लोगों की धर्म चर्चा होती थी। हमने दो वर्ष तक इस चर्चा में भाग ले कर मुनि धर्म के तत्व को समझा।

न्याय-मंत्री वू सान महोदय और डाक्टर वांग चिन टिंग जो इन दिनों चीनी राज्य में अंतर राष्ट्रीय सचिव हैं हमारे परम मित्र हैं इन महाशयों से भी हमने मुनि-धर्म सुना है और सीखा है।

१९२८ सन में हमने टिन शिन में चीन के महाराजा श्वांग टुंग के दर्शन किये तथा अनेक बार धर्म चर्चा हुई। महाराजा ने कहाः—चीन का सबसे उज्ज्वल रत्न मुनि-धर्म है। मेरे पूर्वज महाराजा कागसी ने इसी के प्रभाव से ६० वर्ष राज्य कर चीन को आदर्श देश बना दिया था।

चीनी लोग बड़े सभ्य हैं। सरलता इन में कूट कूट कर भरी है। चीनी माताएं भारत की माताओं के समान साध्वी, पवित्र और दयावती हैं। एक बार हम कन्या विश्व विद्यालय में अंग्रेज़ी साहित्य पर व्याख्यान देते थे। चीनी कन्याओं को देखकर भारत की भगिनियां याद आती थीं। शेक्सपीयर के रोम्यो जूलियट पर जब हमने भाषण आरम्भ किया तो चीनी कन्या बोली : गुरुदेव ! हमको इस संसार के प्रेम का साहित्य नहीं सुहाता। हम कन्याएं हैं हम को भोगविलास की बातों में लज्जा आती है।

इन बातों से मुनि-धर्म के प्रभाव का पता लगता है।

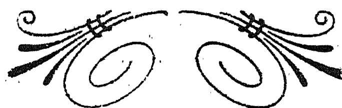
चीनी सभ्यता का मूल सूत्र शांति है। ऐक्यता का स्थापन करना मनुष्य का परम कर्तव्य है। अपने चित्त की वृत्तियों और बाहर के पदार्थ तथा संबंधों में इस प्रकार का ऐक्य भाव स्थापित करना जैसे गत बजाने के समय सितार के तारों में होता है मनुष्य का धर्म है। कुङ्गमुनि का कथन है कि मैं सम्पूर्ण विश्व में ऐक्य भाव प्रचार करने आया हूं।

मुनि-धर्म का आरम्भ माता पिता की भक्ति है। जिसने माता पिता की परम भक्ति न की वह अपने जीवन में साधु नहीं बनता। इस का यह प्रयोजन नहीं है कि माता पिता के कहने पर हत्या, चोरी और अन्य अधर्म में प्रवृत्त हो जाय। उन का विरोध करना हो तो इस प्रकार करे जिस में उन का चित्त न दुःखे। सन्मान को हाथ से न जाने दे।

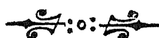
कुङ्गमुनि के समय चीन में चावं महाराजा सिंहासन पर थे। लोयांग राजधानी थी। उन दिनों चीन ३०० से अधिक छोटी छोटी संस्थाओं में बटा हुआ था। एक से दूसरों का मेल न था। परस्पर द्रोह भरा था। धर्म का ह्रास हो गया था। अनेक मत प्रचलित थे। यांग त्सु चार्वाक मत का प्रचार कर रहा था। लावत्सु ज्ञान और संन्यास का प्रचार कर रहे थे। कर्म को त्याग जंगल में कुटि बनाकर ध्यान में जीवन काटने का आदर्श महात्मा लावत्सु ने फैलाया। सुनत्सु मनुष्य की आत्मा में बुराई के अङ्कुर का प्रचार कर रहा था। एक

सौ से अधिक मतमतान्तर चीन में प्रचलित थे । यूनान का पूरा दर्शन शास्त्र चीन में देखा जाता था । पारमीनाइडिस और हिक्लेटिस के मत में और टाव मत प्रचार में कम भेद है । इसी प्रकार ऐसा कोई भी मत नहीं जो यूनान में हो और चीन में न पाया जाता हो ।

मुनि–धर्म को एक बार फिर जीवित कर चीन को कर्म में प्रवृत्त करने को कुङ्गमुनि ने जन्म लिया । इन के जीवन का दिग्दर्शन कराते हैं । हमने शांगटुंग में कुङ्ग–मुनि की समाधि पर पुष्प चढाए और ध्यान किया । वहां उन के वंशजों से सुना वृत्तान्त यह है ।



कुङ्गमुनि का संक्षिप्त जीवन.



मसीह से २६३७ वर्ष पहिले चीन में ह्वांग टे नामक परोपकारी विद्वान् हुए हैं। इन्होंने चीन पर अति उपकार किया है। कुङ्गमुनि के वंश का संबंध इन महात्मा तक मिलता है।

आपके पूर्वज अनेक वार प्रान्ताधीश रह चुके थे।

आपके पिता शूरवीर और विद्वान् थे। महाराजा की सेना में उच्च अधिकारी थे। उनका नाम था शूह लियांग हिए। उनके नौ कन्याएं थीं और एक पुत्र। पुत्र लूला था।

हिए ने साठ साल की अवस्था में दूसरा विवाह किया। यह कन्या चतुर थी और इसका नाम था चिंग त्से। इनके पुत्रका नाम कुङ्गफुत्जे हुआ। चीनी लोगों के अनेक नाम होते हैं। उसी पुरुष को मित्र और नाम से, माता पिता और नाम से और राजाधिकारी और नाम से पुकारते हैं। बालकपन में कुङ्गमुनि का नाम चुंग ने था। आपका जन्म मसीह से ५५१ वर्ष पूर्व आधुनिक शंगटुंग नामक प्रांत के चो नामक स्थान पर हुआ।

तीन वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। घर में निर्धनता छा गई। फिर भी आपने विद्याभ्यास मन लगा कर

किया । बालकपन में इन का शांत स्वभाव, तीव्र बुद्धि और नम्रता लोगों को प्यारी लगती थी । आपने लिखा है :—

" जब मैं बालक था तो मेरी दशा दीन थी । मैंने मन लगाकर अनेक विषयों में योग्यता प्राप्त की । पर यह सब छोटी बात थी " ।

जब आप १९ वर्ष के थे तो कीन कॉन नामक विख्यात कुल की कन्या से आपका विवाह हुआ और दूसरे वर्ष आपके घर पुत्र जन्म हुआ । बीस वर्ष की अवस्था में आपकी विद्या, चरित्र और बुद्धि-मत्ता प्रांत में प्रख्यात हो चुकी थी । पुत्र जन्म पर वहां के राजा ने आप के घर एक टोपी और कुछ प्रसाद भेजा ।

पहिले आप भंडारी के पद पर आरूढ हुए । दूसरे वर्ष क्षेत्र पति बनाए गए । सेवा पद साधारण था पर आप अपना काम पूर्ण चतुरता और धर्मानुसार करते थे । जब आप भंडारी के पद पर थे तो कहा करते थे : " मैं अपना लेखा बही ठीक रखना अपना धर्म समझता हूं । बाकी बातें साधारण हैं । "

जब आप क्षेत्र-पति थे तो कहते थे : " मेरी गायें और बैल सब हृष्टपुष्ट और सुखी रहें यह मेरी परम इच्छा है " । आपने २२ वर्ष की अवस्था में उपदेश करना आरम्भ किया । शीघ्र ही आपके घर दूर दूर से विद्यार्थी आने लगे । इतिहास, नीति और कार्य कुशलता के उपदेश लोग चाव से सुनते

थे। आपके उपदेशों का कोई नियत शुल्क न था। जिसने जो कुछ दिया वही प्रसन्नता से ले लिया और यदि किसी ने कुछ न दिया तब भी उपदेश देते रहे। आप अपने शिष्यों से यही चाहते थे कि वह अपने चरित्र सुधारते हुए धर्म उन्नति में दत्त चित्त हों।

मसीह से पूर्व सन् ५२८ में आपकी माता का देहान्त हुआ। आपने बड़े यत्नसे अपने पिता की समाधि के साथ ही उनकी समाधि भी बनवाई।

आपने गान विद्या प्रेम से सीखी और अच्छा गाना गाने लगे। सितार बजाना भी सीखा। इन दिनों ल्ह् राजा के राज्यसभा में एक प्राचीन इतिहास वेत्ता आया। कुंगमुनि ने इस से प्राचीन इतिहास सीखा।

तीस वर्ष की अवस्था में कुङ्गमुनि धर्म में निष्णात होगए।

मसीह से पूर्व ५१७ सन् में ल्ह राज का प्रधान मंत्री मांग ही परलोक सिधारा। उसने मृत्यु शय्या पर यह कहा : "क्या करना योग्य है और क्या अयोग्य। किसके साथ क्या बर्ताव योग्य है इन बातों के बिना जाने मनुष्य संसार यात्रा में सफल नहीं हो सकता। मैंने सुना है कि कुङ्ग क्यू नामक महा विद्वान् जो मुनियों के कुल से हैं और जो धर्म पथ पर पूर्ण रूप से चलते हैं इस के तत्व भली भांति जानते हैं। मेरी मृत्यु के पश्चात् हो के उक्त कुङ्गमुनि का शिष्य होकर धर्म शिक्षा पावे यह मेरी इच्छा है।"

हो के कुङ्गमुनि का शिष्य बना और उनके उपदेशों में इसका नाम मांग ही है। हो के राजा का भ्राता था और धन संपन्न था। इसके आने से कुङ्गमुनि का यश फैलने लगा।

एकदिन कुंगमुनि ने होके से चाव राजा के राज्यसभा में जाने की इच्छा प्रगट की। इसने चावराजा से कहा और उन्होंने रथ भेजकर मुनि को दर्बार में बुलाया।

इन दिनों चीन की राजधानी होनान प्रांत के लोयांग नामक नगर में थी। महाराजा चाव नाम को तो चीन के महाराजाधिराज थे पर वास्तव में इन का अधिकार कुछ न था। छोटे राजा स्वतंत्र बन बैठे थे और चाव महाराज की बात नहीं मानते थे। कुङ्गमुनि राज्य में पद प्राप्त करने नहीं आए। इन का अभिप्राय था कि वहां प्राचीन विद्या की खोज कर ज्ञान प्राप्त करें। मुनिजी राजनैतिक पुरुष न थे। इन को किसी की चाटुकारी करना या स्वार्थ सिद्धि के लिए नीच बनना नहीं आता था।

इन दिनों महाराजा चाव के ग्रंथ विभाग का अध्यक्ष लावटान था जो लाव त्सु के नाम से विख्यात है और जिस का ग्रंथ टाव टे किं संसार में अब भी अत्यंत आदर की दृष्टि से देखा जाता है। इन के जन्म और मृत्यु का कुछ वृत्तान्त ज्ञात नहीं। इन का उपदेश यूरोप में टाव धर्म के नाम से प्रसिद्ध है। उपनिषद् के त्याग निष्काम कर्म और शांति प्रधान सिद्धान्त से इन का सिद्धान्त मिलता है। यह सांसारिक कर्म धर्म नहीं

सिखाते । आत्म ज्ञान में लीन हो कर समाधि में रहना ही इन का परम उद्देश्य है ।

लावटान और कुङ्गमुनि के सिद्धान्त एक दूसरे के विरुद्ध हैं । कुङ्गमुनि संसार का परोपकार निष्काम कर्म, धर्म और विद्या प्रचार तथा यथायोग्यता द्वारा करना चाहते हैं । इन के मत में त्याग और संन्यास को अच्छा नहीं माना । पुरुषार्थ को ईश्वर का अंग मान कर न्याय और धर्म की राजद्वारा प्रवृत्ति पर आग्रह करते हैं ।

लावटान इन दिनों वृद्ध था । युवा कुङ्ग से इस ने भेंट की । इन दो महापुरुषों की बातचीत नहीं लिखी गई । सुम्माचीन नामक इतिहास वेत्ता जो लावटान सम्प्रदाय का है अपने इतिहास में कुछ लिख गया है । उसके कथनानुसार वृद्ध महाज्ञानी लावटान ने कुङ्गमुनि से कहा : " ज्ञानोपदेशकों को मृत्यु खा जाती है । उन की अस्थि धूल में मिल जाती हैं । केवल उन के शब्द रह जाते हैं । जब महापुरुष को अनुकूल काल प्राप्त होता है तो वह ऊपर उठता है और काल के प्रतिकूल होने पर नीचे जा छिपता है । मैंने सुना है कि धनवान् वणिक भी अपने को निर्धन कहता है और महापुरुष भी धर्म सम्पन्न होते हुए अपने को साधारण मनुष्य बताता है । अपनी गर्भपूरित वासनाओं को दूर करो और कपट का वेश उतार कर दूर रक्खो तुमको इनसे सच्चा लाभ नहीं प्राप्त होगा । अपनी अनियमित इच्छा को रोको। मैं तुमसे यही कहता हूं।"

कुङ्गमुनि पर लावटान के सत्संग का बडा प्रभाव पड़ा। वयोवृद्ध ज्ञानी ने इनके मन को जीत लिया। उनके त्याग और योग ने अपना असर अवश्य जमाया। सुम्माचीन का कथन है कि कुङ्गमुनि ने लावटान के विषय में अपने शिष्यों से कहा:—

"मैं पक्षियों की उड़ान का क्रम जानता हूं। प्राणीकैसे भागते हैं और मछली कैसे तैरती है यह मैं जानता हूं। पक्षियों को तीर बेधते हैं, भागते पशु जाल में फस जाते हैं, मछलियां भी बंशी और जाल में फंसती हैं। मुझे ज्ञात नहीं कि टावटान किस ज्ञान द्वारा बादलों से परे उड़ता है। कैसे आकाश में जाकर क्रीडा करता है। आज मैं लावटान के दर्शन कर आश्चर्य में मग्न होगया हूं।"

लो यांग में कुंगमुनि ने पुस्तकालयों को देखा और प्राचीन इतिहासके ग्रंथ बांचे। धर्म मूर्ति महाराजा यावो, शुन, यू आदि के चित्र देखकर प्रसन्न हुए। वहां की हवन यज्ञ की भूमि को देखा। वेदी को देखकर कहा:—यज्ञद्वारा राज की वृद्धि होती है।

चांग ह्रांग नामक प्रसिद्ध गायनाचार्य्य मुनि से मिलने आया। इनका शांत स्वभाव, गम्भीरता और निष्कपटता को देख मोहित हो गया। उसने कहा:

"मैंने चिगने (कुंगमुनि) में मुनि-चिह्न देखे हैं। इनके नेत्र कमल के समान और मस्तक विशाल है। बाहु

लम्बी और कटि कच्छप की सी है। पद माप लम्बे युवान टांग के समान हैं। जब बात करते हैं तो प्राचीन महाराजाओं की प्रशंसा करते हैं। नम्रता और दया से भरे हैं। इनका ज्ञान सम्पूर्ण विद्या में है और स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है। वास्तव में यह मुनि हैं।"

लो यांग से लौटकर कुंगमुनि विद्यादान में लग गए। सदा भक्त शिष्य साथ साथ रहने लगे।

जब कुंगमुनि चे पर्वत के पास से निकले तो देखा कि एक नारी समाधि पर खड़ी रोरही है। आपने रथ रोक कर पूछा : क्यों फूट फूट कर रो रही हो क्या विपत्ति है ?

नारीने कहा : मेरे पतिके पिताको बाघने खा लिया। फिर मेरे पतिको भी उसने खाया और अब मेरे पुत्र को भी खागया।

कुंगमुनिने पूछा : तुम इस स्थानको क्यों नही त्याग देती ?

उसने उत्तर दिया : यहां की शासन प्रणाली क्रूर नहीं है। यह सुनकर मुनि बोले : सुनो। सुनो मेरे बच्चो। क्रूरराज्य बाघ से भी अधिक भयंकर है।

त्सू राज में मुनिने गायन सुना और वह ऐसा रुचा कि तीन महीने वहीं ठहर गए। किंग नामक राजाने मुनि का आदर किया और प्रार्थना की महाराज ! आप यहां निवास करिए। मैं लिनक्यू नामक नगर आप को भेट करता हूं। इसका कर प्राप्त कर अपने काम में लाइए।

कुंगमुनि ने यह भेट न ली और कहा : महापुरुष सेवा करके जो कुछ मिले वह ग्रहण करता है। मैंने राजा किंग को उपदेश किया पर उसने मेरी बात न मानी और मुझे यह नगर देता है। राजाने अब तक मुझे नहीं समझा।

एक बार राजाने शासन के विषय में प्रश्न किया। मुनिने उत्तर दिया : वही शासन ठीक है जिसमें राजा यथार्थ राजा, राजमंत्री यथार्थ मंत्री, पिता यर्थांर्थ पिता और पुत्र यथार्थ पुत्र है।

चे के राजाने मुनिसे भेटकर ज्ञान सीखा। पर मुनि के बताए धर्म पर न चल सका। प्रजा का धन अपने काम में लान लगा। यह देख मुनि उसकी राजसभा से चलेगए।

सन् ५०१ (मसीह से पूर्व) कुंगमुनि चुंग टू नामक शहर के प्रधान न्यायाधीश बनाए गए। कुछ महीनों में ही मुनि के प्रबंध से नगर में शांति होगई। प्रत्येक को जोकाम वह कर सकता था मिला। चोरी सर्वथा बंद होगई। लोगों ने घरों के ताले लगाने छोड दिये कलह कलेश सब जाते रहे। कोई भी भूखा न मरा।

राजा टिंग ने यह देख कुंगमुनि के नियम सम्पूर्ण देश में चालु करने चाहे। फिर कुंगमुनि न्यायाध्यक्ष बनाए गए। अब राज में रोग अकाल आदि बंद होगए। न्याय सबको एकसा मिलने लगा। धनी निर्धन छोटे बडे सब न्याय दृष्टि

में समान देखे जाने लगे। छोटे छोटे श्रीमंतों के आपस के झगडे मिट गए। आपने पंचायत द्वारा अभियोग निर्णय कराए।

किसी पुरुष ने अपने पुत्र पर अभियोग चलाया। कुंगमुनि ने दोनों पिता और पुत्र को बंदीगृह में तीन मास तक बंद रखा और फिर अभियोग निकाल दिया। राजाने कहा: हे मंत्री कुंग! आप का कथन है कि पितृ-भक्ति सब गुणों से श्रेष्ठ है। फिर आपने क्यों इस पुत्र को दंड नहीं दिया इसने तो पिता के विरुद्ध आचरण किया था। कुंगमुनिने निश्वास छोड कर कहा: जब बड़े अपना कर्तव्य पूरा न करें और फिर छोटों पर दोष लगावें और मैं छोटों को दंड दूं यह बात ठीक नहीं है। इस पिताने अपने पुत्र को पितृ-भक्ति नहीं सिखाई फिर पुत्र का क्या अपराध? चिर काल से देश में धर्माचरण उठगया है। ऐसी अवस्था में यदि लोग पाप करें तो क्या आश्चर्य्य है?

कुंगमुनि के सुप्रबंध और इनके प्रभाव से राज्य की उन्नति देख कर आस पास के राजा घबरा उठे। उन्होंने कहा: अगर लू राज में कुंगमुनि कुछ काल और मंत्री रहे तो लू सब राज्यों का मुकुट बन जायगा। हमारी प्रजा हमसे असंतुष्ट होकर राजद्रोह करेगी।

इन राजाओं ने एक गुप्तसभा कर इस विषय में गम्भीर विचार कर निश्चय किया कि किसी न किसी प्रकार कुंगमुनि और लू के राजा में विरोध कराना चाहिए। इन नृपों ने स्थिर

किया कि ८० परम सुन्दरी, युवा कन्याएं श्रृंगार कर, गाती बजातीं, हाव भाव कटाक्ष करतीं सोने चांदी की भेट लेकर लू के राजा को भेट में भेजी जांय। ऐसा ही किया गया और राज में से ८० युवतियां श्रृंगार कर १२० अश्व और नाना प्रकार की भेट लेकर गाती बजातीं पुष्पों से खेलतीं लू के राजा को भेट देने चलीं। लू की राजधानी के बाहर एक सुन्दर उद्यान में आकर ठहरीं और राजा को संदेशा भेजा कि आपकी दासियां भेट लेकर यौवन भेट करने की आज्ञा चाहती हैं। लू का राजा वाडी में गया और इस कामदेव की छटा को देख मोहित होगया।

तीन दिन तक राज काज भूल भोगविलास में लीन हो राजभवनमें न आया और कुंगमुनि से न मिला। चे कुंगने कहा : गुरुदेव अब यहां से चलना चाहिए। पर मुनि और ठहरे और देखा कि राजा को सुध कब आती है।

जब वार्षिक यज्ञ का समय आया और राजा उस दिन भी देव मंदिर में बलि देने न आया तो कुंगमुनि लू से धीरे धीरे चल दिए।

तेरह वर्ष तक कुंगमुनि इधर उधर फिरते रहे। निराशा की गोद में अनेक शोक भरे पद बनाए और गाए। कहीं भी शिर छिपाकर मेघ से बचने को स्थान न था। कोई राजा भी धर्म की बातें सुन कर चलने को उद्यत न हुआ।

एक वार वे के राजा की राजधानी में शिष्यों सहित मुनिराज पधारे। प्रधान मंत्री आपका यश सुन चुका था।

मिला और बहुत सत्कार किया पर राजा भोग में लीन था। वह मुनि से मिलने न आया। तोभी उसने साठ सहस्र बोरे अनाज मुनि के शिष्यों को भेट किये। दस मास यहां रह कर निराश हो चलदिए। मार्ग में एक ग्राम मिला जिसमें पहिले एक बार कुंगमुनि ठहर चुके थे। आप उस घर को देखने गए जिसमें एक बार विश्राम कर चुके थे। ज्ञात हुआ कि घर का स्वामी मर गया था और उसकी मृतक क्रिया की तयारी होरही थी। कुगमनि ने उसके संबंधियों से शोक प्रकट किया। बाहर आकर अपने शिष्य चेल्ह् से कहा : रथ का एक अश्व खोल कर इस घर के स्वामी के पुत्र को मेरी ओर से भेट देदो।

चेल्ह् ने कहा : महाराज ! यह तो बड़ी बात है। आपने पहिले कभी किसी शिष्य की मृत्यु पर ऐसी भेट नहीं दी।

मुनि बोले : जब मैं घर के भीतर गया तो मुझे देख घर वाले बहुत रोने लगे। उनको इस महाशोक में देख मेरा भी अश्रु बहाना ठीक नहीं साथ साथ कुछ देनाभी चाहिए। हे वत्स ! जा और अश्व भेट कर।

वे क राज में जाकर मुनिवर क्यू पी युइ नामक राज कर्मचारी के घर ठहरे। वे के राजा ने नान्तस्जे नामक नारी से विवाह किया। नान्तस्जे कुटिला, अभिमानिनी, स्वार्थिनी प्रसिद्ध थी। इसने मुनिवर से भेट करने की इच्छा प्रकट की और आपने मिलकर सदुपदेश दिया। पर चेल्ह् इस बात पर अप्रसन्न

हुआ कि गुरुदेव ऐसी कुटिला, दम्भी रानी से क्यों मिले। गुरुदेवने कहा : मैंने क्या बुरा किया! ईश्वर मेरे भावको जानता है।

एक दिन राजा की सवारी निकल रही थी। राजा के पीछे रानी नान्तस्जे और उसके पीछे कुंगमुनि की पालकी थी पीछे और मंत्री सेनापति सेना आदिथी। हाटिका में नगरचर्चा को देख कोई आदमी कह उठा : देखो! देखो! पाप आगे और धर्म पीछे पीछे चल रहा है। कुंगमुनि यह सुन लज्जित होगए। बोले :—भोगविलास को चाहने वाले अनेक देखे पर धर्म-प्रेमी न देखे।

आप वे के राज से चलदिए।

सुंग राज्य में एक वृक्ष के नीचे मुनि शिष्यों सहित यज्ञ कर रहे थे। दुष्ट ह्वान अप्रसन्न हो मुनि को मारने आया। शिष्य बोले : चलो भाग कर प्राण बचालें।

मुनि बोले : ईश्वरने मुझे धर्म और ज्ञान दिया है। मेरा कोई क्या कर सकता है।

मसीह से पूर्व सन् ४९२ में चिन राज में राजद्रोह होगया। आपने कहा : यदि मेरी बात मानें तो तीन मास में बिना रक्त बहाए राजद्रोह निकल जाय और तीन वर्ष में यह राज धन, धान्य, शान्ति सम्पन्न होजाय।

चूङ के राजा ने मुनि को बुलाकर राज काज में अनुमति ली। आपने कहा : देश में न्याय और शान्ति स्थापित करो। सब को विद्या दो। सेना पर धन जितना न्यून व्यय करो उतना

अच्छा है। पाठशालाएं ग्राम ग्राम में बनवाकर बच्चों को सभ्य बनना सिखाओ

राजा को यह बातें नहीं रुचीं और मुनिवर वहां से भी चल दिए।

प्रिय शिष्य यिन ह्वेका देहान्त होगया। आपने शोक मनाया और कहा : ईश्वर मुझपर क्यों अप्रसन्न है।

गे के राजाने मुनि से युद्धविद्या सीखनी चाही। आपने कहा : मैं शांति स्थापित करने आया हूं।

जब मुनिवर ६९ साल के हुए और चीन में किसी राजा ने भी आपका उपदेश ग्रहण न किया तो निराश होगए। संसार भले आदमियों पर कृपा न्यून करता है। मुनि का मन दुःख से भरगया; और भी एक दो प्रिय शिष्य मृत्यु को प्राप्त होगए।

चीन की सबसे प्राचीन ज्ञान-पुस्तक ईकिंग अर्थात् "परिवर्तन-ग्रंथ" है। अबसे पांच सहस्र वर्ष पूर्व भी यह ग्रंथ आदर की दृष्टि से देखा जाता था। चीनी कहते हैं कि जो इस ग्रंथ को भली भांति समझ ले वह प्रकृति का स्वामी होकर वायु, पृथ्वी, समुद्र आदिपर शासन कर सकता है, अमर हो सकता है। यह ग्रंथ केवल रेखालिपि में लिखा है। इसपर सहस्रों टीका टिप्पण लिखे गए हैं। कुंगमुनि बोले : यदि मैं ४० वर्ष और जीता रहूं तो ३० वर्ष इस पुस्तक के विचार में लगाऊं।

आपका शिष्य एक राजा का मंत्री होगया। एक दिन उसने आकर पूछा : मैं प्रजा पर नए कर लगाकर धन प्राप्त

कर धर्म में लगाऊं तो कैसा है ? कुंगमुनि बोले : अपने संबंधी व्यय को घटा दो । उक्त प्रकार से नए कर न लगाओ । उसने आपकी बात न मानी कुंगमुनि ने कहा : सबसे कह दो कि कांग मेरा शिष्य नहीं है ।

मसीह से सन् पूर्व ४८२ में कुंगमुनि के पुत्र ले का देहान्त हो गया । मुनि ने ज्ञान के प्रभाव से इस दुःख को सहलिया और चित्तको विचालित न होने दिया ।

मसीह से पूर्व सन् ४८० में राजाने एक अद्भुत पक्षी जो सुन्दरता और सुकुमारता में अद्वितीय था पकड़ लिया । कोई भी इस पक्षी का नाम न बता सका । कुंगमुनि इस पक्षी को देखने आए । देख कर आप बोले कि यह ककनसपक्षी है और हमारी मृत्यु का सूचक है ।

आपने अंतिम दिनों में ग्रंथ रचना की, और जो काम भारत में वेद व्यास ने किया वह चीन में कुंगमुनि ने किया । आपने प्राचीन साहित्य, इतिहास, नीति, विज्ञान के ग्रंथों का संशोधन किया और कुछ नए ग्रंथ भी रचे जो अबतक चीन में आदर पूर्वक बांचे जाते हैं । एक वर्ष पीछे आपका प्रिय शिष्य चे लू भी परलोक सिधार गया

सन् ४७८ के ११ वें मास की ४ तारीख को कुंगमुनि ने शरीर त्यागा ।

उस दिन प्रातः काल आप बिछौने से उठे । हाथ मुख धो धीरे धीरे द्वार की तरफ यह कहते चले :

महान् पर्वत भी राख होजाता है
बलवान् मनुष्य भी मृत्यु के मुख में गिरता है और
ज्ञानी भी बृक्ष के समान सूखे जाता है ॥

चेकुंगने यह शब्द सुने और जान गया कि मुनिराज का अंतिम समय आगया। वह बोला: शोक! जब महान् पर्वत राख हो जायगा तो मैं किसका आश्रय लूंगा। जब वह सामने आया तो मुनिवर कहने लगे। कोई भी बुद्धिमान् राजा चीन में नहीं है। मैंने रात स्वप्नदेखा है कि मैं दो खम्बों के बीच भेट लिए बैठा हूं। अब मेरा अंतिम समय आगया है, और ऐसा ही हुआ।

कुंगमुनि ने शोक में शरीर त्यागा। सारी आयु परोपकार में बिताई फिर भी किसी राजाने आपका उपदेश न लिया। पुत्र और पत्नी दोनों मर चुके थे।

इस प्रकार चीन के परमोत्तम मुनि का देहान्त हुआ।

शिष्यों ने मुनि के शरीर को पिटारी में भरकर समाधि बना दी। तीन वर्ष तक ५०० शिष्य समाधि के निकट रह कर शोक मनाते रहे। बहुतसे शिष्यों ने वहीं कुटियां बना कर आयु बिताई।

तालिनफू नामक शहर में अबतक मुनि की समाधि विद्यमान् है। हम भी वहां गए थे और समाधि पर गायत्री का पाठ किया। छोटीसी साधारण खुली हुई समाधि है।

उसपर लिखा है :

" यहां चीन के पवित्र मुनिका शरीर है "

हान वंश में कुंगमुनिका सिद्धान्त सम्पूर्ण चीन में माना गया । मसीह से २०० वर्ष पूर्व मुनि देवता के समान पूजे जाने लगे । जब से अब तक चीन के महाराजा और प्रजा आपको शिर झुका कर प्रणाम करते रहे हैं । शहर शहर में आपके नाम पर मंदिर हैं । पीकिंग में कुंग मंदिर प्रसिद्ध है । वर्ष में एक वार महाराजा यहां दर्शन को आता था ।

चीन के महा कवियों ने आप के संबंधमें उत्तमोत्तम काव्य लिखे हैं । कोरिया, जापान, मंचूरिया, स्याम सब आपके नाम पर शिर झुकाते हैं ।



कुङ्ग मुनि ज्ञानामृत

अध्याय १

गुरुदेव ने कहा :

१ क्या अचल परिश्रम और धुन के साथ अध्ययन करना आनन्द का विषय नहीं है ?

२ क्या दूर देशों से मित्रों का आना परम आनन्द की बात नहीं है ?

३ क्या वह पुरुष पूर्ण साधु नहीं है कि जिसकी जन समुदाय कुछ भी अपेक्षा न करे और फिर भी उसका चित्त खिन्न न हो ?

४ ज्ञानी यू का कथन है: "ऐसे पुरुष बहुत न्यून हैं जो पितृ-भक्त और बंधु स्नेही हों और अपने से बड़ों का बुरा चाहें। ऐसा कोई भी नहीं देखा जो बड़ों का बुरा न चाहनेवला हो और कलह करे।

५ महापुरुष प्रत्येक बात के मूल की ओर ध्यान देता है। जब मूल ठीक हो तो ऊपर की वस्तुएं भी आपही ठीक हो जाती हैं।

पितृ-भक्ति और भ्रातृ-स्नेह अन्य सब परोपकारों का आधार नहीं है ?

६ मीठी बातें और मन में घर करनेवाले का स्वरूप न्यूनतासे साधु शीलता का साथी होता हैं।

७ ज्ञानी चांग का कथन है :

मैं नित्य तीन बातों से आये हुए मनुष्य को परखता हूं (१) क्या दूसरों से व्यवहार में मैं विश्वास पांत्र रहा हूं। (२) क्या मित्रों से व्यवहार में निष्कपट रहा हूं। (३) क्या मैंने अपने गुरु (कुङ्गमुनि) की शिक्षा को अच्छी तरह समझ कर उस पर आचरण किया है ?

८ गुरु देव ने कहा :

एक सहस्र रथ वाले विशाल प्रदेश पर राज्य करने में इन तीन बातों पर ध्यान रखना चाहिये :—

काम काज पर सादर ध्यान देना और निष्कपटता द्वारा मितव्ययता। प्रजासे प्रेम और समयानुकूल उनको काम में लगाना।

९ गुरुदेव ने कहा :

प्रत्येक युवक को घर में पितृ—भक्त होना योग्य है। बाहर बड़ों का आदर करना चाहिए। गम्भीर और सत्यवादी बनना चाहिए। केवल भले पुरुषों से मित्रता करनी चाहिए। जब कभी अवकाश मिले तो सत्शास्त्रों का अभ्यास करना योग्य है।

१० चेही:(कुङ्ग मुनि के शिष्य ने) कहा :

यदि कोई उस मनुष्य के संबंध में जो नीचे लिखी बातों पर चलता है यह कहे कि वह विद्वान् नहीं है तो मैं दृढता से कहूंगा कि वह विद्वान् है:—
जो अपने प्रेम को सुंदर वस्तुओं से हटाकर निष्कपटता से सदाचार की ओर लगाता है।
जो अपने माता पिताकी सेवा में कोई न्यूनता नहीं करता।
जो राजा की सेवामें अपना जीवन बिताता है।

११ गुरु देव ने कहा:

यदि विद्वान् गम्भीर न होगा तो लोग उसका आदर नहीं करेंगे और उसकी विद्याभी स्थिर न रहेगी।
स्वामी भक्ति और निष्कपटता को सबबातों से बढ़िया समझो। अपने बराबर वालों से मित्रता मत करो।
जब अपने दोष मालूम हो जाय तो उनके त्यागने में भय मत करो।

१२ ज्ञानी चांग ने कहा:

माता पिता के देहान्तपर उनका प्रेत संस्कार पूरे ध्यान से करना चाहिए। उसके बाद उनका श्राद्ध भी मन लगाकर करना चाहिए। जो ऐसा करेंगे उनमें साधुशीलता सहज ही उत्पन्न होगी।

१३ च्य किंग (कुङ्ग मुनिका शिष्य) ने जे़कुंग से कहा :
जब गुरुदेव किसी देश मे जाते हैं तो वहां के शासन के बारे में सब कुछ जान लेते हैं।
क्या वह लोगों से पूंछते हैं, अथवा लोग स्वयं आकर उनको कहजाते हैं ?
जे़ कुङ्ग ते उत्तर दिया :
गुरुदेव दयाशील, धर्मात्मा, नम्र, परिमित और सुशील हैं। इसी से उनको सब बातें ज्ञात हो जाती हैं। रहा उनके पूछने की विधि सो वह औरों से भिन्न नहीं है।

१४ गुरुदेव ने कहा :

जब तक किसी का पिता जीवित हो उसकी कामना को ध्यान पूर्वक देखो। पिता के परलोकवास होने पर उस के आचरण को देखो। यदि वह तीन वर्ष तक पिता का आचरण न त्यागे तो समझ लो कि पितृ–भक्त है।

१५ सभ्यता के नियम पालन करने में मनुष्य को स्वाभाविक सुख और शांतिका आचरण करना चाहिए। यही प्राचीन राज ऋषियों ने कहा है और यही ठीक है। छोटी बात हो अथवा बडी इनही नियमों पर चलना श्रेष्ठ है।
परंतु सब बातों में यह नियम चालू नहीं हो सकते। यदि कोई मनुष्य इस नियम मात्र का भक्त हो कर इस के योग्य उपयोग को भूल जाय, और केवल सुख और शांति को

भोगे तो ठीक नहीं है। भाव यह है कि सहज सुख और शांति मात्र आदर्श नहीं है। सभ्यता के नियम पालन में सुख-शांति की आवश्यकता है।

१६ ज्ञानी यू ने कहा है :

यदि वचन न्याय संगत हो तो उसका पालन करना चाहिए। योग्यता अनुसार दूसरों का आदर किया जाय तो ठीक है। जो ऐसा करेगा वह दूसरोंकी दृष्टि में लज्जित नहीं होगा यदि योग्य पुरुषों पर भरोसा करो तो उनको नेता बनाओ।

(भावार्थ यह है कि जहां सच्ची योग्यता दीखे वहां आदर करो।जो वास्तव में योग्य हैं उनको बड़ा मानकर उनकी बात पर चलो। फिर भी न्याय को कभी हाथ से न छोड़ो)।

१७ गुरुदेवने कहा:

जो पूर्ण साधुशीलता (धर्म) को प्राप्त करने की इच्छा रखता है वह केवल भूख मिटाने को खाना नहीं खाता और न अपने घर में केवल सुख के साधन देखता है। ऐसा पुरुष जो कुछ करता है उत्साह से करता है। अपनी बात सोच समझ कर कहता है। भले आदमियों में उठता बैठता है जिससे अपना सुधार करता रहे। ऐसा मनुष्य ज्ञानी कहलाया जा सकता है।

१८ जे कुंग ने पूछाः

महाराज। ऐसे पुरुष के बारे में आप क्या कहते हैं जो निर्धन है पर चाटुकारी नहीं। धनी है पर अभिमान नहीं करता।

गुरुदेव ने उत्तर दिया :—
वे दोनों ठीक हैं पर उस पुरुष के समान नहीं हैं जो धनहीन है और इस पर भी संतुष्ट है। धनवान हो कर भी सभ्यता के नियम नहीं त्यागता।

१९ जेकुंग ने कहा :—

महाराज। "काव्य" में लिखा है "जैसे बोवो वैसे खेती काटो।" जैसे लकड़ी में चित्रकारी करो वैसे ही उसे चमकाते जावो। मेरी समझ में इसका अर्थ यही है जो आपने अभी कहा।

गुरुदेव बोले :—
जेकुंग जैसे पुरुष के साथ "काव्य" की चर्चा करने में आनन्द आता है। मैं एक बात कहता हूं, और उसका वह मर्म अन्य स्थान पर भी समझ लेता है।

२० गुरुदेव ने कहा :—

यदि लोग मुझे न जानें तो मुझे कुछ भी दुःख न होगा। हां यदि मैं लोगों को न समझूं तो मुझे अवश्य दुःख होगा।

अध्याय २

१ गुरुदेव ने कहा :—

जो धर्म निष्ठासे राज्य करता है वह ध्रुव नक्षत्र के समान है जो स्वंय एक ही जगह पर ठहरा है और दूसरे नक्षत्र उसकी ओर भागते हैं।

२ गुरुदेव ने कहा :

प्राचीन " काव्य " में तीन सौ श्लोक हैं। पर उन सब का सार एक वाक्य में कहा जा सकता है अर्थात्
" मन में एक भी दुष्ट भाव न रक्खो "

३ गुरुदेव ने कहा :

यदि नियम बना कर प्रजा पर शासन किया जायगा और लोगों को दंड दे कर समभाव स्थापित किया जायगा तो लोग नियम और दंड को टाल दिया करेंगे और लज्जा रहित हो जावेंगे।

४ गुरुदेव ने कहा :

तीस वर्ष की आयु में मैं संसार में दृढता से खड़ा हो गया था चालीस वर्ष की आयु में मेरेसब संशय दूर हो गए (अर्थात् धर्म–निष्ट हो गया)। पचासवर्ष की आयु में मैंने ईश्वर की इच्छा को समझ लिया साठ

वर्षकी आयु में मेरे कान सत्य सुनने केलिये उद्यत रहने लगे। सत्तर वर्ष की आयु में मैं विना धर्मका मार्ग छोड़े अपने मनकी बातों पर चलने लगा।

५ यदि लोग धर्मको अपना नेता समझकर सौजन्यता अनुसार चलेंगे तो उनको लज्जाका विचार रहेगा और भले बने रहेंगे।

६ मांगईने पूछा।

महाराज ! पितृ–भक्ति किसको कहते हैं ?

गुरुदेवने उत्तर दियाः अवज्ञा न करना पितृभक्ति है।

७ कुछ काल बीते जब फानची उनका रथ हांकता था तो गुरुदेव बोले मांगसू ने मुझसे पितृ–भक्ति के विषय में पूछाथा और मैंने उत्तर में कहा अवज्ञा न करना पितृ–भक्ति है।

८ फानचूने कहा :

महाराज का इस उत्तर से क्या तात्पर्य है। गुरुदेवने कहाः माता पिता के जीवन में सभ्यता के नियमानुसार उनकी सेवा करनी चाहिए। मरने पर उनका नियमानुसार संस्कार और फिर श्राद्ध करना चाहिए।

९ मांग वू ने पूछाः

महात्माजी ! पुत्र धर्म क्या है ?

गुरुदेवने उत्तर दिया:

मा बाप को सदा यह चिन्ता रहती है कि बच्चे कभी रोगी न हों (अर्थात् पुत्र को माता पिता के लिये ऐसी ही चिन्ता चाहिए)

१० जेयू ने पूछा:

महाराज ! पुत्र धर्म क्या है ?

गुरुदेव ने उत्तर दिया:

इन दिनों माता पिता का पालन पोषण ही पुत्र धर्म माना जाता है । कुत्ते और गधे भी कुछ न कुछ ऐसा करते हैं । बिना प्रतिष्ठा के पुत्रों के पालन पोषण और कुत्ते गधे में क्या भेद है ।

११ पुत्र–धर्म (अन्य धर्म भी) मन और मुख के भाव पर निर्भर है (अर्थात् जो किया जाय वह प्रसन्न मुख और सच्चे चित्त से किया जाय) । जब पितरों को कष्ट होता है तो छोटे उसे बांट लेते हैं । जब छोटों के पास मद्य और भोजन होता है तो उसे बडों के आगे रख देते हैं (यह काम प्रसन्न मुख और सच्चे मनसे करने चाहिएं) ।

१२ गुरुदेवने कहा:

मैंने दिनभर ह्यूई से बात चीत की पर उसने मेरी किसी बात पर भी तर्क नहीं उठाई इससे वह मूर्ख प्रतीत हुआ ।

पर जब मेरे पास से उठजाने पर मैंने उसका आचरण देखा तो मैंने समझा कि वह मूर्ख नहीं था।

१३ गुरुदेवने कहा :

मनुष्य के कर्मों को ध्यान से देखो। उसके भावों पर ध्यान दो। विचार करो कि वह किस किस वस्तु पर भरोसा करता है। मनुष्य अपना आचार कैसे छिपा सकता है ?

१४ गुरुदेवने कहा :

यदि कोई मनुष्य पुरानी सीखी विद्या को प्रेम पूर्वक याद रखता है और नई नई विद्या को सदा सीखता रहता है तो वह दूसरों का गुरु हो सकता है।

१५ गुरुदेवने कहा :

चतुर विद्वान् रसोई का पात्र नहीं है अर्थात् केवल एकही कामका नहीं है। बहुत काम कर सकता है।

१६ जेकुंग ने पूछा :

महाराज ! श्रेष्ट पुरुष किसको समझना चाहिए ?

गुरुदेव ने उत्तर दिया : श्रेष्ठ पुरुष पहिले कार्य्य करता है, बातें नहीं बनाता। फिर अपने कृत कर्म के अनुसार बातें करता है। श्रेष्ठ पुरुष सार्वभौम होता है। उस में पक्षपात नहीं होता।

१७ गुरु देवने कहा :

विना बिचार के विद्या सीखनी श्रम को व्यर्थ फैंकना है।

अविद्वान् का विचार भयंकर होता है।

१८ अज्ञातविद्या का सीखना हानिकारक हो सकता है।

१९ गुरु देवने कहा :

हे यू ! क्या तुमको बतलादूं कि विद्या किसको कहते हैं ? किसी बात को जानना और यह जताना कि तुम जानते हो। जब तुम नहीं जानते और यह जताते हो कि नहीं जानते इसी को विद्या कहते हैं।

२० जे चंग राज में पद पाने की इच्छा से विद्या सीखता था (विद्या ज्ञान प्राप्ति और सेवा के लिये पढनी चाहिए न कि चाकरी के लिये)।

२१ गुरुदेव बोले :

मन लगाकर विद्या सीखो। जिन बातों में संदेह हो उनको उठाकर एक तरफ़ रख दो।

दूसरों के बारे में जो कुछ कहो सावधानी से कहो। यदि ऐसा करोगे तो लोग तुम को बहुत दोष न देंगे।

देखो बहुत कुछ पर जो भयंकर बात मालूम हो उसको दूर उठाकर रखदो। शेष बातों पर सावधानी से व्यवहार करो। ऐसा करोगे तो तुमको पछताने का अवसर न मिलेगा।

जब मनुष्य अपनी कही बातों से अपने ऊपर दोष नहीं आने देता और अपनी करनी पर उसे पछताना नहीं पड़ता तो समझ लो कि उसे लाभ होने वाला है।

२२ राजा गाए ने प्रश्न किया :—

गुरुदेव । मुझको क्या करना चाहिए जिससे मेरी प्रजा आधीन रहे ?

कुङ्ग मुनि ने उत्तर दिया:

सदाचारियों की उन्नति करो और कपटी मनुष्यों को दूर करो । ऐसा करोगे तो लोग आधीन रहेंगे । यदि कपटी छली मनुष्यों की उन्नति करोगे और सच्चे आचारवालों को दूर करोगे तो लोग तुम्हारे आधीन न रहेंगे ।

२३ के कुंग ने प्रश्न किया :

महात्माजी ! राजा को कौनसे ऐसे काम करने चाहिएं जिनसे लोग उसकी प्रतिष्ठा करते रहें और आपभी सदाचारी रहे और राजा के भक्त भी रहें ।

कुङ्ग मुनिने उत्तर दिया :

यदि राजा लोगों पर गम्भीरता से शासन करे तो लोग उसकी प्रतिष्ठा करेंगे । लोगों पर कृपा करेगा तो वे भक्त रहेंगे । भले आदमियों की उन्नति और मूर्ख लोगों को शिक्षा देने से वे उत्साह से धर्मात्मा बनना चाहेंगे ।

२४ किसीने कुङ्ग मुनि से प्रश्न किया :

महाराज आप राज्य की चाकरी क्यों नहीं करते ? (अर्थात् राज में सेवा कर लोगों का भला क्यों नहीं करते ?)

गुरुदेवने उत्तर दिया:

शूकिंग ने पुत्र–धर्म के विषय में क्या कहा है ? " तुम

मातृ–पितृ भक्त हो और भाइयों (लोगों) संबंधी अपना कर्तव्य पालन करते रहो " यही तो राज्य का काम है। फिर कौनसी बात शेष रहगई जिसके लिए मनुष्य राज्य की चाकरी करो मुझे ज्ञात नहीं कि मनुष्य बिना सच्चाई पर चले संसार में कैसे सुख से रह सकता है। बिना जुएं के कैसे रथ बन सकता है। बिना घोड़े जोतने के प्रबंध के छोटा रथ भी नहीं बन सकता।

२६ जेचंगने प्रश्न किया :

महाराज ! क्या पिछले दस वंशों के वृत्तान्त ज्ञात हो सकते हैं ?

गुरुदेवने उत्तर में कहा :

यिन वंशने ही वंश की प्रथा चालुकीथी। उसमें कितनी और कहां बृद्धि हुई यह सब जाना जा सकता है। चाव यिन के पथ पर चल रहा है। इसमें कितनी उन्नति और कहां अवनति हुई यह सबज्ञात हो सकता है। चाव वंश चलेंगे। बहुत काल बीतने पर भी उनका वृत्तान्त ज्ञात हो जावेगा।

२७ गुरुदेवने कहा :

ऐसी आत्मा को बलिदान देना जो अपने वंश की न हो केवल चाटुकारी करना है।

सत्य और न्याय को देखना औरं फिर उसपर न चलना साहस की न्यूनता प्रगट करता है।

अध्याय ३

१ की वंश (राजवंश न था) के राजभवन में गायकों की आठ पंगत लगी रहती थी (बिना महाराज के और किसी को चीन में यह अधिकार न था)। यह देखकर गुरुदेवने कहा :
जो अधिकारसे बढ़कर काम कर सकता है वह और क्या नहीं कर सकता।

२ गुरुदेवने कहा :
यदि मनुष्य में मनुष्यपन और भलाई नहीं हैं तों रूढी पूजा पाठ अदि से क्या लाभ होगा ? यदि मनुष्यपन और भलाई न हुई तो राग गाने, बाजे बजाने से क्या लाभ ?

३ लिन फंग ने पूछा :

महाराज ! धर्माचार (यज्ञ) में सबसे पहिले किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?
गुरुदेव ने कहा:
यह महा प्रश्न है। पर्वकी प्रथा में व्यर्थ व्यय की अपेक्षा मित व्ययता भली है शोक की प्रथा में गहरे शोक पर ध्यान देना अच्छा है। रूढी में दिखाव की आवश्यकता नहीं।

४ की वंश का सर्दार टाई पर्वत पर यज्ञ करना चाहता था

(सिवाय महाराजा के किसी और को यह अधिकार न था) महात्मा कुङ्ग ने वनयू से कहा :
क्या तुम इनको इस अनुचित कार्य्य से नहीं हटा सकते ?

५ गुरुदेव ने कहा :

साधुशीलता (नेकी) सीखने वाला पुरुष झगड़ालू नहीं होता । यदि कोई कहे कि झगड़ा नहीं टल सकता तो उससे पूछो कि क्या धन विद्या के खेल में विवाद को स्थान है ? प्रत्येक धनुर्द्धारी पहिले अपने विपक्षी को नमस्कार करता है फिर मंच पर खड़ा हो जाता है। यदि हार जाय तो प्रसन्नता से पराजितपन को सहता है (प्राचीन चीन में सभ्य कुलों में धनुर्विद्या का अनुराग आचार और नम्रता सीखने को कियाजाता था)

६ जेही ने पूछा :

महात्माजी ! इस श्लोक का क्या अर्थ है ? " उसकी कपट भरी मुसकराहट की सुंदरता उसकी आखों के पूर्ण काले और निर्मल रंग । रंग के लिए स्वच्छ भूमि ।

७ गुरुदेव ने शिष्य के पाठ की भूल दूर करते हुए कहा:—
पहिले सादी ज़मीन साफ की जाती है फिर उस पर रंग लगाए जाते हैं ।

८ गुरुदेव ने कहा:—

ही वंश के राजाओं की प्रथाएं मैं कहसकता हूं, पर की

वंश की मेरे कथन में नहीं आ सकती। यिन की प्रथा भी कहने में आसक्ती है पर सुंग वंश की नहीं। न कहने में आनेका कारण उनकी अपूर्णता और उस समय में बुद्धिमानों का अभाव है।

९ महात्मा ने कहा :
महायज्ञ में पूर्णाहुति के पीछे मैं उसकी ओर देखना नहीं चाहता।

१० किसी ने पूछा: महाराज! महायज्ञ का क्या भाव है?
महात्मा कुङ्ग ने उत्तर दिया: मैं नहीं जानता। जो ठीक ठीक इसका भाव समझले वह विशाल राज पर ऐसे शासन कर सकता है जैसे मैं इस खजूर वृक्ष को देखता हूं।

११ जब कुङ्ग मुनि मृतक श्राद्ध में बलि देते थे तो ऐसा प्रतीत होताथा मानो आत्माओं को देखते हों।
गुरुदेवने कहा: यदि मैं बलिदान के समय स्वयं उपस्थित न होऊं तो बलिदान व्यर्थ है।

१२ वां कुनने पूछा: महाराजजी! इस कहनूतिका क्या भाव है: "भट्टी की प्रतिष्ठा करना अच्छा है अपेक्षा उत्तर–पश्चिम कोण के"
गुरुदेवने उत्तर दिया : ऐसा नहीं है। यह कहनूति ऐसे है "जो ईश्वर की आज्ञा नहीं मानता वह और किसकी बात मानेगा।"

१३ गुरुदेव बोले : चाव राजाओं को पूर्व दो वंशों का अनुभव था। उसके नियम और उप नियम कैसे पूर्ण और सुन्दर थे। मैं तो चाव वंश की रीति अच्छा समझता हूं।

१४ जब कुङ्ग मुनि महामन्दिर में जाते थे तो वहां की प्रत्येक बात के बारे में पूछते थे। किसीने कहा : कौन कहेगा कि चाव का पुत्र सभ्यता के उप नियम जानता है। वह तो महामन्दिर में भी सबकुछ पूछता है। यह सुन कर गुरुदेवने कहा : यह भी सभ्यता का नियम है।

१५ गुरुदेव ने कहा :
तीर चलाने में प्रतिज्ञा में ध्यान देना मात्र ठीक नहीं है। सब पुरुषों की शक्ति एक सी नहीं होती। यह एक प्राचीन नियम था। (भाव यह है कि चीनी लोग तीर चलाना आचार प्राप्ति और मन को साधने के लिये सीखते थे।)

१६ एक बार चेकुंग मास के प्रथम दिन बलि न देकर एक बकरी को लेकर अलग हो गया। यह देखकर गुरुदेव ने कहाः चे ! तुमको बकरी प्यारी है मुझे बलिदान की रूढी।

१७ गुरुदेव ने कहा :
राजा की सेवा में सभ्यता के सब नियमों के अनुपादन को लोग आज कल चाटुकारी समझते हैं (कुङ्गमुनि के समय चीन के लोग कुछ के कुछ होगए थे)

१८ राजा टिङ्ग ने गुरुदेव से पूछा : महाराज ! राजा को मंत्रियों से कैसा वर्ताव करना चाहिए और उनको किस प्रकार राजा की सेवा करनी चाहिए ? मुनि ने उत्तर दिया: राजा को मंत्री से सभ्यता के नियमानुसार वरतना चाहिए और राजभक्तिसे सेवा करनी चाहिए।

१९ गुरुदेव ने कहा:
काङ्चू बिना लम्पट बने विषय भोग करता है और दूसरों के चित्त को बिना दुखाए शोक करता है (अर्थात् भोग शोक दोनों में आपे से बाहर नहीं होता)।

२० राजा गाए ने चेतू से प्रश्न किया :
निजदेश के मृत पुरुषों की समाधियां किस प्रकार बनानी चाहिऐं।

चेतूने उत्तर में कहा :

ही महाराज चोड वृक्ष के नीचे समाधि बनाते थे। यिन महाराज के समय में सरव वृक्ष के नीचे और चाव के वक्त में अखरोट के नीचे समाधि बनाई जाती थी।
जब कुङ्ग मुनि ने यह सुना तो कहा:
जो काम हो चुके उनके विषय में कहना व्यर्थ है। जो बातें बीत चुकीं उन पर विवाद से क्या प्रयोजन। जो घटनाएं हो उठीं उनका विलाप व्यर्थ है !

२१ गुरुदेव ने कहा:
कान चू (प्राचीन एक बड़ा आदमी) छोटे मनका आदमी था ।

किसी ने पूछा : महाराज ! क्या कान चू कंजूस था उत्तर मिला: कान चू अपने अधिकारियों से दुगना कार्य नहीं कराताथा । मैं उसे कैसे कृपण कहूं । फिर किसी ने पूंछा: क्या कान चू सभ्यता के नियम नहीं जानता था ? महात्मा ने कहा: राजा अपने महल के द्वार पर चिक डालते हैं जिससे भीतर की बातें बाहर मालूम नहीं । कान चू भी ऐसा करताथा ।

जब राजा आपस में मिलते हैं तो मद्य पीने के प्याले रखने को एक फलक सामने अलग रखते हैं । कान चू भी ऐसा ही करता था । यदि कान सभ्यता के नियम जानता था तो उनको न जानने वाला कौन है ? (भावार्थ यह है कि महाराजा न होते हुएभी कान चू महाराजा का अनुकरण करताथा । अभिमानी था, दंभी था । इसीसे छोटे मन वाला कहागया)

२२ लू राज्य के गायनाचार्य्य से गुरुदेव ने यह कहा :
वाजित्र इस प्रकार बजाने चाहिए । पहिले सब बाजे साथ साथ बजने आरंभ हों । जब वाजित्र बजें तो मिलकर बजें प्रत्येक बाजे की ध्वनि स्पष्ट और पृथक सुनाई दे

पर फिरभी सब में मेल रहे और एकता (समता) प्रतीत हो (यहां कुङ्ग मुनि ने एक समाज का महा सिद्धान्त कह दिया। प्रत्येक मनुष्य समाज में स्वतंत्र रह कर अपना काम करे पर फिरभी सब में मिला रहे।)

२३ जब कुङ्ग मुनि एक राज में प्रवेश कर रहे थे तो वहां के सीमापतिने यह कह कर भेट लेनी चाही। जब परम महात्मा इस मार्ग से जाते हैं तो मुझे अवश्य भेट का अवसर देते हैं। मुनि के शिष्यों ने उसे गुरुदेव से मिला दिया। जब वह भेट लेके निकला तो कहने लगा मित्रो! तुमको अपने गुरुदेव के राजपद त्याग पर क्यों खेद है? यह देश तो बहुत दिनों से सच्चाई और न्याय के प्रकाश से रहित है। ईश्वर की इच्छा से आपके गुरुदेव घंटे की लकड़ी की जिव्हा के समान जगत को जगा देंगे। (सब लोग इन के उपदेश से सत्य प्रेमी और न्याय शील बनेंगे। घंटे के घोष के समान इन के उपदेश देश में प्रचलित होंगे)।

२४ महात्मा कुङ्ग ने कहा :

शाव वंश का सङ्गीतबहुत अच्छा और पूर्ण था। रोचक था। वू के समय का राग रोचक तो था पर लोगों को धर्मात्मा बनाने वाला नहीं था। (राग केवल कानों को प्यारा ही नहीं होना चाहिए किन्तु लोगों को सदाचार की तरफ लाने वाला भी होना चाहिए)।

२९ गुरुदेव ने कहा :

मेरी समझ में नहीं आता कि बिना प्रेम उदारता के कोई कैसे बडे पद पर ठहर सकता है। बिना श्रद्धा के कैसे रीति पालन हो सकती है। बिना खेद शोक के कैसे उदासीनता हो सकती है।



अध्याय ४

१ गुरुदेव ने कहा :

पड़ौसी का पहिला कर्तव्य सदाचारी बनना है। जो पुरुष बिना: इसबात के विचारे किसी स्थान पर रहना चाहता है। वह कैसे बुद्धिमान कहा जा सकता है।

२ गुरुदेव ने कहा :

जो साधुशीलता से रहित है वह निर्धनता वा दुःख में देर तक दृढ नहीं रह सकता? और न वह आराम के वक्त देर तक ठहर सकता है। भले आदमी (धर्म) का सहारा पकड़ते हैं। बुद्धिमान सदाचार की तलाश में रहते हैं।

३ गुरुदेव ने कहा :

सच्चा धर्मात्मा ही दूसरों को प्रेम कर सकता है या उचित घृणा कर सकता है (अर्थात् अधर्मी दोनों में न्याय की सीमा से पार हो जाता है)।

४ मुनिराज ने कहा :

यदि सदाचारका स्वभाव डाला जाय तो दुराचार स्वयं ही पास न फटकेगा।

५ गुरुदेव बोले :

लोग दौलत और इज्जत चाहते हैं पर यदि सदाचार से यह दोनों न मिलें तो इनका विचार करना ठीक नहीं

मानाकि लोग गरीबी और दीनता को नहीं चाहते पर अगर सीधे रास्ते पर चलते चलते वे आजावें तो उनकी पर्वा नहीं करना चाहिए और न उनसे भागना चाहिए। यदि महापुरुषने धर्मको त्याग दिया तो फिर वह किसबात का महापुरुष रहा।

महापुरुष भोजन करने में भी सभ्यता को हाथ से नहीं देता। यदि जल्दी में हो तो भी आचार में चलता है। भय के समय भी वह धर्मको नहीं त्यागता।

६ गुरुदेवने कहाः

मैंने अबतक धर्मसे अत्यंत प्रेम करने वाला पुरुष नहीं देखा और न कोई ऐसा देखा जो दुराचारसे अत्यंत घृणा करता हो। जो वास्तव में दुराचार से घृणा करता है उसका आचार ऐसा होता है कि पाप उसके पास तक न फटक सके।

क्या कोई ऐसा है जो अपना सारा बल एकदिन तो सदाचार में लगा दे। ऐसे अवसर पर मैंने तो यह देखा है कि ऐसा आदमी किसी काम में भी अधूरा नहीं रहता। पर अबतक कोई ऐसा देखने में नहीं आया (पुराने इतिहास में ऐसे अनेक पुरुषों के वर्णन हैं। पर कुङ्ग मुनि के समय चीन बहुत नीचा गिर चुकाथा।)

७ गुरुदेव बोले :

मनुष्य जिस कोटि का होता है उस कोटि के कुछ न

कुछ दोष भी उसमें अवश्य होते हैं। आदमी के दोष मालूम होने पर उसके गुणों का भी पता चल जाता है।

८ यदि कोई आदमी प्रातः काल सीधे रास्ते पर आजाय और उसी दिन शाम को मरजाय तो अप्रसन्न न मरेगा।

९ यदि किसी विद्वान् का ध्यान सत्यपर जम चुका है और फिर वह ग़रीबी के कपड़े और खाने से संकोच करे तो वह बात चीत करने के योग्य नहीं है।

(जब सत्य का प्रेम दिल में घर करले तो खाने और कपड़े से दृष्टि ऊंची उठजानी चाहिए)

१० महापुरुष संसार में न तो किसी पदार्थ से प्रेम करता है न द्वेष। उसे केवल सत्य पर चलना ही भाता है।

११ महापुरुष धर्म (आचार—साधुशीलता) पर ध्यान देता है। नीच आदमी आराम देखता है। महापुरुष शासन के नियम को ध्यान में रखता है। नीच दूसरों से कृपा की भीख मांगता है।

१२ मुनिराजने कहा :

यदि राजा सभ्यता के नियमानुसार राज करता है तो उसे भय क्या, और यदि प्रसन्नता से उन नियमों पर नहीं चलता वह नियम उसके किसी काम के नहीं।

(भाव यह है कि धर्म पर प्रसन्नता से चलना चाहिए। विवशता से या रो कर आचार पर चलना ठीक नहीं।

१४ गुरुदेव ने कहा :
आदमी को यह कहना चाहिए : मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि मुझे पदवी नहीं मिली। हां इस बात की चिन्ता है कि मैं पदवी के योग्य हूं या नहीं। मुझे इस बातकी अपेक्षा नहीं है कि लोग मुझे जानते हैं या नहीं पर हां इस बातकी अपेक्षा है कि मैं यश के योग्य हूं या नहीं।

१९ गुरुदेव ने कहा :
हे सिन ! (एक प्रधान शिष्य) ! मेरा सिद्धान्त सबकी एकता है।
ज्ञानी टांग ने कहा : " सत्य है महाराज "
(कुङ्ग मुनि के तत्वज्ञान का यह वचन एक स्तंभ है। महात्मा कुङ्ग के मत में एक अद्वैत सत्ता सब की मूल है और उनका परिश्रम मन, वचन, क्रिया, जीवन, प्राणी, समाज, आदि में एकता स्थापित कर सब द्वैत के झगड़े मिटा देने में है)।
जब गुरुदेव बाहर चले गए तो शिष्योंने ज्ञानी टां से पूछा : " गुरुदेव का इस कथन से क्या अर्थ है ? "
ज्ञानी टां ने कहा :

हमारे गुरुदेव का मत यह है कि मनुष्य को अपनी प्रकृति पर सच्चा हो कर रहना चाहिए और दूसरों के साथ परोपकार का बर्ताव अपने स्वभावानुसार करना योग्य है।

(याद रहे कि कुङ्ग मुनि का एक महा सिद्धान्त है कि मनुष्य की प्रकृति भलाई और धर्म पर स्थित है। सब की आत्मा सत्यमय और सत्य प्रिय है)

१६ गुरुदेव ने कहा :
महा पुरुष सदा आचार भलाई (धर्म) की सोचता रहता है और नीच अपने लाभ के विचार में रहता है।

१७ गुरुदेवने कहा :
जब किसी (योग्य) आदमी को देखो तो उसकी बराबरी की कोशिश करो।
जब इसके विरुद्ध (बुरे) आदमी को देखो तो अपने आप में खोज करो कि तुम में तो ऐसे दोष तो नहीं ?

१८ मुनिराज ने कहा :
माता पिता की सेवा करते हुए यदि पुत्र को उन से विवाद करना पड़जाय तो नम्रता के साथ बात करनी चाहिए। जब यह देखे कि माता पिता उसकी उचित अनुमति नहीं मानते उन का और अधिक मान करते हुए अनुमति देना चालु रक्खे। यदि माता पिता पुत्र को दण्ड दें तो उसका विलाप न करना चाहिए।

१९ जबतक माता पिता जीवित हैं पुत्र को विदेश में दूर न जाना चाहिए और यदि जाना ही पड़े तो एक स्थान पर ही ठहरना चाहिए।

२० यदि पुत्र उन की मृत्यु होने पर तीन वर्ष तक माता पिता का सुमार्ग न त्यागे तो उसे पितृ भक्त समझो ।

२१ पुत्र को माता पिता का जन्मदिवस कभी न भुलाना चाहिए । उसको उनके जन्मादिन आनंद और भय के अवसर होने चाहिए ।

२२ प्राचीन काल में सभ्य लोग अपने विचारों को शीघ्र नहीं प्रगट करते थे । वह इस भय में रहते थे कि उनके आचरण उनके विचारों के विपरीत सिद्ध न हों ।

२३ गुरुदेव ने कहा:
सावधान पुरुष भूल कम करता है ।

२४ महापुरुष अपने वचन में विलंबी और चलन (कार्य्य) में शीघ्रगामी होता है ।

२५ सदाचारी अकेला नहीं रहता उसको अवश्य साथी मिलजाते हैं ।

२६ चे यूने कहा:
राजा के साथ बहुत विवाद अपमान करादेता है । मित्रों में बहुत झिड़की मित्रता को दूर करादेती है ।

अध्याय ५

१ गुरुदेवने कहा:
कुंग ये चां (कुङ्गमुनिका जामाता निरपराध कारागृह में रखा गयाथा फिरभी उसने विलाप नहीं किया। इस कारण मैंने अपनी पुत्री उसे विवाह में दे दी।
(सार यह है कि महापुरुष बाहिरी बातों पर ध्यान नहीं देता वास्तविक सदाचार देखता है)
नाव सुंग के विषय में कहा:
वह ऐसा पुरुष था कि यदि देश में शासन अच्छा हो तो कभी पदवी हीन न रहे और यदि देश में शासन बुरा हो तो न उसको दण्ड मिले और न अपमान। इसी कारण मैंने अपने ज्येष्ठ भाई की पुत्री उसे देदी।

२ जेचीन के बारे में गुरुदेवने कहा:
वाहवा ! कैसा धर्मात्मा पुरुष है। यदि लू के राज्य में धर्मपालन नहो तो ऐसे अच्छे आदमी उसमें कैसे जन्म हो सकते हैं।

३ जेकुंगने कहा: महाराज ! मेरे विषय में आप क्या कहते हैं। उत्तर मिला: तुम यज्ञ के पात्र हो (बहुत आदरके योग्य)

४ किसी ने कहा:
युंग वास्तव में धर्मात्मा है पर वाचाल नहीं है।

गुरुदेव ने कहा :
वार्तालापमें चपलता किस काम की। वह लोग जो औरों से चपलता से बातें करते हैं वे प्रायः घृणा की दृष्टि से देखेजाते हैं।
मुझे नहीं मालूम कि युग धर्म में पक्का है या नहीं पर उसे वाचालता की क्या ज़रूरत है (सार यह है कि इसके बिना काम चल सकता है)

५ कुङ्गमुनि शीटवेके को राज में पदवी लेने को राज़ी कर रहे थे। उसने कहा मुझे अबतक नौकरी में पूरा विश्वास नहीं है। यह सुन कर गुरुदेव प्रसन्न हुए।

६ गुरुदेव ने कहा :
मेरी शिक्षा पूर्ण नहीं फैलती। मैं काष्ठपीठ पर बैठ कर समुद्र में इधर उधर उतराता फिरुंगा। इस अवस्था में युव मेरे साथ होगा।
चेल्ह यह सुन कर प्रसन्न हुआ। गुरुदेव ने फिर कहा :
युव मुझसे अधिक साहसी है।
पर विषय को ठीक ठीक समझने की योग्यता नहीं रखता (केवल साहस काम की वस्तु नहीं है। साथ साथ समझ भी होनी चाहिए)

७ मांगवू ने चेल्ह के विषय में पूछाः
महाराज क्या वह पूर्ण धर्मनिष्ठ है ?

गुरुदेव ने कहा: मुझे ज्ञात नहीं। मांगवू ने एक बार फिर भी यही प्रश्न किया तो मुनिराज ने उत्तर में कहा:
युव किसी विशाल राज्य में युद्ध-कर की उगाही कर सकता है (अर्थात् साहसी है) पर मैं यह नहीं कह सकता कि वह पूर्ण धर्मनिष्ठ है या नहीं।
उसने पुनः प्रश्न किया:
महाराज ! क्यू के बारे में आप क्या कहते हैं ? आपने उत्तर दिया ! क्यू एक बड़े प्रान्त का अधिकारी हो सकता है फिर भी मैं नहीं कह सकता कि पूर्ण धर्मनिष्ठ है।
फिर पूछा: महाराज ! चहि के संबंध में आप क्या कहते हैं। उत्तर मिला: वह राजसभा में राजकीयवेष पहिन कर पहुनों से बात चीत कर सकता है। पर मैं नहीं कह सकता कि वह पूर्ण धर्मनिष्ठ है (धर्म और है पदवी और)

८ गुरुदेव ने एक दिन जेकुंग से पूँछा : तुम्हारे मत में तुम और ह्वे दोनों में कौन उत्तम पुरुष है ?
जेकुंग ने उत्तर दिया : महाराज ! मैं ह्वे की बराबरी कैसे कर सकता हूं। वह किसी विषय की एक बात सुन कर उसको पूरा पूरा समझ लेता है। मैं तो एक बात सुन कर दूसरी को ही समझ सकता हूं।
हां ! तुम उसके समान नहीं हो।

९ जेयू (एक शिष्य) दिन में सो रहा था। उसे देख गुरुदेव बोले।

सड़ी हुई लकड़ी में चित्रकारी नहीं हो सकती। मैली मिट्टी की दीवार पर चमक नहीं आ सकती। यही बात यू की है। मैं बुरा भला कह कर भी क्या करूंगा।

गुरुदेव ने कहा :

पहिले मैं लोगों की अच्छी अच्छी बातें सुन कर उन के आचरण को भी अच्छा मान लेता था। अब मैं उनकी बातें सुनता हूं और उन के कर्म भी देखता हूं।

यू को देखकर मैंने यह बात सीखी है।

१० गुरुदेवने कहा:

मैंने अभीतक कोई ऐसा पुरुष नहीं देखा जो दृढ़ और स्थिर हो (अपने विश्वास और आचार में पक्का और न हिलने वाला)

शिष्यों में से किसीने कहा: " शिन चुंग ऐसा है "

महात्माने कहा:

" वहतो कामलोलुप है। वह कैसे पक्का और अचल हो सकता है ? "

११ जे़कुंग ने कहा:

आदमियों के साथ मैं वह वर्ताव नहीं करता जो मैं उनसे अपने लिए नहीं चाहता।

गुरुदेव ने कहा:

हे जे़कुंग। अभी तुम इस अवस्था को प्राप्त नहीं हुए हो। (तुम ऐसा कहते हो पर तुह्मारे आचरण ऐसे नहीं हैं)

१२ चे कुंग ने कहाः

गुरुदेव के उन सिद्धांतों का वर्णन जिनका प्रकाश उनके आचरण बतलाते हैं हमने बहुधा उनसे सुना है पर मुनिराज ने मनुष्य की अंतिम गति और ईश्वरकी इच्छा का वर्णन उनसे कभी न सुना (कुङ्ग मुनि उन बातों को नहीं कहते थे जिनका इस जीवन से संबंध न हो)

१३ जब जेल्ड् गुरुदेव से ऐसी बातें सुनता था जिस पर उसने आचरण नहीं किया तो मनमें डरता था कि अब न जाने क्या और न सुननी पड़ेगी।

१४ चेकुंगने पूछाः

महाराज ! कुङ्ग वातको वानकी उपाधि क्यों मिली ?

गुरुदेव ने कहाः

वह फुर्तीले स्वभाव वाला था और विद्या सीखनेका अनुरागी था। अपने से छोटे वर्ग के लोगों से सीखने में संकोच नहीं करता था।

(वान की उपाधि चीन में मृत्यु के बाद लोगों को मिलती थी। कुङ्गवान प्राचीन चीन में एक प्रासिद्ध मंत्री था पर कुछ लोग इसके आचरण पर संदेह करते थे। कुङ्ग मुनि को इसकी बुराइयों से प्रयोजन न था। इसके इन दो गुणों की स्तुति करते थे)

१५ गुरुदेव ने कहा :

जेचान (एक चीन का प्रान्त) के महापुरुषों में यह गुण थे। कामकाज में लोगों से नम्रता के साथ बर्ताव करते थे। अपने से बडों की सेवा आदरसे करते थे : लोगों की सेवा में कृपा से काम लेते थे। आज्ञा देने में न्याय से काम लेते थे।

१६ गुरुदेव ने कहा :

गाव पिंग मित्रता निभाना अच्छी तरह जानता था। पुरानी मित्रता होने पर भी वह मित्र का ऐसा ही मान करता था जैसा पहिली बार किया था।

१७ चेंग वान ने घर में कच्छप पाल रखा था। स्तंभों पर बत्तख़ की मूर्तियां बनाई थी। उसने कैसा ज्ञान प्राप्त किया था (चेंग वान एक प्रसिद्ध पंडित हो गया है पर मिथ्या विश्वासी था। घर में कच्छप पालने से विपत्ति नहीं आती यह चीन में मिथ्या विश्वास था)।

१८ जेचुंग ने पूछा :

महाराज ! जेत्रान तीन बार मंत्री के पद पर रहा पर कभी उसके मुख पर कांति नहीं देखी। तीन बार उसने यह उच्च पद त्याग दिया पर उसके मुख पर शोक न देखा। उसने नए मंत्री को जो उसकी जगह पर हुआ सब कामकाज प्रसन्नता से समझा दिया। आप उसको कैसा आदमी समझते हैं।

गुरुदेव ने कहा :

हां ! स्वामभिक्त था। क्या वह पूर्ण धर्मात्मा था ? यह मुझे नहीं मालूम। उसको क्यों पूर्ण धर्मात्मा कहाजाय केवल एक स्वामीभक्ति धर्मात्मा होने का चिन्ह नहीं है

जे चुंग ने फिर कहा :

महाराज ! जब चुई ने चे के राजा की हत्या की तो चिनवान जो चालीस सवार वाला शासक था घृणा से राज छोड़ कर चलागया। एक अन्य रियासत में गया। वहां लोगों के व्यवहार को देख भालकर बोला " यहां भी चुई के समान अधिकारी हैं " और वहां से भी चलागया; और एक रियासत में आया और वहां भी लोगों को अच्छा न पाकर यही कह कर चलागया। आप चिनवान के विषय में क्या कहते हैं ?

गुरुदेव ने कहा :

पवित्र पुरुषथा। पर क्या वह पूर्ण धर्मात्मा था ? यह मुझे नहीं मालूम। मैं कैसे उसे पूर्ण धर्मात्मा कहूं (उसका निज चरित्र नहीं मालूम। उसके और काम नहीं मालूम)

१९ के वान तीन बार विचार करने के बाद किसीबात पर आचरण करता था। गुरुदेव ने यह सुन कर कहा: दो बार विचार करना पर्य्याप्त है।

२० गुरुदेव ने कहा :
जब देश में शान्ति होतीथी तो निग वू बुद्धिमानों की तरह काम काज करताथा और जब देश में अशान्ति फैल जाती थी तो निंग वू मूर्ख बन जाता था। उसकी बुद्धिमानी की बराबरी करनी चाहिए पर उसकी मूर्खता का अनुकरण करना ठीक नहीं।

२१ जब गुरुदेव चिन (चीनकी एक छोटी रियासत) में थे तब एक दिन बोले:
"मैं लौटना चाहता हूं। मैं लौटना चाहता हूं। मेरे स्कूलके बच्चे उतावले और उन्नति के प्रेमी हैं। अब तक तो वे सुशील और पक्के हैं पर उनको अभी आप को रोकना और अपने आप को बनाना नहीं आता (गुरु महाराज अपने शिष्यों का हित कहीं भी नहीं भूलते थे)

२२ मुनिराजने कहा:
पिहई और शूत्से मनुष्यों की पहिली की हुई बुराइयों को चितमें नहीं रखते थे। इसलिए इन दोनों को उन मनुष्यों पर क्रोध भी कम आता था (पीहई, और शूत्से दोनों भाई थे। इनका नाम चीन के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखा है। कुचू के राजा के यह पुत्र थे। इनके पिताने अपना राज छोटे पुत्र शूत्से के लिए छोड़ा पर उसने अपने ज्येष्ठ भ्राता की जगह राज लेना अस्वीकार कर दिया और जंगल में रह कर विद्याविचार में लग गया।

बड़े भाई ने भी यह कह कर कि पिता तो गद्दी शूत्से को देगए हैं मेरा अधिकार उस पर नहीं है राज से अलग हो गया। दोनों भाई परोपकार में जीवन बिताकर अंत में जंगल में भोजनाभाव से मर गए। एक दूसरे राजा ने इनकी सेवा करनी चाही पर वह राजा प्रजा पर अन्याय करता था इस कारण यह दोनों भाई भूँखे मर गए पर क्रूर के कृतज्ञ न हुए)।

२३ गुरुमहाराज ने कहा :

मीठी मीठी बातें दिल में धीरे धीरे घर करने वाला रूप और अत्यन्त आदर करना इन सब से चू को मिंग को घृणा थी। मुझे भी यह बातें लज्जाजनक मालूम होती हैं। किसी आदमी से दिल में द्वेष रखकर ऊपर से मित्रता की बातें बनाने में शूळोमि को बहुत लज्जा आती थी। मैं भी ऐसी बात से घृणा करता हूं।

२४ एक बार यन यूइन और की लू दोनों गुरुदेव के पास थे। आपने कहा " आवो अपनी अपनी मनोकामना बतलाओ। "

जेलू (एक प्यारा शिष्य) ने कहा :

महाराज ! मेरी मनोकामना यह है कि मेरे पास अच्छे अच्छे रथ और पशमीने के पहिनने के कपड़े हों जिनको मैं अपने मित्रों के साथ भोगुं और अगर मेरे मित्र इन में से किसी को खराब करदें तो मुझे क्रोध न आवे।

यन युइन ने कहा :
महात्माजी ! मेरी यह इच्छा है कि मुझे अपनी विद्या और गुणों का गर्व न हो। और दिखावट के लिए कभी अपने गुणों का प्रकाश न करूं। जेलूं ने प्रार्थना की "महाराज ! कृपा करके अपनी मनो कामना भी कहदीजिए"
महात्मा ने कहा :
बृद्धों को मैं आराम देना चाहता हूं। मित्रों से निष्कपट रहना चाहता हूं। बच्चों के साथ नम्रतासे वर्तना चाहता हूं।

२५ महात्मा ने कहा :
बस ! बस मैंने अबतक ऐसे बहुत कम आदमी देखे हैं जो अपने दोषों को जान कर अपने आप को मन में धिक्कार दें।

२६ दस गृह वाले ग्राम में एक ऐसा पुरुष मिलजायगा जो मुझजैसा प्रतिष्ठित और निष्कपट हो पर ऐसा विद्या प्रेमी जैसा मैं हूं न मिलेगा।



अध्याय ६

१ गुरुदेव ने कहा :
युंग (एक प्रधान शिष्य) को देखो । वह राजा होने के योग्य है। (अर्थात् सेवा भाव में इतना बड़ा है कि एक राज की सेवा राजा होकर कर सकता है)।
चुंकुंग ने जेसं पिहत्स्जे के बारे में पूंछा । गुरुदेव ने कहा " वह ठीक आदमी है। छोटी छोटी बातों (जो उसके प्रतिकूल हों) की अपक्षा नहीं करता।
चुं कुंग ने कहा :
यदि कोई आदमी शासन के छोटे छोटे कामों में आराम और शांति से काम ले और व्यवहार में पूरेध्यान के साथ काम करे तो यह बुरी बात नहीं है पर यदि वह आराम और शांति से स्वयं भरा हो और व्यवहार में भी आलस्य से काम ले तो यह अच्छा काम करने की विधि नहीं है।
गुरुदेव ने यह सुन कर कहा :
यह बात ठीक है।

२ गए के राजा ने कुङ्ग मुनि से पूछा :
महाराज ! आपका कौन सा शिष्य विद्या प्रेमी है ?
आपने उत्तर दिया।
यन हुई था। अपने क्रोधको दूसरां पर नहीं प्रगट करता था। किसी दोष को दूसरीबार नहीं करता था। उसकी

आयु कम हुई और वह पर लोक गया । अब कोई ऐसा नहीं है । मैंने उस जैसा विद्या प्रेमी नहीं सुना ।

३ जब कुङ्गमुनि ने अपने शिष्य चेह्वा को किसी काम पर बाहर भेजा तो यन ने उसकी माता के लिए अन्न मांगा । मुनि ने कहा: "एक मन देदो" यन ने कहा: महाराज ! नियम तो इतना ही देने का है पर कुछ और दे दीजिए महात्मा ने कहा तीन मन देदो ।

गुरुदेव ने कहा :
जब चीह चे प्रांतको जारहाथा तो उसके रथ में मोटे घोड़े जुते थे और उसके शरीर पर अच्छा चर्मवेश था । मैंने सुना है कि महापुरुष ग़रीबों की दुःख में मदद करता है धनी जनों को धन नहीं देता । चीह धनी था और निर्धन प्रांत को जारहाथा ।)
यूइन जे़ को गुरुदेव ने उसके नगर का शासक बनाया । उसको ९०० मन अनाज भी दिया । पर यूइन ने अनाज नहीं लिया (सेवा करना चाहता था, धन नहीं चाहताथा । ठीक है अन्त को तो कुङ्गमुनि का शिष्य था) ।

गुरुदेव ने कहा :
भाई अनाज लेलो । इसको निर्धन ग्रामों और छोटे छोटे स्थानों पर निर्धनों को दे देना ।

४ गुरुदेव ने कहा :
यदि घर की गऊका बछड़ा लाल रंग का हो तो क्या पर्वत का देवता उसकी बली नहीं लेगा। (लाल बछड़ा चीन में अभाग्य की निशानी माना जाता था)।

५ गुरुदेव बोले :
वाह वा हुई ! धन्य पुरुष था। तीन महीने तक एक बार उसके मन में पूर्ण धर्म के विरुद्ध एक भी विचार नहीं आया, और लोग एक दिन या एक महीना भी मुश्किल से ऐसी अवस्था में रह सकते हैं। इससे अधिक नहीं।

६ के किगने पूछा :
महाराज ! क्या चंग यू राज्याधिकारी होने के योग्य है। गुरुदेव ने कहा : हां हो सकता है। उसमें अभियोग के निर्णय करने की शक्ति है (सन्देह वा भ्रान्ति अच्छा स्वभाव नहीं है)।
कांग ने पूछाः महामुनि जी। क्या जे भी राज्य में अधिकारी होने की योग्यता रखता है। आपने कहा ! जे समझदार आदमी है। उसे अफ़सरी में क्या अडचण होगी जब क्यू के विषय में यही प्रश्न किया गया तो गुरुदेव ने कहा : वह बहुत योग्यता रखता है।

७ मिन जे कीन कुङ्गमुनि के प्रधान शिष्यों में था। अपने धार्मिक जीवन के लिए मशहूर था। एक बार के राजाने जो धनवान तो था पर क्रूर और दुष्ट था मिन जे को

शासक का पद देना चाहा। मिनज़े ने उत्तर में कहा नम्रता से कह दो कि मैं राजा के की नौकरी नहीं चाहता यदि फिर भी राजा का आदमी मुझे बुलाने को आवेगा तो मैं वान नदी पर एकांत में चला जाउंगा।

८ पीह न्यू (मुनि का शिष्य) रोगी हो गया तो गुरुदेव उसे देखने गए। नाडी देख कर कहने लगे: महा भयंकर रोग है। अच्छा ईश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता है। ऐसे भले आदमी को ऐसा घोर रोग है। हाय! हाय!! (इस को कुष्ट रोग था)।

९ गुरुदेव ने कहा:
हुई के धार्मिक जीवन की स्तुति नहीं हो सकती। एक बांसकी प्याली, एक टूटा ग्लास और तंग गली में मैले कुचैले लोगों में रहना और फिर भी खुश रहना यह हुई का ही काम था। हुई के धार्मिक जीवन का क्या कहना है (प्रत्येक दशा में सदाचारी रहना और समभाव में रहना कुङ्गमुनि को प्रिय था)।

१० यन के ने कहा:
महाराज! आपको शिक्षा में मुझे आनन्द आता है पर मेरी सामर्थ्य से वह बाहर है। गुरुदेव ने उत्तर में कहा: जिनकी शक्ति से बाहर मेरी शिक्षा है व बीच में ठहर जाते हैं (त्यागते नहीं) तुम अब यहां तक आकर और गिरते हो (विद्याभ्यास में दृढ़ता चाहिए)।

११ गुरुदेव ने कहा :
हे चेयू ! तुम विद्वान् और साथ ही महा पुरुष बनो ! नीच विद्वान् मत बनो ।

१२ चेयू वूशिग प्रान्त का शासक था । गुरुदेव ने उससे पूछा : क्या तुम्हारे प्रांत में भले आदमी हैं ? उसने उत्तर दिया : हां टन टाऊ मिन है वह चलते वक्त कभी रास्ता नहीं काटता और बिना लोगों के काम काज के कभी मेरे कार्यालय में नहीं आता (अर्थात् सत मार्ग को छोटा नहीं करता और अपने निजु स्वार्थ से शासक के पास नहीं जाता) ।

१३ गुरुदेव ने कहा :
मांग चे फांग कभी अपने गुणों का कथन नहीं करता । एक बार जब भागना पड़ा तो वह दैवयोग से सब के आगे था । जब शहर के द्वार में घुसने लगे तो उसने अपने घोड़े को एढ़ लगाई और कहा मैं सबसे पीछे रहना नहीं चाहता पर क्या करूं मेरा घोड़ा नहीं चलता ।

१४ इस युग में लम्बी चौड़ी बातें बनाना और सज धज से रहने वाले का मान होता है (चीन उस समय अधोगति में था)

१५ सिवाय नियत द्वार के और कैसे कोई बाहर जा सकता है ? लोग क्यों सीधे रास्ते को त्यागते हैं (सुख और मान

सत मार्ग पर चलने का फल है। मूर्ख क्यों नहीं समझते ?)

१६ जब गुण बहुत और सजावट कम हो तो गँवार पन आजाता है और सजधज बहुत और गुण कम हों तो मनुष्य क्लार्क की आन वान बाला बन जाता है। जब सद्‌गुण और सजधज समान हों तो आदमी महापुरुष होता है।

१७ गुरुदेव ने कहा :
आदमी धर्म पर चलने के लिए बना है। धर्म नहीं तो मौत क्या बुरी है।

१८ गुरुदेव बोले :
सत्य को जानना सत्य के प्रेम करने के बराबर नहीं है। सत्य के प्रेम से बढ़ कर उस पर खुशी खुशी चलना है।

१९ जिन की विद्या साधारण है उन को गम्भीर विषय मत सुनावो। जिनकी विद्या और समझ ऊंची है उन को गम्भीर ज्ञान सुनावो।

२० फान चे (जो कुछ मिथ्या विश्वासी था) ने गुरुदेवसे पूछा : महाराज ! चतुराई किस बात में है ? उत्तर मिला : मनुष्यों के साथ अपना कर्तव्य पूरा पूरा पालन करना और मृत आत्माओंका सन्मान करते हुए उनसे अलग रहना चतुराई है (कुंगमुनि की शिक्षा में परलोक वाद

नहीं है। इस लोक में धर्म और प्रेम से रहो परलोक अपने आप अपनी सुधि लेगा यह चीन के महात्मा का कहना है)।

फिर उसने पूछा : महाराज भलाई (धर्म) किस काम में है ? उत्तर मिला : भले आदमी का सबसे पहिला काम है कि सब कठिनाई को जीत लें। सफलता की ओर विशेष ध्यान पहिले न दे।

२१ गुरुदेव ने कहा :

बुद्धिमान् को जल से प्रेम होता है धर्मात्मा को पर्वत से। बुद्धिमान् क्रियावान होता है धर्मात्मा शान्तचित्त होता है। (कुङ्गमुनि का यह प्रसिद्ध कथन है। इस पर हज़ारों पन्ने टीका टिप्पण में लिखे गए हैं। मतलब यह है कि ज्ञानी जलके समान कर्म योग में प्रवृत रहता है। उसको एकान्त में बैठा रहना अच्छा नहीं लगता। सदा परोपकार में लगा रहता है। धर्मात्मा अर्थात् ज्ञान योगी त्याग संतोष, अकर्म को अच्छा जानता है)। बुद्धिमान् आनन्द से रहते हैं। धार्मिक बहुत दिन जीते हैं।

२२ गुरुदेवने कहा:

चे (एक छोटी रियासत) सहज परिवर्तन करने पर लू (एक छोटी रियासत) में मिल सकती है। लू कुछ बदलने पर धार्मिक लू में मिल सकती है (एक रियासत धर्म पर चलती थी दूसरी नहीं। दोनों पास पास उस

प्रान्त में थीं जो अब शांगटुंग कहलाता है। कुंग मुनि का जन्म यहां हुवाथा और समाधि यहीं एक शहरमें अबतक मौजूद है)।

२३ गुरुदेव बोलेः
नाम है कोने वाला बर्तन मगर कोना एक भी नहीं। अजब बात है (चीन में उस समय चीज़ों और पुरुषों के नाम तो अच्छे होते थे पर वैसे गुण नहीं थे)।

२४ चे वू ने पूछा ! महाराज ! यदि परोपकारी आदमी से कोई कहे कि कुए में एक आदमी गिरगया है तो क्या वह कुए में कूद जायगा ? कुंग मुनिने उत्तर दिया परोपकारी क्या अंधा होता है ? महापुरुष को कोई आदमी कूप तक भेज सकता है मगर कूप में प्रवेश नहीं करा सकता। शायद भोली बातों में आजाय मगर उल्लू नहीं बनेगा।

२५ महापुरुष अनेक विद्याओं का अभ्यास करने पर भी सभ्यता के कानून के भीतर रहता है। कभी सत के बाहर नहीं जाता (" समरथको नहीं दोष गुसांई " यह बात उसमें नहीं होती)।

२६ गुरुदेव नान्तजे से मिलने गए इस पर चेल्ह् अप्रसन्न हुवा। मुनिराजने कहा ! मैंने क्या बुराई की है। यदि मैंने बुरा किया तो ईश्वर मुझे स्वीकार न करे।
(नान्तज़े वे प्रान्त के राजा की स्त्री थी और इसकी

दुष्टता सब जानते थे। सदा अपने पति को बुरी अनुमाति देती थी। कुङ्ग मुनि इस राजा के दर्बार में कुछ दिनों ठहरे थे, और शायद रानी को सुधारने की इच्छा से उसे मिले थे)।

२७ मध्य मार्ग में चलना पूर्ण धर्म है। संसार बहुत दिन से इसे भूल गया है (बुद्धदेवने भी मध्यमार्ग को धर्म का केन्द्र कहा है। कुंम मुनि सीमासे बाहर नहीं जाते थे)।

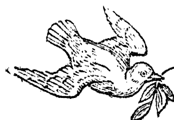
२८ चेकुङ्गने पूछाः मुनिराज ! कल्पना करो कोई ऐसा आदमी है जो लोगों के साथ खूब भलाई करता है और उनकी सहायता करता है। क्या उसको पूर्ण धर्मात्मा कह सकते हैं ? गुरुदेवने कहा वह धर्मात्मा ही नहीं बल्किमुनि भी है। यावो और शुन भी यही लक्ष्य रखते थे।

(कुङ्गमुनि की शिक्षा आदर्श राजा यावो और शुन के जीवन पर है यह दोनों महाराज चीन में मसीह से २००० वर्ष पूर्व हुए हैं और संसार के इतिहास में ऐसे धर्मात्मा, चतुर, प्रजापालक परोपकारी बहुत ही कम हैं। इन के विषय में भूमिका देखो)।

पूर्ण धर्मात्मा अपने अभ्युदय की इच्छा करता हुवा दूसरों की भी उन्नति चाहता है। अपने को बढाते हुआ दूसरों को भी साथ साथ बढाता जाता है।

दूसरों के दोष देखने से पहिले ज़रा अपने आप तो देख लो कि वहां क्या है। आचार की कुंजी यह है। (यह कुंगमुनि का यही सिद्धान्त है। ईसा मसीह से ६०० साल पहिले मसीह की शिक्षा को कह दिया हैं)।

अब आनेवाले अध्याय में कुङ्गमुनि का वर्णन और उनके सुंदर उपदेश कहे जाते है।



अध्याय ७

१ गुरुदेवने कहा:
मैं अपनी शिक्षाका कर्ता नहीं हूँ केवल प्रचारक हूं। मुझे प्राचीन महात्माओं से प्रेम और उनमें विश्वास है। मैं प्राचीन पेंग के समान हूँ।
(मसीह, बुद्ध, मोहम्मद आदि महापुरुषों ने अपने आप को प्राचीन धर्मका प्रचारक कहा है निर्माता नहीं। यही कुङ्ग मुनिने कहा है। पेंग कौन महापुरुषथा इसका ठीक ठीक पता नहीं लगता। अनेक टीकाकार पेंग को लाउत्जु बतलाते हैं। यह महात्मा धुरंधर ज्ञानी थे और करामाती भी थे। इनकी शिक्षा उपनिषदों से मिलती जुलती है। इनकी मृत्यु और जन्म का हाल चीन में किसी को पता नहीं। एक ज्ञानकी आंधी आई और चीन को पवित्र करती हुई चली गई।

२ गुरुदेव ने कहा :
चुपचाप विद्या के खज़ाने को भरे जाना, बिना तृप्ति के विद्याभ्यास में लगे रहना, बिना थके दूसरों को विद्या सिखलाए जाना इसके सिवाय और मुझ में कौन से गुण हैं ?

३ आचार सीखना पर उस पर व्यवहार न करना, जो पढ़ा है उस पर विचार न करना, धर्म को सीख कर उस पर

पूरे चित्तसे न चलना, और जो बात अशुद्ध या बुरी साबित हो जाय उस पर फिर भी चलना इन बातों की मुझे चिन्ता रहती है।

४ जब गुरुदेव काम काज में नहीं लगे रहते थे तो वह आराम में और प्रसन्नता में रहते थे (अर्थात् घबराहट, चिन्ता उन के पास न आती थी)।

५ मुझ में कितना ह्रास आ गया है। बहुत दिनों से मैंने राजा चाव को स्वप्न में नहीं देखा। (चाव महाराज को धर्म सिखाकर देश में शान्ति फैलाना कुङ्गमुनि का पुराना संकल्प था)।

६ धर्म के मार्ग को सदा अपने मन में रखो भलाई का जो कुछ अंश प्राप्त हो सके उसको दृढ़ता से लेकर पल्ले बांध लो।

जो कुछ करो वर्ण धर्म के अनुसार करो।

जब अवकाश मिले तो शुभ विनोद करो (अर्थात् कभी ताश खेलना, मुर्गे लड़ाना, शराब पीना, बुरे राग सुनना आदि में अपना काल मत बिताओ)।

७ यदि कोई सूखा मांस (बहुत तुच्छ चीज़ है) लेकर मेरे पास विद्या सीखने आया तो भी मैंने उसे प्रेम से सिखाया।

८ गुरुदेव ने कहा:
जिसको सत के जानने की वहुत इच्छा नहीं है मैं उसपर सत प्रकाशित नहीं करता । जो अपने दिल का हाल मुझसे नहीं कहता मैं उसकी मदद नहीं करता। जो एक बात सुनकर दूसरी अपने आप न जानले उस को मैं दुबारा नहीं पढ़ाता।

९ जब गुरुदेव किसी की मृत्यु के अवसर पर उसके संबंधी के घर भोजन करते तो पेट भर नहीं खाते थे।
जिस दिन गुरुदेव शोक करते उस दिन गाना नहीं गाते थे (अर्थात् सबेरे किसी का शोक करना और रात को मित्रों में गाना यह नही करते थे)।

१० यू यिन से गुरुदेव ने कहा :
जब राजा बुलाकर पदवी दे तो मन लगा कर कर्तव्य पालन करना और जब काम न रहे तो नौकरी त्याग देना इन बातों को तुम और मैं खूब समझते हैं।

११ चेलू ने पूँछा :
महामुनिजी ! अगर आपको किसी बड़े राज्य की सेना का मंत्री बनना पड़े तो आप किसको अपना सहायक बनाओगे ?

गुरुदेव ने उत्तर दिया :
मैं उस आदमी को साथ न लूंगा जो चीते से बिना हथियार लिए मुकाबला करता है, या नदी को बिना

नौका के पार करना चाहता है, या जो बिना किसी शोक के मरने को तैयार है (अर्थात् जिसे हर हालत में मौत चाहिए)।

मुझे ऐसा सहायक चाहिए जो अपने काम में चिन्ता शील हो। जो बार बार अपनी योजनाओं को जांचता है और फिर उनको व्यवहार में लाता है (अर्थात् अंधाधुंध किसी काम में नहीं लगता। पहिले से विचार कर मार्ग बना लेता है)।

१२ यदि कोई धन पाने का पक्का और कभी न चूकने वाला मार्ग हो तो मैं हाथ में डंडी लेकर नौकर बन कर भी उस राह पर चलूंगा, और यदि इस मार्ग में सफलता न हो तो मैं वह काम करुंगा जिसमें मुझे प्रेम है (यहां यह दिखलाया है कि धन प्राप्ति का कोई मार्ग भी निस्संदेह सफलताका सूचक नहीं है—इस लिए मनुष्य को धन का ख्याल त्याग धर्म संग्रह करना चाहिए)।

१३ वह विषय विचार जिन में गुरुदेव अत्यंत सावधानी से काम लेते थे यह हैं।

उपवास युद्ध, और रोग।

जब गुरुदेव चे राज्य में निवास करते थे तो उन्हों ने शाव नामक गान सुना और उसमें ऐसा आनन्द आया कि तीन महीने मांस भोजन नहीं किया। एक दिन कहने

लगे मेरे विचार से यह बात बाहर थी कि गान ऐसा उत्तम हो सकता है।

(अफ़लातून के समान कुङ्ग मुनि को गान विद्या से प्रेम था और खुद भी गाया करते थे। आपने कहा है कि गान सुनने से मनुष्य के भावों में साम्यता होती है। प्रत्येक संस्कार में प्राचीन गान कराया करते थे। आपको मुरली बजाने का खास शौक था। चीन में ३००० साल पहिले गान विद्या ने खूब उन्नति की थी)।

१४. यनयूने पूछा।

क्या गुरुदेव व्ये के राजा के पक्ष में हैं ?

उसने जाकर कुङ्गमुनि से पूछा : महाराज ! पही ए और शुत्से कैसे आदमी थे ? क्या उनको अपने धर्म पर राज और प्राण देने पर पछतावा करना पड़ा ? गुरुदेव ने उत्तर में कहा : वह दोनों भाई धर्म प्रेमी थे और उन्हों ने धर्म पर अपना राज और प्रेम न्योछावर किए। इसमें पछतावे की कौनसी बात थी। यह सुन कर चे कुङ्ग गया और बोला : हमारे गुरुदेव व्ये के राजा के पक्ष में नहीं हैं।

(व्ये के राजा लिं के प्रथम पुत्रने अपनी दुष्टात्मा माता नान्तसे का बध करना चाहा। इसलिए उसे राज से भाग जाना पड़ा। पिता के देहान्त पर इस युवराज के पुत्र को गद्दी मिली। फिर यह युवराज अपनी गादी लेने को

त्ये में आया तो इसके पुत्रने जो अब राजा था इसका सामना किया। कुङ्गमुनि पुत्र को पिता से युद्ध या सामना करने के पक्ष में न थे। पही ए और शुत्से भ्राताओं का हाल पिछले स्थान पर लिख चुके हैं)।

१९ गुरुदेव ने कहा :
मोटे चावल खाकर, पानी मात्र पीकर, और हाथ का तकिया लगा कर मैं आनन्द से रह सकता हूं। अधर्म से प्राप्त किये धन को मैं चलने वाले बादल के समान समझता हूं।

१६ गुरुदेव ने कहा :
यदि मेरी आयु में कुछ वर्ष और वृद्धि कर दिए जांय तो मैं पचास साल यीह किंग नामक ग्रंथ के अभ्यास-विचार में लगाऊं और तब मैं बड़े बड़े दोषों से रहित हो सकूंगा। (यीहकिंग चीन की सबसे पुरानी पुस्तक है। इस का पता मसीह से ३००० वर्ष पूर्व तक लगता है। किताब छोटी है और इसमें केवल सीधी लकीरें हैं। कहते हैं कि जो यीह किंग को पूरा जानले वह संसार में सब कुछ जान लेता है प्राचीन महाराजा ह्वांग टी इसको जानतेथे और इस ज्ञान के बल से बादलों में उडते थे अर्थात् जगत् के सब भेद जान गए थे। इस पुस्तक का विषय ज्ञान और योग दोनों है)।

१७ गुरुदेव इन विषयों पर बात चीत किया करते थे : प्राचीन काव्य, इतिहास, और सभ्यता के नियमों का पालन ।

१८ शी के राजा ने चेल्ह से पूछा : अपने गुरुदेव के विषय में कुछ सुनाओ । चेल्ह चुप रहा ।
गुरुदेव ने जब यह बात सुनी तो बोले : हे चेल्ह तुम ने राजा से यह कह दिया होता : कुङ्ग केवल मनुष्य है (देव नहीं, मुनि नहीं, योगी नहीं करामाती नहीं) जो प्रायः विद्या के प्रेम में भोजन करना भूल जाता है, विद्या के आनन्द में और सब शोक भूल जाता है और ज्ञान-प्रेम में उसे यह भी ख्याल नहीं है कि वृद्धावस्था ने उसे दबा लिया है ।

१९ गुरुदेवने कहा:
मैं माता के गर्भ से विद्या ले कर नहीं आया । मुझे प्राचीन बातों का प्रेम है और प्राचीन ग्रंथों की रुचि से खोज कर रहा हूं ।

२० इन विषयों पर गुरुदेव कभी बात चीत नहीं करते थे : आश्चर्य्य वाली बातें, शारीरिक बल के अशांति और भूत प्रेत (मृतक आत्माएं, देव आदि) ।

२१ गुरुदेव ने कहा:
जब मैं दो आदमियों के साथ जाता हूं तो उनको अपना

गुरु मानता हूं। उनके सद्गुणों को सीखकर उन पर चलता हूं और उनके दोषों को दूर रखता हूं।

२२ जो मुझ में धर्म है वह मुझे ईश्वर ने दिया है मुझे ह्वान तुई से क्या भय।
(जब कुङ्गमुनि शुंग नामक राज में शिष्यों के साथ जा रहे थे तो एक वृक्ष के नीचे उपदेश करने लगे। दुष्ट ह्वान तुई के आदमियों ने घेर लिया और मारना चाहा। तब शिष्यों ने भागने की अनुमति दी। इस पर मुनिराज ने यह वाक्य कहा। भाव यह है ईश्वर ने मुझे धर्म प्रचार को भेजा है। मुझे किसी का भय नहीं)।

२३ गुरुदेव ने कहा:
हे शिष्यो ! क्या तुम्हारा विचार है कि मैं तुमसे कुछ भेद छुपा रखता हूं। नहीं नहीं ऐसा काम कोई नहीं है जिसे मैं छुपा कर करूं। मुझे भेद अच्छे नहीं लगते।

२४ गुरुदेव चार बातें सिखाते थे :
पढ़ना–लिखना, नीति, आत्म–भक्ति, और सच्चाई।

२५ गुरुदेव ने कहा :
मुनियों के दर्शन मेरे भाग्य में नहीं है। यदि मुझे गुणवान् भले आदमी मिल जांय तो और कुछ नहीं चाहिए।

(पक्के आचार वाला, एकमन वाला, जिसने अपने श्रम से धर्म पर चलना सीखा है। ऐसा आदमी मिल जाय तो और क्या चाहिए)

धर्मात्मा मिलना कठिन है। यदि मुझे पक्के मनवाला आदमी मिल जाय तो भी बहुत है।

अंदर से पोले और प्रगट करें कि हम पूर्ण हैं, वास्तव में दुःखी और दीन और प्रगट करें कि हम आराम में हैं ऐसे आदमी पक्के मन वाले नहीं होते।

२६ गुरुदेव बंसी से मछली का शिकार खेलते थे पर जाल का उपयोग नहीं करते थे। कभी बैठी हुई चिडिया पर तीर नहीं चलाते थे।

२७ गुरुदेव ने कहा :

ऐसे लोग हैं जो बिना कार्य–कारण विचारे काम करते हैं। पर मैं ऐसा नहीं करता।

सुनो बहुत लोगों की जो सुनो उसमें से अच्छी बात चुन कर उस पर ध्यान करो। देखो बहुत कुछ पर उसको मन से मत भुलावो। यह दूसरी विद्या का मार्ग है।

२८ हू ह्यांग के लोगों से बात चीत करना आराम का काम न था। एक बार एक १८ साल का कुमार गुरुदेव से मिल गया, और शिष्यों को अचंभा हुवा।

गुरुदेव बोले : मैं आदमियों को अपने पास आने देता हूं पर यह अपेक्षा नहीं करता कि मेरे पास से उठ कर

उनका आचार कैसा रहेगा। इतने दृढ बचन की क्या आवश्यकता है यदि कोई मेरे पास पवित्र हो कर आता है तो आवे मैं उसके पिछले आचार का उत्तर दायित्व नहीं लेता।

२९ गुरुदेव ने कहाः

क्या धर्म दूर रहने वाली वस्तु है? जब मैं धर्मात्मा होने का विचार कर लेता हूं तो देखो! धर्म निकट आ जाता है।

३० चीन देश के अपराध–मंत्री ने पूछा : महाराज! चाव का राजा सभ्यता के नियम जानता है? मुनि बोले : हां जानता है।

जब गुरुदेव चले गए तो उक्त मंत्री ने वू माके (एक शिष्य) को प्रणाम कर कहा : क्या महा पुरुष पक्षपात करते हैं। उस राजाने अपने गोत्र की एक कन्या से शादी कर ली और सभ्यता के नियम का पालन न किया। वू माके ने गुरुदेव से यह बात कही तो आप बोले! मैं कैसा भाग्यवान हूं। यदि मैं कहीं भूल करता हूं तो और लोग मुझे बता देते हैं। (कुङ्गमुनि दूसरों के छिद्र देखना व्यर्थ काम समझते थे)।

३१ यदि गुरुदेव ऐसे पुरुष के साथ होते जो गाना गाता और अगर उसका गाना अच्छा होता तो उसे दुबारा गाने को कहते और स्वयं भी साथ प्रसन्न होते।

३२ गुरुदेव ने कहा :
विद्या में कदाचित् मैं और आदमियों के बराबर हूं पर जो कुछ कहा जाय उस पर पूरा आचरण भी हो यह बात अभी तक मुझे प्राप्त नहीं हुई (कुङ्गमुनि सदाचार में आदर्श थे फिर भी नम्रता का स्वरूप थे। नम्रता को सदाचार का उत्तम भूषण मानते थे)।

३३ गुरुदेव ने कहा :
न तो मैं मुनि हूं और न पूर्ण धर्मात्मा। पर हां मैं दिन रात ऐसा बनने के यत्न में बिना थके लगा रहता हूं और दूसरों को मन से धर्म सिखाता हूं।

३४ एक बार गुरुदेव अधिक रोगी हो गए। चेल्ह् ने देवताओं (अदृष्ट आत्माओं) से निरोग होने की प्रार्थना करने की आज्ञा मांगी। उसने कहा: मुनिवर ! क्या आपकी आज्ञा है ? ऐसा पूर्व ग्रंथों में लिखा है कि हे ऊपर के और नीचे आकाश में बसने वाले आत्माओ मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं। गुरुदेवने कहा: मैं चिरकाल से प्रार्थना कर रहा हूं।
(कुङ्गमुनि अच्छे कर्म में विश्वास करते थे प्रार्थना में नहीं)

३५ शक्ति से बाहर खर्च करने वाला अनाज्ञाकारी होजाता है। कंजूस नीच बन जाता है। कमीना इतना बुरा नहीं जितना अवज्ञाकारी।

३६ गुरुदेव बोलेः

महापुरुष संतुष्ट और शान्तिवान् होता है। नीच कष्टों से भरा रहता है।

३७ गुरुदेवका स्वभाव कोमल था पर तेजवान् थे। वे तेजस्वी थे पर कठोर न थे। सुशील थे पर शान्ति पूर्ण थे।



अध्याय ८

१ गुरुदेव बोले :

टेहपी ने आचार की अवधि करदी । तीन बार राज लेने से नकार कर दिया । उसके शत्रु भी टेहपी की प्रशंसा करने लगे ।

(यह महाराजा टाए का ज्येष्ठ पुत्र था । इसके पिता अधर्म द्वारा यन राज्य को लेना चाहते थे । इसकारण टेहपी उनसे सहमत न हुवा । इसके पिता को अपने तृतीय पुत्र को जो महा धार्मिक था राज देना चाहते थे टेहपी का अधिकार था पर पिता को अप्रसन्न न कर भीष्मकी तरह आप अपने छोटे भाई सहित जंगल में चला गया और सब आयु जंगली फिरकों की सुधार में गरीबी से बितादी) ।

२ सन्मान बिना सुशीलता केवल भार रूप और दिखावा हो जाता है । चतुराई कायरता बन जाती है । साहस का ह्रास हो जाता है । सच्चाई अविवेक हो जाती है ।

(सबसे पहिले आदमी को उचित क्या है और कौनसा गुण किस सीमा तक उचित है यह बिचार कर लेना चाहिए) ।

जो लोग ऊंचे अधिकार पर हैं और अपने कुटुम्ब वालों से सच्चा प्रेमका बर्ताव करते हैं तो और लोग उनको देखकर भला बनना चाहते हैं और जब यह लोग पुराने

मित्र और मंत्रियों को नहीं भूलते तो दूसरे आदमी इनको देख कर नीच नहीं बनते ।

३ जब ज्ञानीचां बीमार था तो उसने अपनी शाळा के विद्यार्थियों को बुला कर कहा ! मेरे हाथ और पैर उघार दो प्राचीन काव्य ग्रंथ में लिखा है " ऐसे सावधान होकर चलो मानो बरफ पर अथवा गहरे गार के पास चल रहे हो " मैंभी ऐसे ही फूंक फूंक कर क़दम धरता रहा हूँ। हे मेरे बच्चो ! मैं अब सब दिक्कतों से पार होने बाला हूँ (मृत्यु निकट है)

(चीनी मुनियों का कथन है कि हमारा शरीर माता पिता से हमको पूर्ण (निर्दोष) मिलता है और पितृभक्त का धर्म है कि शरीर को (हाथ पैरोंको) अच्छी हालत में रक्खे । ज्ञानी चांने इसी लिए अपने हाथ पैर मृत्यु शय्या पर उघरवा दिए) ।

४ जब ज्ञान वान चां रोगी था तो मांग किङ्ग (कुङ्गमुनिका शिष्य) उस के स्वास्थ्य समाचार पूछने गया ।

चां ने कहा: जब पक्षी मौत के पास होता है तो उसका स्वर शोक से भरा होता है । पर जब आदमी मरने को होता है तो उसके शब्द पुण्य से भरे होते हैं । सुनलो बड़े आदमी को आचार के तीन नियमों पर बड़ा ध्यान रखना चाहिए: अपने आचार और व्यवहार में अहिंसा और ध्यान को कभी न भूले । अपने स्वरुप के बनाव

में निष्पक्षता को कभी न त्यागे। अपनी बातों में नीचता और गँवार पन से दूर रहे। रही छोटी छोटी साधारण नियमों की बातें इनको छोटे अधिकारी कर सकते हैं।

५ ज्ञानवान चांने कहाः
एक बार मेरा एक मित्र था जो आचार के इन नियमों पर चलता थाः
योग्य होकर भी अपने से नीचे के आदमियों से बातें पूछता था। धनवान् होकर भी निर्धनों से बाते पूछता था। अपनी विद्या और धन को दूसरों पर गर्वसे नहीं प्रगट करता था, और अपने को विद्यावान् या ज्ञानी नहीं समझता था। दूसरों पर कुपित होकर भी कभी झगड़ा नहीं करता था।

६ अनुमान करो कि कोई पुरुष पिता हीन राजकुमार का शिक्षक बनायाजाय और उसके राज पर भी शासन करे फिर भी यदि वह अपने धर्म को तनिक भी न त्यागे तो क्या वह महापुरुष नहीं है? हां! हां!! वह महापुरुष है।

७ ज्ञानी चाने कहाः
यदि विद्वान् का मन उदार नहीं और कष्ट सहने की पूरी शक्ति नहीं तो उसकी विद्या भार रूप और रास्ता

लम्बा है। पूर्ण धर्म एक भार रूप है। जिसको लेकर उसको जीवन के मार्ग में चलना है। क्या बोझ है। मौत ही उसके पग को रोकती है—क्या लम्बा रास्ता है।

८ गुरुदेव बोले :
काव्य मन में उत्तेजना पैदा करता है सदाचार से आचरण बनता है गायन मनुष्य को चमका देता है।

९ मनुष्य किसी काम में लगाए जा सकते हैं पर काम की वास्तविकता और तत्व उनको नहीं समझा जा सकते।

१० जो आदमी साहसी है और दीनता, निर्धनतासे डब गया है वह अशान्त हो जायगा। जो आदमी धार्मिक नहीं है वह द्रोह करने लगेगा यदि तुम उसकी अप्रिय बातें सीमा तक उसको दिखलावोगे।

११ गुरुदेव ने कहा :
यदि किसी में इतने सदगुण हों जितने राजा चाव में थे और वह अभिमानी और कंजूस भी हो उसके सब गुण व्यर्थ हैं।

१२ ऐसा आदमी मिलना कठिन है जो तीन वर्ष तक मन लगा कर विद्या सीखे और फिरभी उस पर आचार का प्रभाव न पड़े।

१३ जो निष्कपटता के साथ विद्या-प्रेमको प्राप्त करता है और मौत तक अपने आप को सुधारने में लगा रहता है ऐसा आदमी न तो गिरने वालो में न संगठन रहित राज में रहेगा।

यदि राज्य में सत पर लोग चलते हों तो वह बाहर आवेगा। जब सच्चाई छिपजाय तो वह भी छुपजायगा। यदि राज्य का प्रबंध अच्छा है तो निर्धनता और नीचता का होना लज्जा की बात है और यदि राज का प्रबंध बुरा है तो धन और मान पर धिक्कार है।

१४ गुरुदेव ने कहा :
जो आदमी राज में किसी पद पर नहीं है उसका प्रबंध के नियम बनाना व्यर्थ है।

१५ जब गायनाचार्य्य चे अपने पद पर स्थित हुए तो उन्होंने क्या ही मीठे राग गाए हैं।

१६ गुरुदेव ने कहा :
मैं ऐसे आदमियों को नहीं समझता जो उत्साही हों पर धर्मात्मा न हों। मूर्ख हों पर ध्यान देने का स्वभाव न रखते हों। जो सीधे हों और निष्कपट न हों।

१७ यह समझ कर विद्या सीखो कि तुम कभी भी विद्या का अंत न देख सकोगे और सदा इस भय में रहो कि कहीं विद्याध्ययन छूट न जाय।

१८ यो और शुन का राज्य–प्रबंध कैसा राजसी था। वह स्वाभाविक प्रबंधक थे। मानो राज्य चलाना उनके बांए हाथ का काम था।

१९ महाराजा यावो सचमुच महान् नरेश थे। उनका प्रताप महा विशाल था। केवल आकाश महा प्रभाव शाली है और यावो महाराज भी इसके समान थे। उनके धर्म का क्या कहना है। उन्होंने कैसे कैसे महान् उपयोगी नियम बनाए थे।

(यह महाराज मसीह से २१०० वर्ष पूर्व चीन के सम्राट थे। इनका न्याय, धर्म प्रेम, साहस, प्रजा पालन आदर्श है। इनका राज्य १०० वर्ष तक रहा और अवस्था १२० साल की हुई। पहिले पहिल मदिरा चीन में इनके समय में बनी पर महाराजने इसका प्रचार बंद कर दिया। अपने पुत्रको योग्य न जान कर प्रजा की अनुमति से अपने मंत्री शुन को राज दिया। ईसाई मिश्नरी भी इनके चरित्र में दोष नहीं निकाल सके। अधिक वृत्तान्त अन्यत्र देखो)

२० शुन महाराज के पांच मंत्री थे और इनका राज प्रबंध बहुत अच्छा रहा।

(यावो के बाद शुन हुए। पांच में से एक मंत्री स्त्री थी)। महाराजा वू का कथन है : मेरे दस योग्य मंत्री हैं।

कुङ्गमुनि ने कहा : यह बात ठीक है कि योग्य पुरुष मुश्किल से मिलते हैं। यिन और टांग के समय में योग्य पुरुष बहुत थे। चावो के समय में इतने नहीं। दसमें से एक स्त्री मंत्री थी। पुरुष नौ ही थे।
महाराज वान के पास तीन चौथाई चीन था। चाव वंश इनके समय में धर्म पूर्ण रीति से स्थित था।

२१ गुरुदेव बोले :

यू के चरित्र में मुझे कोई दोष दिखाई नहीं देता। वह स्वंय मोटा खाना खाता था और कूपजल पीता था। पर पितृश्राद्ध धूमधाम से करता था। सदा गरीबों के से वस्त्र पहिनता था पर यज्ञ में उदारता दिखाता था। स्वयं मट्टी के छोटे से घर में रहता था पर अपनी शक्ति और धन नहरों में और चीन को जलप्रकोप से बचाने में लगाता था।

(शुन महाराज ने अपना राज्य बेटे को अयोग्य जान कर यू को दिया। मसीह से २००५ वर्ष पूर्व यू महाराज बने। इनके समय में पीत नदी हर वर्ष सहस्र गृहों को बहा देती थी। लाखों नर नारी मर जाते थे। महाराज यू ने नहरें निकाल कर बंद बनाए और पीत नदी को काबू में कर लिया। नौ वर्ष तक घर में न घुसे बराबर खेतों में पीत नदी को नाथने के प्रबंध में

स्वयं लगे रहे । अनेक बार अपने द्वार के सामने होकर निकल गए और अपने बच्चों के रुदन की आवाज़ सुनी पर प्रजा प्रेम में ऐसे आसक्त थे कि काम छोड़ अपने घर में न घुसे) ।



अध्याय ९

१ इन विषयों पर गुरुदेव बहुत कम बोलते थे: धर्म से उपजने वाले लाभ, ईश्वर की इच्छा, पूर्ण धर्म
(किस प्रकार पूर्ण धर्म प्राप्त होता है यह बतलाते थे उसके लाभ नहीं) ।

२ टा हांग नामक ग्राम के किसी पुरुष ने कहा: कुङ्गमुनि वास्तव में महान् पुरुष हैं, इनकी विद्या विशाल है तो भी किसी विशेष बात में इन्होंने अपने आपको प्रसिद्ध नहीं किया । यह सुन कर गुरुदेव बोले: किस बात में यश पैदा करूं । रथ हांकना सीखूं या तीर अन्दाज़ी में नाम पैदा करूं ? अच्छा रथ हांकने में नामवर बनूंगा ।
(कैसे महत्वका कथन है । ग्रामीण हीरे की स्तुति क्या कर सकता है) ।

३ गुरुदेव ने कहा :
यज्ञ में डोरिये की टोपी पहिन कर बैठते हैं पर अब प्रथा बदल गई । सादी रेशम की टोपी पहिनते हैं । अच्छा मैं भी कमखर्च सादी रेशम की टोपी पहनूंगा । पहिले यज्ञ समय में मन्दिर के नीचे से ईश्वर को नमस्कार करते थे अब ऊपर चढ़ कर । मैं तो नीचे से ही नमस्कार करूंगा । ऊंपर जाकर नमना अविवेक है । कुङ्गमुनि लकीर के फ़कीर नहीं थे । पुरानी रस्म ओं

रिवाज़ जहां ज़रूरी समझते बदल देते थे पर आंखें बंद कर हर एक नई बात या रिवाज़ के गुलाम नहीं बनते थे।

४ चार बातें गुरुदेव में सर्वथा नहीं थीं :
दूसरे की बिना सुने उसके विषय में या उसके कथन के विषय में पहिले से परिणाम न ठान लेते थे।
कार्य कारण संबंध पर विचार न कर पहिले से किसी बात को नहीं ठान लेते थे।
आग्रह नहीं करते थे।
अभिमान, ज़रा न था।

५ क्वांग राज में यात्रा करते करते गुरुदेव संकट में पड़ गए।

आपने कहा : वान राजा के समय के पीछे सत्य का प्रचार मुझे ही दियागया है। यदि ईश्वर की यह इच्छा होती कि यह सत्य उपदेश मिट जाय तो मुझ साधारण जीव को यह सत्यका प्रकाश क्यों होता।

क्वांग राज में एक दुष्ट मंत्री था जिसकी बुराई से वहां के लोग असंतुष्ट थे। वह अपनी जान बचाकर भाग निकलाथा। उसका रूप कुङ्गमुनि से मिलता था और रथ का घोड़ा भी उसी के रंग का था। इस कारण देखने वालों ने भ्रम से कुङ्गमुनि को दुष्ट वज़ीर समझ कर घेर

लिया और मारना चाहा। मुनि के चित्त में भय का नाम भी न था।

६ एक भारी अधिकारी ने चे कुङ्ग से पूछाः
क्या यह ठीक है कि आपके गुरुदेव मुनि हैं ? उनकी योग्यता कितनी विशाल है ?
चेकुंग ने उत्तर दियाः हां ! ईश्वरने उनको ज्ञान दिया है। वे मुनि के समान हैं और उनका प्रवेश अनेक शास्त्रों में है।
गुरुदेव ने यह सुन कर कहा : क्या वह अधिकारी मुझे जानता है ? जब मैं युवा था मेरी दशा नीची थी और इसी कारण मैंने अनेक विषयों में योग्यता प्राप्त की। क्या यह ज़रूरी है कि महापुरुष विद्वान् भी हो ? नहीं ! उसको बहुत बातों के ज्ञान की ज़रूरत नहीं है।
लावो बोला कि गुरुदेव ने यह भी कहाः राजकीय नौकर न होने के कारण मैंने अनेक विद्या सीखलीं।

७ गुरुदेव बोले :
क्या सचमुच मैं विद्यावान् हूं ? मुझे ऐसा ज्ञान नहीं है। पर हां यदि कोई आदमी जिसको कुछ न आता हो मेरे पास आवे तो मैं जो कुछ जानता हूं उसको सब बता दूंगा।
(मुनिराज अपने को ज्ञानी नहीं समझते थे पर दूसरों की सेवा विद्या द्वारा करने को तैयार थे)

८ गुरुदेव ने कहा :
फुं नाम का पक्षी नहीं आता। नदी से चित्र नहीं निकलता। अब मेरा काम बाकी नहीं रहा।
(प्राचीन चीन में यह विश्वास था कि जब कभी धर्म का उदय और अधर्म का क्षय होने को होता है तो फुं नामक अति सुन्दर रंगबिरंग का पक्षी (Phoenix) दिखाई देता है, और नदी में से सर्प विशेष का उदय होता है)।

९ गुरुदेव यदि किसी आदमी को शोक के वस्त्र पहिने या अंधे को आते या वृद्ध विद्वान् को देखते तो उठकर खड़े होते थे और रास्ता दे देते थे।

१० यू यिन गुरुदेव की शिक्षा की प्रशंसा करते हुए कहने लगा :
मैंने गुरुदेव की शिक्षा जितनी अधिक देखी उतनी ही उच्च पाई। मैंने उसका मर्म जानना चाहा पर वह और भी कठिन मालुम हुई। मैंने उसे अपने सामने देखना चाहा पर वह पीछे मालूम हुई।

गुरुदेव चतुरता से शिष्यों को ज्ञानोपदेश करते हैं। उन्होंने मेरे मन को ज्ञान द्वारा विशाल बनाया है और मुझे अपने आप पर काबू करना सिखाय है। महाराज की ज्ञान शिक्षा अनंत है। मैंने उसका पार न पाया। धन्य धन्य।

११ गुरुदेव बहुत बीमार हो गए। चे लूने शिष्यों को सेवा में लगा दिया और यह ज़ाहिर किया कि वे गुरुदेव के मन्त्री हैं।

जब रोग कुछ कम हुवा तो चेलू का ठाट देख कर बोले : अब तो मैं साधारण मनुष्य हूं। मेरे पास मंत्री कहां हैं ? यह क्या स्वांग बनाया है ? क्या मैं ईश्वर पर शासन चलाऊं ?

एक बात और है। मंत्रियों के सामने शरीर त्यागने से तो हे शिष्यो आपके सामने मरना अच्छा है यदि बड़ी मृत किया की आशा न हो तो राह में मरना भी अच्छा नहीं।

१२ चे कुंग ने कहा :

यहां एक मूल्यवान हीरा है। क्या मैं इसे सन्दूक में बंद कर रक्खूं या बेच दूं ? गुरुदेव ने कहा बेच दे, बेच दे पर देख जब तक अच्छी क़ीमत न मिले तब तक मैं उसे रखे रहूंगा।

(गुरुदेव के पास राजा महाराजा बडे बडे पद की चाकरी करने को कहते पर आप उनको इस लिए नहीं स्वीकार करते थे कि वह धर्म के विरुद्ध थीं। यही दिल में रख कर चे कुङ्ग ने ऊपर की बात कही थी)।

१३ गुरुदेव ने पूरब के जंगली फिरक़ों में कुछ दिन रहने का इरादा किया। किसीने कहा : महाराज ! वे असभ्य हैं

आप उन में कैसे रहेंगे। आपने कहा : जहां महापुरुष रहते हैं वहां असभ्यता कब ठहरती है।

१४ गुरुदेव ने कहा :
जब मैं वे से लू में आया तो वहां की गान विद्या में सुधार हो गया और प्राचीन राग समयानुसार गाए जाने लगे। (कुङ्गमुनि का विचार था कि काव्य और गान नीचे गिरें तो मनुष्य का धर्मभाव भी गिर जाता है। ठीक है अमेरिका में न्यायाधीश आया तो अपराध भी आए; विलासता भी आई)।

१५ गुरुदेव बोले :
इन में से क्यां करुं क्या न करुं ? शहर के बाहर मंत्रियों और बड़े अफसरों की सेवा। घर में माता पिता और ज्येष्ठ भ्राता की सेवा। अपनी मरज़ी कहीं नही चलती। शराब के नशे में चूर न होना।

१६ नदी के तीर पर खड़े हो कर गुरुदेव ने कहा : यह प्रवाह बहता ही रहता है, सदा चलता ही रहता है। (संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है। किसी को मन देना मूर्खता है)।

१७ गुरुदेव ने कहा :
ऐसा एक भी नहीं देखा जो धर्म को इतना हो प्रेम करता हो जितना सुंदरता को।

(आचार दिखावे में सुंदर नहीं होता । दुःख लाता है तो यह अपनों को पराया बनाता है तो भी वास्तव में सुन्दर है । महात्मा गांधी के मत में सत्य और सुन्दरता में भेद नहीं है । अफ़लातून का मत भी यही है) ।

१८ विद्या और धर्म का संग्रह करना मिट्टी का टीला बनाने के समान है । अगर एक टोकरा मिट्टी डालना बाकी रहे और मैं रुक जाऊं तो मेरा ही दोष है ।

इनकी समानता ज़मीन को चौरस करने के लिए मिट्टी बिछाने की सी है । अगर एक बार में एक टोकरा मिट्टी डाली जाय तो भी कुछ न कुछ काम की उन्नति ही होती है ।

१९ ह्वे का क्या कहना है । मैंने उसे यदि कोई काम दिया तो उसने कभी आलस नहीं की ।

२० मैंने यूयिन को सदा उन्नति करते देखा । वह अपनी उन्नति में कभी नहीं रुका ।

२१ गुरुदेव ने कहा :
ऐसा भी होता है कि वृक्ष में डाली निकल आवे पर फूल न लगे और कभी कभी फूल तो आ जाता है पर फल नहीं लगता ।

२२ मुनिराज बोले :

जवान आदमी को मान की नज़र से देखना चाहिए। कौन कह सकता है कि वह एक दिन ऐसा नहीं बनेगा जैसे हम हैं।

(ल्यूथर का उस्ताद जब क्लास में आता तो टोपी उतार कर लड़कों को सलाम करता था। उसने कहा : इन में ऐसे लड़के हैं जिनको एक दिन ईश्वर डाक्टर, गवर्नर, मेजिस्ट्रेट आदि बनावेगा)

(यदि चालीस या पचास वर्ष का हो कर भी किसी ने विद्या–धर्म में नाम न चमकाया तो उसका मान करना अपना कर्तव्य नहीं है)।

२३ अच्छी नसीहत को कौन सुनना नहीं चाहता। पर उस पर बिना चले लाभ नहीं होता। मीठी शिक्षा सबको प्यारी लगती है पर उसके अनुसार अपने आपको सुधारना ज़रूरी है।

२४ भक्ति और निष्कपटता को सबसे आगे रखो। जो तुम्हारी बराबरी के न हों उनसे मित्रता मत करो। जब अपने दोष मालूम हो जांय तो उनके त्यागने में मत डरो।

२५ महान् सेना का सेनापति पकड़ा जा सकता है पर किसी आदमी की इच्छा पर कोई काबू नहीं कर सकता।

२६ गुरुदेव बोले :

" यू की बराबरी कौन करेगा। वह सन के बने हुए

फटे चीथडे पहिन कर, बिना शर्म किए पोस्तीन पहिनने वालों के सामने तन कर खड़ा होता था (आचार अभिमानी था)।

" यू किसी को बुरा नहीं समझता था, किसी से कुछ नहीं मांगता था जो कुछ करता था धर्म के अनुसार था "।

चेलू बार बार गुरुदेव के आगे यह प्राचीन श्लोक पढ़ता था। आपने कहा : फक़त यही बस नहीं है कुछ और भी चाहिए।

२७ गुरुदेव बोले :

जब शीत समय आजाता है तो हम देखते हैं कि चीड़ और देवदार सबके पीछे अपनें पत्ते त्यागते हैं।

(आपत् काल में आदमी की परख होती है)

२८ बुद्धिमान् आदमी घबराते नहीं। सदाचारी लोग चिन्ता नहीं करते। बहादुरों को भय नहीं।

२९ कुछ ऐसे आदमी मिलते हैं कि उनके साथ विद्याध्ययन कर सकते हैं पर वह हमारे साथ नियमों पर नहीं चलते, कुछ नियमों पर चलते हैं पर उन नियमों में पक्के नहीं होते। कुछ पक्के हो कर भी मामले को नहीं समझते।

३० " बेर के फूल कैसे नाच नाच कर शब्द कर रहे हैं। क्या मैं तुम को भूल गया हूं ? तुम्हारा घर दूर है " गुरुदेव ने इस छंद को याद कर कहा। दूर कुछ भी नहीं है। इच्छा दृढ हो तो दूर क्या है।

अध्याय १०

१ जब कुङ्गमुनि अपने ग्राम में रहते थे तो सीधे साधे और निष्कपट मालूम होते थे। मानो उनको बात करना भी नहीं आता।

जब देव मन्दिर अथवा राजसभा में जाते तो हर मामले पर बारीकी और सावधानी से बात करते थे।

२ दर्बार में छोटे अफसरों से आज़ादी के साथ खरी बात करते थे। बड़े अफ़सरों से नम्रता के साथ नियम पूर्वक बात करते थे।

राजा के सन्मुख उनके चलन में आदर और बेचैनी होती थी। गम्भीरतासे अपने आप पर क़ाबू किए रहते थे।

३ जब राजा मुनिराज के दूसरे महमान आते राजा के सामने बुलाता तो मुनिवर की शकल और ही होती थी और पैर झुके होते थे।

जिन अफसरों के बीच में होते थे उनकी तरफ झुक जाते और उनके पदानुसार अपने बांए या सीधे हाथ को हिलाते थे।

जब महमान चलाजाता था तो राजा को वृत्तान्त सुनाते थे: अब महमान पीछे फिर कर नहीं देखता।

४ जब महल के द्वार में दाखिल होते थे अपने बदन को झुका लेते थे मानो वहां काफी जगह न थी। यदि खड़ा होना पडता तो द्वार के बीच में नहीं खडे होते थे। जब आते और जाते तो चौखट पर पैर नहीं रखते थे।

जब राजसिंहासन के सामने होकर गुज़रते तो उनकी शकल गम्भीर होती, पैर झुक जाते और इस तरह बोलते मानो सांस फूलगया हो।

जब राजा के मंच पर जाते तो अपने चोले को दोनों हाथों में थामते, बदन को झुकाते और स्वांस धीरे धीरे लेते थे।

जब राज सभा से लौटते शकल बदल जाती थी मानो कोई भारी काम पूरा किया है। संतुष्ट दीखते थे।

जब राज्य का राज–चिन्ह लेकर चलते तो ऐसा मालूम होता मानो बोझ से दबे जाते हैं। न उसको अधिक ऊंचा उठाते न नीचा करते।

जब राजा की आज्ञा से दर्बार में लोगों को दक्षिणा बांटते तो उनके चेहरे पर शांति होती थी।

यदि राजा इनको निजस्थान में बुलाता तो प्रसन्न दीखते थे।

५ महापुरुष गहरे नीले रंग के वस्त्र नहीं धारण करतेथे और न चमकीले रंग के।

लाल रंग के लिबास नीचे भी नहीं पहिनते थे। गर्मी के दिनों में एक ढीला कपड़ा पहिनते थे मगर नीचे भी कुछ पहिने रहते थे।

पोस्तीन के ऊपर काला लिबास पहिनते थे, हिरन के पोस्तीन पर श्वेत वस्त्र ऊपर पहिनते और लोमडी के पोस्तीन पर पीत चोगा। नीचे का लिबास लम्बा होता था और सीधी बांह छोटी।

सोने के समय का लिबास बदन से ड्योढ़ा लम्बा रखते थे। घर पर जल—वावर की मोटी पोस्तीन पहिनते थे।

६ जब किसी के घर पर्चाविनी को जाते थे तो मेमने का पोस्तीन या काली टोपी नहीं पहिनत थे। (चीन में शोक का रंग काला नहीं सफेद है) महीने की पहिली तारीख़ को दरबारी लिबास धारण कर राज दर्बार में जाते थे।

७ जिसदिन व्रत रखते थे उसदिन बदल कर भोजन करते थे और उसदिन रोज़ के बठने के कमरे में नहीं बैठते थे (कुङ्गमुनि व्रत का दिन ध्यान में बिताते थे)।

८ अपने भोजन के चावल को बहुत साफ़ नहीं कराते थे और मांस का बारीक कीमा भी पसंद नहीं करते थे।

गर्मी या सर्दी से बिगड़ा भात नहीं खाते थे और बासी मांस या मछली भी नहीं ग्रहण करते थे। जिस खाने के पदार्थ का रंग बदल जाता उसको नहीं खाते थे। दुर्गन्धी

वाला और अस्वादु भोजन भी नहीं खाते थे। कच्चा या अधिक पका भोजन या जो चीज़ मौसम में न हो उसको भी नहीं खाते थे।

जो मांस ठीक तौर पर काटा न गया हो या जिसके साथ ठीक शोरवा न हो उसको मुनिवर नहीं खाते थे। रसोई में मांस का भाग भात से अधिक नहीं होताथा। मद्य का भोजन में कोई हिसाब न था पर मुनिराज कभी मात्रा से अधिक नहीं पीते थे। बाज़ार से खरीदी शराब और सूखा मांस ग्रहण नहीं करते थे।

(मुनिराज को अपनी तबीयत पर पूरा काबू था इस लिए रसोई में शराब का हिसाब न था)। उनकी रसोई में अदरक सदा होता था। बिना अदरक के भोजन नहीं करतें थे।

भूख से अधिक कभी नहीं खाते थे।

राजा के यज्ञ में जो मांस का प्रसाद मिलता उसको रातभर घर में नहीं रखते थे। अपने यज्ञ का प्रसाद तीन दिन से अधिक घर में नहीं रखते थे। भोजन के समय बात चीत नहीं करते थे। चार पाई पर लेट कर भी बातें नहीं करते थे।

चाहे भोजन केवल भात और भजिया ही क्यों न होता उसका एक भाग श्रद्धा से देव भेट में देते थे।

९ यदि बैठने का आसन (कुर्सी) सीधा न होता तो उसपर न बैठते थे।

१० जब कभी गांव के लोग साथ बैठ कर मद्यपान करते और उनमें से कोई लाठी लेकर उठजाते तो गुरुदेव खबर पाकर तुरंत उनके पीछे जाते थे।

जब गांव वाले महामारी (हैजा, प्लेग आदि) के दूर करने को यज्ञ करते तो गुरुदेव पूजा के वस्त्र पहिन पूरब की ओर खड़े रहते थे।

११ जब किसी अन्य रिसायत में रहने वाले पुरुष के पास उसकी खैर खबर पूछने को दूत भेजते तो बिदा के समय दूत को दो बार झुक कर नमस्कार करते। (यह नमस्कार उस मित्र को होते थे जिसके पास दूत जाता था) के कांग ने मुनिराज को औषधि भेट में भेजी। आपने सादर ग्रहण करली पर यह कहाः मैं नहीं जानता यह क्या औषधि है। मैं इसको इस समय खा नहीं सकता।

१२ जब गुरुदेव राज–दर्बार में थे तो उनके अस्तबल में आग लग गई और सब कुछ जल कर खाक हो गया। जब दर्बार से लौटे और यह खबर मिली तो तुरंत पूछाः किसी आदमी को तो नुकसान नहीं हुआ (चोट तो नही लगी)। अश्वों के बारे में कुछ न पूछा।

१३ यदि राजा सिद्ध मांस की भेट कुङ्ग मुनिको भेजता तो अपने आसन को ठीक करते और स्वयं उसमेंसे कुछ भाग आप खाते फिर सब दूसरों को बांट देते थे।

यदि राजा कच्चा मांस भेट करता तो उसको पकवा कर पहिले देव–भेट करते।

यदि राजा कोई जिन्दा जानवर (बकरा, हिरन आदि) भेट करता तो उसको जिन्दा रखते थे।

यदि मुनिराज राजा के साथ यज्ञ में होते तो बलिदान राजा करता पर प्रसाद पहिले आप लेते थे।

यदि कुङ्ग मुनि की बीमारी में राजा इनके घर देखने आता तो अपना सर पूरब की ओर करते और दरबारी चोगा अपने उपर रख लेते।

यदि राजा का दूत बुलाने आता तो रथ की राह न करते फौरन चल देते थे।

१४ जब मुनिवर अपने देव मन्दिर में जाते तो अच्छी तरह पूछ-ताछ करते थे।

१५ यदि कोई मित्र या मुलाकाती मरजाता, और उसकी मृतक क्रिया करने वाला कोई संबंधी न होता तो मुनिवर कहते: चलो हम इसकी मृत क्रिया करेंगे। यदि मित्र कोई भेट भेजता चाहे अश्व चाहे रथ कभी प्रणाम

न करते। पर यदि यज्ञका प्रसाद भेट में आता तो सादर प्रणाम करते।

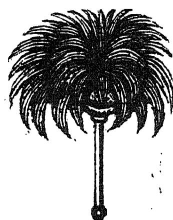
१६ शयन की चार पाई पर मुर्दे की तरह नहीं सोते थे। घर पर व्यर्थ आडम्बर नहीं करते थे। यदि किसी को शोक वस्त्र में देखते तो सुस्त होजाते और यदि किसी को दर्बारी वस्त्र में देखते या अंधे आदमी को देखते तो उनको आदर से प्रणाम करते।
किसी को शोक वस्त्र में देखते तो झुककर रथ में से प्रणाम करते।

यदि किसी भोज में जाते और यह देखते कि उनके आगे भोजन बहुत रखा है तो आलसी बन जाते और खडे हो जाते। (जूठा भोजन छोड़ना नहीं चाहते और सब को खराब न करते उस आदमी को गंवार और आडम्बरी समझ लेते)।
जब भौतिककोप होता और बिजली कडकती तो आलसी हो जाते (इस लिए कि लोगों को कष्ट होगा)।

१७ जब रथ पर सवार होते तो डट कर सीधे खडे होते और रस्सी को पकड लेते।
जब रथ में बैठ जाते तो अपना सर इधर उधर न हिलाते। कभी जल्दी जल्दी नहीं बोलते थे और न हाथों से इशारा करते थे।

१८ " आदमी की शकल देख कर यह पक्षी उठता है फौरन उड़ जाता है और फिर धीरे धीरे बैठता है "

गुरुदेव बोले : देखो पर्वत पर मादा जंगली तीतर बैठी है। इसकी ऋतु है। इसकी ऋतु है। तीन बार इसने चेंगल् को सूंघा और फिर उड़ गई।



अध्याय ११

१ मुनिराज ने कहा :

कहा जाता है कि प्राचीन काल की राग विद्या और यज्ञ सीधे साधे थे और अब वे ही अच्छे हैं। भले मनुष्यों के काम के योग्य हैं। मुझ से पूछो तो मैं प्राचीन काल की राग विद्या और यज्ञ को चाहता हूं।

मुझे अवसर मिले तो प्राचीन काल के लोगों के राह पर चलूं।

२ गुरुदेव ने कहा:

चिन और चेह प्रान्तों में जो शिष्य मेरे साथ थे उन में से अब कोई भी शेष नहीं रहा।

धर्म के ज्ञाता और धर्म पर चलने वाले यह थे : यू यन, मिन चे कीन, यन पीह न्यू, और चुनकुङ्ग।

यह चतुर वक्ता थे : चे वू, चे कुंग, राज काज में कुशल थे; यन यू और की लू। काव्य में चतुर थे चे यू और चे ही।

३ ह्वे मेरी सहायता नहीं करता। मैं जो कुछ कहता हूँ उसको सुन कर प्रसन्न होता है। (तर्क नहीं करता)।

४ गुरुदेवने कहा :

मिन चे कीन ठीक ही पितृभक्त है। उसके विषय में और लोग भी वही बातें कहते हैं जो उसके पिता, माता और भाइ कहते हैं।

५ नान युंग प्राचीन काव्य के इस छंद को बहुत पढ़ा करता था और उनकी शिक्षा पर चलता भी था।
राजा में कोई दोष हो तो निकाला जा सकता है पर आदमी के कहने में जो दोष हो वह नहीं निकल सकता (क्योंकि कही बात वापस नहीं आती)।
कुङ्गमुनि ने अपने ज्येष्ट भ्राता की कन्या उसे विवाह दी।

६ के कांग ने पूछा : महाराज ! कौनसा शिष्य विद्याध्ययन का प्रेमी था। आपने कहा : यन ह्वे ऐसा था पर उसकी उमर कुछ न हुई। अब उस जैसा कोई भी नहीं है।

७ जब यन यूइन मरा तो यन लू ने मुनिराज से उनका रथ मांगा कि मृतक वस्त्र के सन्दूक का उपरी भाग ले आवे।
आपने कहा : हर आदमी अपने पुत्र के गुण अवगुण बिना विचारे उसे पुत्र कहता है। ले भी तो था, जब वह मरा तो मृत वस्त्र के सन्दूक का ऊपर का भाग न था। मैं सन्दूक लेने पैदल नहीं जाऊंगा क्योंकि यह प्रथा के विरुद्ध है कि बड़े अफसर पैदल चलें।

८ जब यू यन मरा तो महात्मा बोले। ईश्वर मुझे पीसे डालता है। मेरा सर्व नाश हो गया।

९ जब यू यन मरा तो मुनिराज ने महा शोक किया और शिष्यों ने कहा : महाराज ! आप महा शोकातुर हैं। गुरुदेव ने कहा : हां मुझे अति शोक है। इसकी मौत पर शोक न हो तो किसकी मौत पर होगा।

१० यू यन की शिष्यों ने आडम्बरी मृत क्रिया करनी चाही। महात्मा ने कहा: नहीं ऐसा मत करो। इसपर भी उन्होंने धूम धाम से उसका शव निकाला। गुरुदेव ने कहा : ह्वे ने मुझसे यू यन के पिता जैसा आचरण किया है। मैं उसे पुत्र के समान न समझ सका। यह आपका कसूर है।

(कङ्गमुनि ग़रीब आदमियों को मृत्यु की धूम धाम में शक्ति से बाहर पैसा खरच करना ठीक न समझते थे)। ह्वे मुझे अपना पिता समझता रहा पर मैं उसके साथ अपने पुत्र का सा बर्ताव न कर सका। यह मेरा दोष नहीं है। हे शिष्यो! यह आपका दोष है।

११ के लू ने पूछा : महाराज! मृत पुरुषों की आत्मा की सेवा किस प्रकार हो सकती है। महात्मा ने उत्तर दिया : जब ज़िन्दा लोगों की सेवा ही अच्छी तरह नहीं कर सकते तो मुर्दों की सेवा कैसे करोगे। फिर के लू ने कहा : महात्माजी! मृत्यु के विषय में कुछ उपदेश कीजिए (परलोक का हाल कहिए) मुनिराज ने जवाब दिया : जब जीवन के विषय में ही कुछ ठीक ठीक नहीं मालूम तो मृत्यु के विषय में क्या जानोगे?

(यह कुङ्गमुनि का प्रसिद्ध सिद्धान्त है। परलोक का विचार व्यर्थ है जब तक इस लोक को और जीवन को

न समझ लो। यहां ही धर्मानुसार जीवन बिताना मुख्य कर्तव्य है। जो जाति बहुत परलोक का विचार करती है वह इस जीवन को भूल कर निकम्मी हो जाती है। और दूसरी ताकत वर जाति उसे अपना गुलाम बना लेती है फिर यह लोक और परलोक दोनों का विचार भुलाकर नोन और तेल, दाल और भात की बात रहजाती है)।

१२ गुरुदेव के पास उनका शिष्य मिन खडाथा। वह नम्र और चोकस दीखता था। चेल्ह बहादर और सिपाही मालूम होताथा। यन यू और चे कुंग स्वतंत्र और सच्चे मालूम होते थे। महात्माने कहा : हे चेल्ह तुम चार पाई पर नहीं मरोगे।

१३ ल्ह नामकी रियासत में कुछ लोग पुराने खजाने का भवन जो लांग के समय की थी गिराकर नई बनानी चाहते थे। मिन चे कीनने कहा : यदि इस भवन को पुराने नकशे पर बनाना है तो गिराते ही क्यों हो। गुरुदेव ने कहा : यह शिष्य कम बोलता है पर जो बात कहता है वह समझ की होती है। (उसने फजूल खर्च बचाने की बात कही)।

१४ गुरुदेव ने कहा : मेरे द्वार पर यू की बांसुरी का क्या काम।

अन्य शिष्य चेल्ह् की इज्ज़त में कमी करने लगे।

गुरुदेव ने कहा :

यू (विद्या मन्दिर) के द्वार तक पहुंच गया है पर अभी अन्दर दाखिल नहीं हुवा ।

१५ चेकुंग ने प्रश्न किया : महाराज ! जे और शंग दोनों में कौन उत्तम है। आपने कहा : जे मध्य से बाहर निकल जाता है और शंग मध्य तक नहीं पहुंचता। इस पर चेकुङ्ग ने कहा तो मेरे विचार में जे़ बढ़कर है।
गुरुदेव बोले : पार निकल जाना इतना ही बुरा है जितना इस तरफ़ रहजाना।
(मुनिराज उचित मध्य को सबबातों में ठीक समझते थे इस विषय पर आपका एक ग्रंथ भी है)

१६ के वंश का नेता राजा चाव से भी अधिक धनवान् था तोभी क्यू (एक शिष्य) उसके लिए राजकर कठोरता से उगाहता था।

गुरुदेव ने कहा : अबसे क्यू मेरा शिष्य नहीं है। मेरे बच्चो (शिष्यो) ढोल बजा कर कहदो और उससे बचो। (कुङ्गमुनि गरीबों पर अन्याय नहीं देख सकते थे)

१७ चाये सीधा साधा है। सिन भोंदू है। स्जे़ उदार मनवाला है। यू भद्दा है।

१८ गुरुदेव बोले :
ह्वे को देखो ! इसने पूर्ण धर्म को लगभग पा लिया है। प्राय : गरीबी में रहता है।
चे इश्वरी ईच्छा में राजी नहीं रहता और ईश्वर इसको धन देता है। तोभी इसकी सम्मति प्रायः ठीक होती है।

१९ चे कुंग ने पूछा : महात्माजी ! भले आदमी की क्या निशानी है ? गुरुदेव ने कहा : वह दूसरों के क़दम पर क़दम नहीं रखता और मुनियों के घर में भी नहीं घुसता।
(उसकी ज्ञान शक्ति उसे कर्तव्याकर्तव्य बता देती है। अपने मन की ज्योति पर चलता है। स्वतंत्र रहता है)।

२० गुरुदेव बोले :
यदि किसी आदमी का भाषण ठोस और निष्कपट दीखता है तो क्या उसको भला आदमी समझ लें ? क्या वह वास्तव में महापुरुष है ? या उसकी गम्भीरता केवल दिखलावट है ?
(किसी आदमी को केवल उसकी बात चीत सुनकर झटपट नेक समझलेना ग़लती है)।

२१ चेल्ह ने पूछा : महाराजजी ! जो कुछ मैं सुनता हूं क्या उसपर फौरन अमल करने लगूं ? गुरुदेव ने कहा :

अपने पिता और बड़े भाई की सलाह लेनी चाहिए। जो सुनते हो उसपर तुरंत क्यों अमल करना चाहिए? यन यू ने भी यही प्रश्न किया कि क्या जो कुछ सुनता हूं उस पर तुरंत चलने लगूं तो मुनिराज बोले: हां! जो सुनो उसपर फौरन अमल करो। कुंग से ह्वा ने कहा: महाराज आपने एक प्रश्न के उत्तर में एक शिष्य से कहा कि बाप और भाई की सलाह लेनी चाहिए और दूसरे से कहा कि हां जो सुनो उसपर अमल करने लगो। यह भेद क्या है? मैं नहीं समझा।

गुरुदेव ने कहा:

क्यू चुपचाप और धीमा है इस लिए मैंने उसे कहा कि तुरंत अमल कर। यू उतावला और तेज़ तबीयत का है इस कारण मैंने उसे रोका।

२२ कांग राज में मुनिराज भय में पड़ गए और यू यन पीछे रह गया। जब वह फिर मिला तो मुनिराज बोले मैंने तो विचारा कि तुम मौत के मुख में गए। उसने कहा: महाराज! जब तक आप जीते हैं मैं मर नहीं सकता।

२३ के जे ज़िन ने पूछा: महाराज! क्या चुंग यू और यन क्यू महा मंत्री कहे जा सकते हैं?

गुरुदेव ने कहा: मैंने तो समझा कि तुम किसी महा पुरुष के विषय में प्रश्न करोगे पर तुमने तो यू और क्यू के बारे में पूछा।

महा मंत्री वह है जो राजा की सेवा न्याय के अनुसार करे और जब देखे कि न्याय पर नहीं चल सकता तो त्याग पत्र दे दे।

यू और क्यू साधारण मंत्री कहला सकते हैं। जेज़व ने कहा: तो क्या वे हरबात में राजा के साथ रहेंगे? क्या ऐसा करना ही है?

गुरुदेव ने कहा: पितृ–वध और राज–वध में वे राजा के साथ नहीं चलेंगे (राजा के ऊपर महाराजा भी था)।

२४ चेलूने चेको को अपने अनुरोध से पे का गवर्नर बनवा दिया।

गुरुदेव ने कहा: तुम किसी के पुत्र के हक़में बुराई कर रहे हो।

चेलू बोला: महाराज! साधारण लोग और साधारण अफ़सर भी तो होते हैं (सब अफ़सर महापुरुष नहीं हो सकते। देश में पितृ मन्दिर भी होते हैं और अनाज की कोठी भी। यह क्या जरूरी है कि जो विद्वान् कहलावे वह पुस्तकों का ज्ञान भी रखता हो?

गुरुदेव ने कहा: तुम जैसे चालाक आदमियों से मुझे घृणा है।

२५ चेलू, चांगसी, यन यू और कुंग से गुरुदेव के पास बैठे थे। महात्माने कहा: मैं तुम से उम्रमें कुछ बड़ा हूं पर तुम इसका विचार न करो।

तुम प्रतिदिन यह कहते हो: हमको कोई नहीं जानता। यदि तुमको कोई राजा जान जाय तो तुम क्या करोगे? चेलूने बिना सोचे जल्दी में आकर कहा: यदि कोई दस सहस्र रथ वाली रियासत दूसरी रियासतों के बीच में फँस गई हो और शत्रुकी सेना ने उसे आ दबाया हो और उस समय अनाज और तरकारी भी ना पैदा हो और मैं वहां का मंत्री बना दिया जाऊं तो मैं तीन वर्ष के भीतर वहां के लोगों को साहसी बनादूं और धर्म के मार्ग पर लगा दूं।

गुरुदेव उसे देख कर मुसकरा दिए।

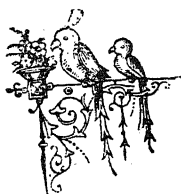
यन यू की ओर देख कर बोले। तुम क्या चाहते हो। उसने कहा: यदि कोई सौ दो सौ कोस का राज हो और मुझे वहां प्रवंधक बनाया जाय तो मैं तीन वर्ष के अंदर वहां खाने पीने रहने आदि की चीज़ों को खूब पैदा कर दूंगा और फिर लोगों को गान विद्या और धर्म सिखा कर ठहरूंगा कि कोई महापुरुष वहां पैदा हो और राज को धर्म पर चलावे। फिर गुरुदेव ने कुंगसे ह्वा से पूछा: तुम क्या चाहते हो? उसने कहा: मैं यह नहीं कहता कि मेरी योग्यता मेरी इच्छा के अनुसार है। मैं यह सीखना चाहता हूं कि पितृ मन्दिर में काला लम्बा चोगा और काली मल मल की टोपी पहिन कर राजाओं के साथ महाराजा की सेवा में उपस्थित रहूं।

अंतमें मुनिराजने चांग सी से कहाः तुम क्या चाहते हो ? उसने उत्तर दियाः महाराज ! मेरी इच्छा इन तीन भ्राताओं से भिन्न है । मुनिवर बोलेः अच्छा तुम भी कहो कि क्या चाहते हो । चांग सी सारंगी बजाने बाला था । तारों को मिला रहा था । सारंगी को एक ओर रख कर बोलाः बसंत ऋतु के आखिर महीने में पांच या छ जवान आदमियों के साथ जो विद्यारसिक हैं और छ या सात लड़कों के साथ ई नदी में आनन्द से स्नान करुं, खेतों में मंद मंद पवन में आनन्द करुं और राग गाता हुवा घर को लौट आऊं । यही मेरी परम इच्छा है । गुरुदेव ने गहरी श्वास भरी और कहाः हां । मैं तुम्हारी इच्छा पर प्रसन्न हू ।

तीनों शिष्य बाहर चले गए पर चांग सी गुरुदेव के साथ रह गया और कहने लगाः महाराज ! आप इन तीन भाइयों की मनो कामना के विषय में क्या कहते हैं ? आपने उत्तर दियाः मैं जान गया कि उनकी क्या कामना है ।

चांग सी ने फिर अदबसे पूछा : महाराज ! आप यू के कथन पर क्यों मुसकराए ? आपने उत्तर दिया : रियासत का शासन करने में सभ्यता के नियमों की जरुरत है । यू के शब्दों में दीनता नहीं है (अभिमान है) । इसी कारण मैं मुसकराया ।

चांग सी ने फिर कहा : क्यू रियासत चाहता है (पर बातें और ही बनाता है)। उत्तर मिला : हां। क्या इतनी लम्बी चौड़ी ज़मीन रियासत नहीं तो क्या है।
चांग सीने फिर कहा : ची भी तो राज चाहता है ना? आपने कहा : हां। राजा ही पितृ मन्दिर से संबंध रखता है और महाराजा की सभा में जाता है। वह राजा बनना चाहता है। सेवा भाव से रहित है)।



अध्याय १२

१ यन यूइन ने पूछा। मुनिवर ! पूर्ण धर्म क्या है ?
गुरुदेव ने उत्तर दिया : आत्मसंयम करना और शुद्धता परमधर्म है। यदि कोई एक दिन भर भी अपने को बस में रक्खे और शुद्धता से रहे तो सब संसार उसे पूर्ण धर्मात्मा कहेगा। विचार करो प्रत्येक मनुष्य स्वयं ही धर्मात्मा बन सकता है। दूसरों के कर्म से संबंध नहीं है।
यू यूइन ने कहा : महात्माजी, धर्म का रास्ता क्या है ?
गुरुदेव बोले : जो कुछ शुद्धता के विरुद्ध है उसकी तरफ मत देखो। जो शुद्धता के विरुद्ध हो उसे मत कहो। और तो क्या प्रत्येक बात में (मन, वचन और कर्म) में शुद्धता को मत त्यागो।
यूइन ने कहा। मुझ में बळ और ज्ञान शक्ति कम है पर मैं धर्म पर पूरा मन लगा कर चलूंगा।
(चीन के टीकाकारों ने " आत्मसंयम " का अर्थ करते हुए कहा है कि इसका भाव स्वार्थ को मिटाना और पशुता को दूर करना है। शुद्धता का अर्थ है पवित्रता और इसका भाव यह है कि बुरे अर्थात् स्वार्थी और दूसरों को हानि पहुंचाने का विचार मत करो। कुङ्गमुनि के मत में आत्मा पवित्र और सदाचार का घर है। सब अयोग्य, दूसरों को धोका या हानि पहुंचाने वाले कर्म, विचार अशुद्ध हैं।

श्री भगवान् ने गीता में कहा है : " आत्मा ही आत्मा का शत्रु है । जिसने अपने को नहीं वश में किया उसका मन शत्रु है । "

महात्मा गांधी को भी यही मत स्वीकार है । अफ़लातून ने कुङ्गमुनि के सिद्धान्त को ही आदर्श माना है । याद रखना चाहिए कि कुङ्गमुनि का सिद्धान्त परलोक, स्वर्ग, नरक आदि से रहित है ।

कुरान शरीफ़ में भी नफ़स को काबू करना परम धर्म माना है ।

चुंग कुंग ने पूर्ण धर्म के विषय में पूछा । गुरुदेव ने उत्तर दिया : सुनो । पूर्ण धर्म यह है जब तुम बाहर निकलो तो प्रत्येक से यह समझ कर मिलो कि वह तुम्हारा बड़ा अतिथि है । लोगों से जब काम लो तो यह समझो कि बड़ा यज्ञ कर रहे हो । किसी के साथ ऐसा बर्ताव मत करो जो तुम उससे अपने लिए नहीं चाहते । देश में कोई दुःखित हो कर तुम्हारी निन्दा न करे और घर में भी कोई तुम्हारे विरुद्ध न बुड़ बुड़ावे ।

चुंग कुंग बोला : न मुझ में शक्ति है न उग्र बुद्धि तोभी मैं धर्म पर पूरा मन लगा कर चलूंगा ।

(ईसाई लोग इस नियम को Golden Rule सुनहरा नियम कहते हैं । कुङ्गमुनि ने ईसा मसीह से

५०० वर्ष पहिले यह नियम चीन को दिया। मनु और महाभारत में भी इस नियम का वर्णन है)।

३ सुम्मा न्यू ने पूर्ण धर्म के विषय में प्रश्न किया। गुरुदेव ने उत्तर दिया : पूर्ण धर्मात्मा सावधानीसे और धीरे धीरे बात करता है।

न्यू ने कहा : धीरज और सावधानी !

गुरुदेव ने कहा : जब मनुष्य क्रिया में कठिनता देखता है तो बातों में सावधानी और धीरज नहीं तो क्या करेगा।

४ न्यू ने महा पुरुष के विषय में पूछा :

महात्मा ने कहा ! महापुरुष चिन्ता और भय से रहित होता है।

न्यू ने कहा क्या जो चिन्ता और भय न रखता हो वह महापुरुष कहाता है ?

महात्मा ने कहा : जब अपने में कोई दोष नहीं दीखता तो किस बात की चिन्ता और भय है।

५ सुम्मा न्यू ने कहा : और सब आदमियों के भाई हैं मेरे कोई भाई नहीं।

चे ह्वा ने यह सुना तो कहा : मैंने निम्नलिखित जनश्रुति सुनी है :

जीवन और मृत्यु का समय नियत है।

सन्मान और धन ईश्वर की इच्छा पर हैं।

महापुरुष को चाहिए कि अपने आचार पर आदर पूर्वक ध्यान रक्खे। दूसरों का सन्मान करे और मर्यादा को न भूले। ऐसा करेगा तो चारों समुद्र के बीच वाले उस के भाई बन जाएंगे। महापुरुष को इसबात का दुःख नहीं होता कि मेरे भाई नहीं हैं।

६ जे़ चुंग ने पूछा : मुनिराज ! समझवाला मनुष्य किसको कहते हैं ?

गुरुदेव ने कहा : जिसको ऐसी निन्दा और कलंक जो मन में घुस जांय और घाव की तरह लगने वाली हो अस्तव्यस्त नहीं करती वही समझदार और दूरदर्शी है।

७ जे़ कुंग ने पूछा : महाराज ! शासन में किन किन बातों की आवश्यकता है ?

गुरुदेव बोले : पेटभर खानेको हो, सेना पर्याप्त हो और प्रजा का शासक में विश्वास हो। जे़ कुंग ने फिर कहा : यदि इन वस्तुओं में से एक को छोड़ना पड़े तो पहिले किसको त्यागे ? गुरुदेव ने कहा : सेना को।

जे़ कुंग फिर बोला : यदि बची हुई दो वस्तुओं में से एक में कमी करनी हो तो किसमें करे।

गुरुदेव ने कहा : अन्नमें। पूर्व काल से मौत सबको खाती आई है। पर यदि प्रजा का राजा में विश्वास नहीं तो वह राज ठहर नहीं सकता।

(चीनी टीकाकार लिखते हैं कि जब राज में अन्न पर्याप्त हो और प्रजा भूखी न रहे तो राजा सेना हथियार आदि बढ़ावे और फिर प्रजा को शिक्षण दे तो प्रजा का राजा में विश्वास होता है। राजा को चाहिए कि प्रजा उसमें विश्वास रक्खे और यदि ऐसा न हो तो राजा को मौत का आश्रय लेना चाहिए जिससे अपमान और क्रांति से बच जाय)।

८ कीह जेशिंग ने कहा :

महापुरुष को मौलिकता चाहिए। अलंकार से क्या काम? उसे आभूषण अर्थात् गान विद्या, सभ्यता के नियम, यज्ञ, उचित वस्त्र धारण आदि से क्या प्रयोजन।

चे कुंग ने कहा : खेद है। आप बातों से महापुरुष मालूम होते हैं पर चार घोड़े भी जबान के बराबर तेज नहीं चल सकते।

अलंकार भी मौलिकता हैं और मौलिकताभी सुन्दरता से खाली न होनी चाहिए।

शेर की खाल पर से बाल उतार लो तो वह कुत्ते की बाल रहित खाल मालूम होती है या बेबाल की बकरे की खाल।

९ गाव के राजा ने यू जो से पूछा : इस साल अनाज कम पैदा हुआ है और कर भी कम प्राप्त हुआ है। व्यय को रुपया कम है। क्या करना चाहिए?

यू जो ने कहा : प्रजासे आय का दसवां भाग कर लो। राजा बोले : पांचवांभाग लेने से भी काम नहीं चलता दसवां भाग लेने से कैसे व्यय चलेगा ?

यू जो ने उत्तर दिया : यदि प्रजा के पास बहुतायत है तो राजा अभाव में न रहेगा और यदि प्रजा निर्धन है तो राजा भी अकेला बहुतायत का आनन्द भोग नहीं कर सकता।

१० जे चांग ने प्रश्न किया : महात्माजी ! धर्म की उन्नति किस प्रकार हो सकती है और कपट किस तरह मालूम हो सकता है।

गुरुदेव ने कहा :

अपने आचार में विश्वास और निष्कपटता को प्रथम स्थान दो और निरन्तर सच्चाई की ओर चलते रहो। यह धर्म में उन्नति करने का मार्ग है।

तुम जिसको प्रेम करते हो उसे सदा जीवित रहना चाहते हो और फिर उससे घृणा करते हो उसे मृत्यु मांगते हो। एक वार उसकी जिन्दगी मांग कर फिर उसी की मौत चाहते हो, यही कपट है।

(अर्थ यह है कि मृत्यु और जीवन किसी के चाहने पर निर्भर नहीं है। मनुष्य कभी एक को चाहता है कभी उसीसे घृणा करता है। महापुरुष प्रेम और द्वेष दोनों से परे रहता है)।

११ चे के राजाने कुङ्गमुनि से राज संबंधी प्रश्न किया। मुनिवर ने उत्तर दिया : वही राज ठीक है जिसमें राजा राजा है मंत्री मंत्री। जब पिता पिता है और पुत्र पुत्र। राजा ने कहा : ठीक ! यदि राजा राजा न रहे ? मंत्री मंत्री न रहे ? पिता पिता न रहे और पुत्र पुत्र न रहे पर मैं अपना कर प्राप्त कर लूं तो क्या मैं आनन्द भोग न कर सकूंगा। (मुनिराज चुप हो गए क्यों कि राजा ने मूर्खता की बात कही)।

१२ गुरुदेव ने कहा : आह ! यू ही था जो थोडी देर में अभियोग का निर्णय कर देता था।
चेल्ह वचन दे कर जब तक पूरा न करता नींद भर न सोता था।

१३ गुरुदेव ने कहा :
मुक़दमे का फ़ैसला करने में मैं साधारण मनुष्यों के समान हूं।
सच तो यह है कि लोग अभियोग वृद्धि न करें।

१४ चे चांग ने शासन करने का प्रकार पूछा, गुरुदेव ने कहा : राज कार्य को बिना थके हर समय मन में रखना और लगातार उन नियमों को बरते जाना राज करने का प्रकार है।

१५ गुरुदेव बोले :

जो विद्या को खूब अध्ययन करेगा और अपने आपको धर्म के नियमों में बंधा रखेगा वह फिर सचाई के मार्ग में भूल न करेगा।

१६ महापुरुष, लोगों में धर्म को पक्का करना चाहता है और उनको धर्म पर चलाता है। लघुआत्मा पुरुष इसके विरुद्ध काम करता है।

१७ के किंग ने राज संबंधी प्रश्न किया। गुरुराज ने कहा : राज करने का प्रयोजन है लोगों का सुधार करना। यदि तुम प्रजा को ठीक रास्ते पर चलाओ और स्वयम् चलो तो ऐसा कौन है जो न सुधरेगा।

१८ के किंग के राज में चोर बहुत थे इससे वह दुःखी था। उसने कुङ्गमुनि से पूछा कि चोरों को क्या दंड दें। मुनिराज बोले राजा जी! यदि आप लोभी न होते तो लोग पारितोष पाने के लिए भी चोरी न करते।

१९ के कांग ने राज काज का विचार करते हुए कुङ्गमुनि से पूछा : महाराज नियम पर चलने वाले पुरुषों की भलाई के लिए दुष्टों के प्राण लेने चाहिए या नहीं।

कुङ्गमुनि ने कहा : महाशय! राज काज में किसी के भी प्राण लेने की आवश्यकता नहीं है। अपने मन को

प्रजा की भलाई के विचार से भरलो और फिर लोग भी भले बन जावेंगे। महापुरुष और नीच पुरुषों में वही संबंध है जो वायु और घास में है। जब हवा चलेगी तो घास जरूर झुक जायगी।

२० चे चांग ने पूछा : महाराज ! सुप्रसिद्ध अफसर को किन चिन्हों द्वारा जाना जाता है। मुनिराज ने कहा : सुप्रसिद्धता से तुम्हारा क्या भाव है।
उसने उत्तर दिया : सब राज में नाम फैल जाना। सम्पूर्ण वंश में प्रसिद्ध हो जाना। गुरुदेव बोले : यह तो नामवरी है सुप्रसिद्धता नहीं।
श्रेष्ट पुरुष पक्का, और पूरा सदाचारी और सत्यता का प्रेमी होता है। वह और लोगों के मुखको देखता है और उनके शब्दों को तोलता है। दूसरों के सामने नम्र होने को तैय्यार रहता है। जो ऐसा हो वह देश में सुप्रसिद्ध होगा और अपने वंश में भी।
केवल नाम चाहनेवाला अपनी शकल धर्मात्माओं की सी बनाता है पर काम उसके विरुद्ध करता है। अपने आप पर बिना विचार किए इसी धुन में रहता है। लोग उसको जान लेते हैं।

२१ फान चे गुरुदेव के साथ वृक्षों के जंगल की सैर कर रहा था।उसने पूछाः महामुनि जी ! कृपा कर के कहिए मैं धर्म

में कैसे उन्नति करूं और पुराने दोषों को अपने में से कैसे निकालूं और भ्रम को कैसे पहिचान लूं।

गुरूदेव ने प्रसन्नता से कहा : उत्तम प्रश्न है। सुनो। जो कर्तव्य है उसको प्रथम स्थान दे कर करना और अर्थ सिद्धि को दूसरा स्थान देना धर्मोन्नति का मार्ग है।

अपनी बुराइयों को काटना और दूसरों के दोषों पर आक्षेप न करना बुराई दूर करने का रास्ता है।

प्रातःकाल क्रोध में आकर सब जीवन के लाभों को भुला देना और अपने माता पिता के नाम पर धब्बा लगाना भ्रम का उदाहरण है।

२२ फानचेने परोपकार के विषय में पूछा। गुरूदेव ने कहा : मनुष्य मात्र से प्रेम करना परोपकार है। उसने फिर कहा : ज्ञान क्या है ?

मुनिराज बोले : मनुष्यों की प्रकृति को जानना। फानचे इन सिद्धान्तों को न समझा। गुरूदेव ने कहा सदाचारी आदमियों को काम दो। दुष्टों को दूर रक्खो। दुष्ट आप सुधर जाएंगे। फान चे चला गया और चे ही से कहने लगा : आज मैंने गुरूदेव से ज्ञान के विषय में पूछा तो कहने लगे भलों को काम में लगाओ दुष्टों को दूर रक्खो। इसका क्या भाव है ?

चेही बोला : बड़े मर्म की बात है। देखो। महाराजा शुन ने सब प्रजा में से कात्र यू को चुना और अपना

अधिकारी बनाया तो सब लोगों में धर्म फैल गया। टांग महाराजा ने भी धार्भिकता का पद इन को दिया तो दुष्ट लोग धर्म में लग गए।

(यही सिद्धान्त श्रीकृष्णभगवान ने गीता में कहा है :जैसा श्रेष्ट पुरुषोंका आचरण होता है वैसाही और लोग करते हैं। भारत में मुसलमानों के राज में शराब पीने की प्रथा न हुई क्योंकि मुसलमान हाकिम शराबी न थे। अंग्रेजों के राज में शराब फैलगई क्योंकि अंग्रेज हाकिम, पादरी आदि शराबी होते हैं)।

२३ चेकुङ्ग ने मित्रता के विषय में पूछा। गुरुदेव बोले : विश्वास पूर्वक मित्र को बोध करते रहो और कृपा पूर्वक सीधे रास्ते पर चलाओ। यदि वह न माने तो रुक जाओ। अपना अपयश न कराओ।

२४ ज्ञानी चांगने कहा है : महापुरुष विद्या और काव्य के आधार पर मित्र बनता है और मित्रताद्वारा उनको आचार पर चलाता है।

(मित्रता का आधार विद्या, कला, विज्ञान आदि होना चाहिए। व्यर्थ समय काटना या व्यसन करना मित्रता नहीं शत्रुता है)।



अध्याय १३

१ चे लू ने राज करने के विषय में पूछा।
गुरुदेव ने कहा :
लोगों के सामने दृष्टांत बनकर जा और उनके काम काज में मन लगा कर श्रमकर। उसने कहा : महाराज! कुछ और उपदेश कीजिए। गुरुदेव बोले : इन दो बातों में जो ऊपर कहीं हैं मत थको।

२ चुंग कुंग के राजा का मंत्री था उसने मुनिराज से राज करने के विषय में पूछा। आपने कहा : अपने नीचे के अधिकारियों को उनके काम में लगाओ, छोटे छोटे दोषों पर दृष्टि न डालो और धार्मिक योग्य पुरुषों को बड़े बड़े पद दो।
चुंग कुंग बोला : महाराज! मैं धार्मिक और योग्य पुरुषों को कैसे पहिचानूं और उनको पदवी दूं?
गुरुदेव ने उत्तरदिया : जिनको अच्छी तरह जानते हो उनको पदवी दो। जिनको तुम नहीं जानते उनको दूसरे लोग न भूलेंगे।

३ चे लू ने कहा : वे का राजा राजकाज में आपकी सहायता चाहता है और आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। आप उसके राज में सबसे पहिले क्या करेंगे?

गुरुदेव बोले : नामों का सुधार करूंगा
चेलूने कहा : यह बात व्यर्थ है । भला नामों के सुधार और राज काज से क्या संबंध । गुरुदेव ने कहा : तुम कैसे ना समझ हो । यदि महापुरुष किसी बात को नहीं जानता तो सावधानी से चुप रहता है । सुनो ! यदि भाषा ठीक न हो तो सच्चा सच्चा पदार्थों का भाव नहीं मालूम होता और विषय निर्णयको नहीं प्राप्त होते । जब विषय सफलता को नहीं प्राप्त होते तो योग्यता और गान विद्या उच्च अवस्था को नहीं पहुंचती । जब यह ठीक नहीं तो दण्ड भी ठीक ठीक नहीं दिया जासकता । जब दण्ड (सज़ा) ठीक ठीक नहीं दिया जाता तो लोगों को हाथ पैर हिलाने में भी भय रहता है ।
इस लिए महापुरुष इस बात का पूरा विचार करता है कि जो शब्द वह प्रयोग करे उनका अर्थ ठीक और उचित हो और वह जो कुछ कहता है उसे ठीक ठीक व्यवहार में लाना चाहता है । महापुरुषका ध्यान अपने कहे हुए शब्दों पर रहता है कि वह अशुद्ध न हों ।

४ फान चे ने कुङ्गमुनि से कृषक क्रिया सीखनी चाही । मुनिराज ने कहा : मैं सिद्धहस्त कृषक नहीं हूं । फिर उसने कहा : महाराज ! मुझे बाग़बानी का काम सिखाइए ।
गुरुदेव ने कहा : मुझे इसकाम में पूरा ज्ञान नहीं है ।

जब फान चे बाहर चलागया तो मुनिराज बोले : फान चे अब तक भी छोटा आदमी है।
यदि महापुरुष को योग्यजनों से प्रेम है तो कौन उसका अनादर कर सकता है। यदि उसको धर्म से प्रेम है तो लोग अवश्य उसका अनुसरण करेंगे। यदि वह सत्य प्रेमी है तो लोग उसके साथ अवश्य निष्कपट रहेंगे। जब यह सब गुण उसमें हैं तो लोग सब प्रकार से अपने बच्चों को गोद में उठाए उसके पास आवेंगे। भला कहो तो कृषक–विद्या की क्या आवश्यकता रहेगी ?

५ गुरुदेव बोले :
यदि किसी को ३०० प्राचीन पद्य कण्ठ हों और वह राज में पदवी प्राप्त कर अपना काम दक्षता पूर्वक न कर सके और किसी काम पर भेजा जाय पर उसको कुशलता से न कर सके तो वह मनुष्य विद्या होते भी निकम्मा है।

६ गुरुदेव ने कहा :
यदि किसी राजा का निजु आचार धर्म पूर्वक हो तो उसको बहुत से राज नियम बनाने की आवश्यकता नहीं; और जो उसका आचार दुष्ट हो तो उसका राज अशांति में रहेगा वह चाहे जितनी राजाज्ञाएं निकाले सब व्यर्थ होंगी।

७ गुरुदेव ने कहा : लू और वे के राज भाई हैं।

८ किंग नामक अफसर के विषय में गुरुदेवने कहा: वह अपने घर का प्रबंध खूब जानता था। जब उसके पास धन आने लगा तो बोला: हां। यह बहुत है। जब कुछ और आया तो कहा: हां! अब बस। जब धनी होगया तो कहने लगा: इसकी प्रशंसा करता हूँ। (सदा संतोषी था)।

९ जब गुरुदेव वे प्रांतको चले तो यन यू उनका रथ हांकता था।

गुरुदेव बोले: ओहो! यहां कितने अधिक लोग बसते हैं।

यू ने कहा लोग इतने ज्यादा हैं। शासक इनको क्या और दे?

गुरुदेव बोले: इनको धनवान् बनाना चाहिए।

यू ने फिर पूछा: धनवान् होने पर फिर क्या चाहिए।

गुरुदेव ने कहा: फिर इनको शिक्षा देनी चाहिए।:

(कुङ्गमुनिने यह परम महत्त्वका सिद्धान्त कहा है। पहिले भर पेट खाने को, मकान रहने को, वस्त्र पहिनने को होने चाहिए फिर शिक्षा चाहिए। भूखे आदमी भला क्या सीख सकते हैं। अनेक पाप और बुराइयों की माता दरिद्रता है। जो राजा लोगों को दरिद्र कर के उनको भला आदमी बनाना चाहता है वह रथ को अश्व के आगे रखता है। धर्म भी वहीं फैलता है जहां लोग भूखे

नहीं मरते। कार्लमार्क्स ने इसी सिद्धान्त पर अर्थशास्त्र बनाया है और पुरोड़िन भी यही कहता है।

१० गुरुदेव बोले। यदि कोई राजा मुझे अपना मंत्री बनावे तो मैं एक वर्ष में बहुत कुछ कर के दिखा सकता हूं और तीन वर्ष में राज को पूर्ण बना सकता हूँ।

११ गुरुदेव ने कहा : नीचे की दंतकथा सर्वथा सत्य है :– यदि एक सहस्र वर्ष तक लगातार साधु लोग किसी देशका राज करें तो बुरे से बुरे लोग भी साधु बन जाएंगे और मौत का दंड दूर होजायगा।

१२ यदि कोई सच्चा राजा आजाय तो एक साख में लोग सुधरजावें और पूर्ण धर्म फैल जायगा।

१३ यदि मंत्री का अपना आचार ठीक है तो शासन की सहायता करने में उसे कोई अडचण न होगी। और यदि वह अपना ही सुधार नहीं कर सकता तो औरों का क्या करेगा ?

१४ मुनिराजका शिष्य यन जब राज सभा से लौटा तो आपने पूछाः इतनी देर क्यों हुई ?
यनने कहाः मैं राज काज में लगा था।
गुरुदेव बोलेः कदाचित् घर का काम होगा। यदि राज

का काम था तो मुझसे क्यों न अनुमति ली। मैं पदवी पर नहीं हूँ तो क्या हुआ।

१९ राजाने टिंग से पूछाः महामुनि ! क्या ऐसा एक वाक्य है जिस पर चलने से राज्य भरपूर फले फूले ?

कुङ्गमुनि ने उत्तर दियाः एक वाक्य में यह बात नहीं आसकती। पर हां ! एक दंतकथा लोगों में प्रचलित है उसे सुनलो :—

राजा होना कठिन है, मन्त्री बनना सहज नहीं है।

यदि राजा यह जान ले कि राजा बनना कठिन कार्य्य है तो शायद इस एक वाक्य पर चलने से राज्य में भरपूरता हो जायगी। राजाने फिर पूछाः क्या ऐसा भी कोई एक वाक्य है जिस पर चलने से देश का नाश हो जाय।

मुनिराज बोलेः यह बात एक वाक्य में नहीं कही जासकती पर लोग यह कहते हैं। सुनो !

" मुझे राजा बनने में प्रसन्नता नहीं है। पर हां मेरी इच्छा है कि कोई भी मेरी बात को न काटे, सब मेरी हां में हां मिलाते जांय "।

यदि राजा के वाक्य सत्य और हितकर हैं तो उन का निषेध करना ठीक नहीं, और यदि वे असत्य और अहित कर हैं और कोई उन का निषेध भी नहीं करता तो बस एक ही वाक्य में देश का सर्व नाश हो जाएगा।

१६ शे के राजा ने कुङ्गमुनि से अच्छी शासन विधि क्या है यह प्रश्न किया।

गुरुदेव ने उत्तर दिया : अच्छी शासनविधि वह कहाती है जो निकट के लोगों को प्रसन्नता दे और दूर के लोगों को आकर्षण करे।

१७ कोफू का गवर्नर चे ह्वा था। उसने मुनिराज से पूछा : महाराज ! राज काज किस तरह करना चाहिए।

गुरुदेव बोले : कार्यों की पूर्णता में उतावले मत बनो। छोटे छोटे लाभों का ख्याल न करो। उतावला मन काम को पूर्णता से रोकता है। छोटे छोटे लाभों पर ध्यान दिया जाय तो बड़े बड़े लाभ पूरे नहीं होते।

१८ शे के राजा ने कुङ्गमुनि से कहा। हमारे देश में पूरे सदाचारी आदमी भी बसते हैं। यदि उनका बाप बकरी चुराले तो उसके विरुद्ध साक्षी देते हैं।

कुङ्गमुनि बोले : हमारे राज में दूसरी भांति के आदमी सदाचारी कहे जाते हैं। बाप बेटे की बुराइयों को छिपाता है और बेटा बापकी बुराइयों को छिपाता है। इसी का नाम हमारे यहां आचार है।

(आचार बड़ी बात है पर पिता—पुत्र का संबंध भी तो धर्म का एक अंग है। मित्र को पकडवा देना कौनसी धर्म नीति है। यह भी गहरा सिद्धान्त है। आज दिन भी चीनी लोग पुराने मित्र का कोई दोष ज्ञात होने पर भी

नहीं त्यागते। सब प्रकार मित्र का साथ देते हैं। यदि कोई मित्र बुराई भी करे तो यह कह कर उसे भूल जाते हैं : दस वर्ष की मित्रता में एक दो बार बुराई की तो क्या इससे पुराने संबंध में भेद नहीं पड़ता। चीनी लोग परदेशी आदमी के भी पूर्ण मित्र बन जाते हैं। जो चीन में रहा वह चीनी ही माना गया।

१९ फ़ान चे ने पूर्ण धर्म के विषय में पूछा : गुरुदेव बोले : एकांत में शान्त और गम्भीर रहना, व्यवहार में आदर पूर्वक ध्यान देना, दूसरों से मेल मिलाप में पूर्ण निष्कपट होना।

२० च कुङ्ग ने यह प्रश्न किया : महात्माजी ! अधिकारी कहलाने वाले आदमी में कौन से गुण होने चाहिए ?

गुरुदेव ने कहा : अपने आचार में लज्जाका ध्यान, जो इस पर ध्यान रखेगा वह किसी काम पर जाय अपने राजा के असन्मान का कारण न होगा।

चे फिर पूछने लगा : दूसरी श्रेणी के अधिकारी के गुण भी कहिए।

मुनि बोले : वह जिसके कुटुम्बी उसे पितृभक्त कहते हैं और ग्राम वाले तथा पड़ोसी भाई समझते हैं।

चे कुंग ने फिर आज्ञा ले कर पूछा : महामुनि जी ! इसके नीचे के वर्ग के अधिकारी के गुण भी कहिए। गुरुदेव बोले :

जो कुछ कहेंगे पूर्ण निष्कपटता से कहेंगे। चाहे जो कुछ हो छल की बात न बोलेगें। यह लोग दुराग्रही होते हैं पर कदाचित् नीचे वर्ग के अधिकारी बन सकेंगे।

चे कुंग ने अंतमे पूछा : आज कल के अधिकारी कैसे हैं ?

आपने उत्तर दिया : भूखे टोकरे हैं। इन का विचार करना व्यर्थ है।

२१ गुरूदेव बोले :

मध्य वर्ती आदमी मेरी शिक्षा ग्रहण करने वाले नहीं मिलते। अब मैं उत्साही और सावधान लोगों को शिक्षा दूंगा। उत्साही शिष्य सत्योपदेश को ग्रहण कर उन्नति करेंगे और निश्चय है शिष्य असत्य से बचे रहेंगे।

२२ दक्षिण के लोगों में यह क्या अच्छी दंतकथा प्रसिद्ध है : जिन में धैर्य नहीं है वह न तो इन्द्रजाली बन सकते हैं और न वैद्य। जिस में धर्म में दृढता नहीं है वह अपमान भोगेगा।

दूरदर्शिता न होने से यह अधीरता आती है।

२३ गुरूदेव बोले : महापुरुष मधुर भाषी होता है पर चाटुकारी नहीं। नीच चाटुकारी होते हैं मधुर भाषी नहीं।

२४ चे कुंग ने पूछा : जिस आदमी को, सारा गांव प्रशंसा करता हो उसके बारे में आप क्या कहेंगे।

गुरुदेव बोले : केवल इस बात से ही हम उसकी प्रशंसा नहीं समझेंगे ।

चे ने फिर पूछा : जिसे सारा गांव घृणा करता हो उसे आप क्या समझेंगे ।

गुरुदेव बोले : केवल इस बात से हम उसे बुरा न समझेंगे। जिसे भले आदमी प्यार करें और दुराचारी बुरा कहें, वह इन दोनों से अच्छा है ।

२५ गुरुदेव बोले :

महापुरुष की सेवा करना सहज है पर उसे संतुष्ट करना कठिन है । यदि उसे ऐसी विधि से प्रसन्न करना चाहो जो सत्य के विरुद्ध है तो वह प्रसन्न न होगा । पर वह प्रत्येक आदमी को उसकी योग्यता के अनुसार काम पर लगा देगा ।

नीच (लघुआत्मा) मनुष्य की सेवा मुश्किल है पर वह प्रसन्न शीघ्र होजाता है । पर वह अपने नौकरों से प्रत्येक काम लेना चाहता है ।

२६ गुरुदेव बोले :

महापुरुष घमंडी नहीं होता पर सरलता के साथ आराम (शांति) में रहता है ! नीच घमंडी होता है पर ठाट बाट से रहता है

२७ निम्न लिखित पुरुष धर्म के निकट है :

दृढ, तितिक्षु, सीधसाधे, लज्जावान् ।

२८ चेल्नने पूछा : विद्वान् में कौन से गुण होने चाहिए ? गुरुदेव बोले : उद्योगी, आशावान, विनीत । मित्रता में उत्सुक और शीघ्रकार्य । भाइयों में विनीत ।

२९ गुरुदेव बोले :

युद्ध में लगाए जाने से पहिले सिपाही को किसी भद्र आदमी से सात साल विद्या सीखनी चाहिए ।

३० अशिक्षित पुरुषों को युद्ध में भेजना उनको यूंही फैंक देना है ।

(चीन की सभ्यता में सेनापति, सैनिक युद्धप्रिय जन घृणा से देखे जाते हैं । उनको हत्यारा कहा जाता है । चीन में सेना का काम घातकी का धंधा कहलाता है । चीनी प्राचीन कालसे शान्ति के प्रेमी हैं । उनके महापुरुषों में योद्धा नहीं हैं ।



अध्याय १४

१ हीन ने पूछा। अधिकारियों के लिये लज्जा की बात कौन सी है?

गुरुदेव ने कहा: जब राज में न्याय और शांति हो तो अपने वेतन पर ध्यान रखना और जब राज में अशांति हो तो वेतन पर ध्यान रखना लज्जा की बात है।

२ जब निजि अहंकार निजि प्रशंसा, क्रोध और लोभ दब जांय तो क्या इस स्थिति को पूर्ण धर्म कह सकते हैं?
गुरुदेव बोले : यह स्थिति कठिनतासे प्रात होती है। पर मैं नहीं कह सकता कि यह पूर्ण धर्म है।

३. जब विद्या-प्रेमी विश्राम प्रेमी हो जाय तो उसे विद्या-प्रेमी न कहना चाहिए।

४ जब राज में शासन धर्मानुसार होता है, तो वहां की भाषा भी उच्च और वीरता पूर्ण होती है और मनुष्यों के कर्म भी ऐसे ही होते हैं। अधर्मी राज में कर्म ऊंचे और वीरता के हों तोभी भाषा ऐसी नहीं रहती।
(यह महातत्व है। जैसा राज वैसी ही भाषा होती है भाषा लोगों की सभ्यता की सूचक है। जब राज अन्याय पूर्ण हो, तो भाषा कैसे अच्छी रह सकती है)?

५ गुरुदेव ने कहा : भले आदमी सदा शुद्ध भाषा बोलते हैं पर शुद्ध भाषा बोलने वाले सदा भले आदमी नहीं होते।

नियमनिष्ठ आदमी निडर होते हैं पर सब निडर आदमी नियम वाले नहीं होते ।

६ नान कुंग को, ने एक बात पूछते पूछते कुङ्गमुनि से कहा । ई धनुर्विद्या में दक्ष था और नागो जमीन पर नाव खैंच सकता था । पर इन में से एक भी स्वाभाविक मौत से न मरा ।

यू और चेह अपने हाथों से खेती करते थे और वे चीन के महाराजा बन गए । कुङ्गमुनि यह सुन कर चुप हो रहे । जब वह चला गया तो बोले : यह महापुरुष है । यह वास्तव में धर्म का मोल जानता है ।

७ गुरुदेव बोले : ऐसे ऐसे महापुरुष होगए हैं जो सदा धर्मात्मा न थे (कभी कभी चूक जाते थे) पर ऐसा कोई नीच अब तक नहीं हुआ जो धर्मात्मा रहा हो ।

८ क्या ऐसा प्यार भी होसकता है जो कभी प्यारे के साथ क्रूरता से न वर्ते । ऐसी भक्ति भी होती है जो राजा को अनुमति न देवे ?

यदि प्रेम से कठोरता हटाली जाय तो बच्चे और जवान स्त्रियां, नौकर और अधिकारी वश से बाहर होजाते हैं । सिर पर चढ़ने लगते हैं ।

९ गुरुदेव ने कहा :

चिंग महावंश में राज की आज्ञाओं को पहिले पे शिन लिखता था । शेशू उस पर विचार कर के विवाद करता

था। चे यू जो अन्तर्राष्टीयमंत्री था उसको चमका देता था और अंत में चे चान उनमें नम्रता और सुन्दरता भरदेता था।

१० किसी ने चे चान के विषय में पूछा। गुरुदेव बोले : वह कृपालु आदमी था। किसी ने कांचन के विषय में पूछा। आपने कहा वह आदमी। वह आदमी ही था।
(यह अच्छा पुरुष न था। आपने तोभी बुरा नहीं कहा)
कान चुंग के विषय में उसने पूछा। मुनिराज बोले: पीन नामका नगर जिसमें ३०० वंश बसते थे, पीह से लेकर कान चुंग को दियागया। उसने ऐसा अच्छा प्रबंध किया, कि पीह को कुछ विरुद्ध कथन न करना पडा। दांतगिर गए। केवल रूखा भात खाकर रहा पर कभी बुड़ बुड़ाया नहीं।

११ गुरुदेव ने कहा :
दीन होकर विलाप करना कठिन बात है। धनी होकर अभिमान न करना सहज है।

१२ गुरुदेव ने कहा:
मांग कुंग चो किसी बड़े वंश में प्रबंधक होने के योग्य है। राजका मंत्री होने के योग्य नहीं।

१३ चेल्हने पूछा। पूर्ण मनुष्य में कौन कौन से गुण होने चाहिए!
गुरुदेव ने कहा: अनुमान करो कि किसी पुरुष में चंग

वू चांग का ज्ञान, कुंग चो की लोभ रहितता, च्वांग की वीरता, यन के से विद्या गुण और साथ ही राग विद्या और योग्यता हो तो वह पूर्ण पुरुष कहा सकता है।

आपने फिर कहा: आजकल के पूर्ण मनुष्य में इतने गुणों की क्या आवश्यकता है? वह मनुष्य जो लाभ का विचार करते समय सत्य को याद रखता है, भय के समय जीवन देने को उद्यत है और पुराने से पुराने प्रतिज्ञा पत्र को नहीं भूलता पूर्ण आदमी कहा जाना चाहिए।

(कुङ्गमुनि के समय चीन में स्वार्थपन आविद्या अनुदारता बहुत फैली हुई थी)

१४ गुरुदेव ने कुंग शू वान के विषय में कुंमिनके से पूछा: क्या यह बात ठीक है कि तुम्हारा स्वामी न बोलता है न हँसता है न कोई वस्तु लेता है? उसने कहा: यह बात नहीं है। मेरा स्वामी बोलने के समय बोलता है और लोग उसकी बातों से नहीं उकताते।

जब हँसने का अवसर हो तो हँसता है और लोग उसकी हँसी को बुरा नहीं मानते। वह दी हुई वस्तुओं को लेता है यदि भेट धर्म के अनुसार हों। गुरुदेवने कहा: हां ऐसी बात है! क्या वह ऐसा आदमी है।

१५ जब चंग वू चंग ने फांग देश पर अधिकार जमा लिया तो लुके राजा से अपना उत्तराधिकारी नियत करने को

कहा। यद्यपि लोग कहते हैं कि उसने स्वराज दृढ नहीं किया मैं समझता हूं कि उसने किया।

१६ गुरुदेव बोले: चिन का राजा वान कपटी था सदाचारी न था। चे का राजा ह्वान सदाचारी था कपटी न था।

१७ चेलूने कहा: राजा वान ने अपने भाई क्लू को मरवा डाला। उस समय उसका नौकर शावो हू भी अपने स्वामी के साथ प्राण अर्पण कर गया पर क्वान चुंग ने प्राण न दिए। क्या यह कहना ठीक है कि उसमें धर्म की न्यूनता रही?

गुरुदेव बोले: राजा ह्वान ने सब राजाओं को बुलाकर इकट्ठा किया। युद्ध और शस्त्रों के बल से नहीं केवल क्वान चुंग के प्रभावसे। ऐसा पुण्यवान् और कौन है? ऐसा पुण्यवान् और कौन है? (स्वामी के लिये प्राण दे देना मात्र ही केवल धर्म नहीं है। शेष जीवन को परोपकार में लगाना भी धर्म है)।

१८ चे कुंग ने कहा: मेरे विचार में तो क्वान चुंग में धर्म की कमी थी (जो स्वामी के साथ प्राण न दिए) वह तो ह्वान का प्रधान मंत्री बन गया।

गुरुदेव बोले। क्वान चुंग अपने स्वार्थ के लिए प्रधान मंत्री (अपने स्वामी के घातक का) न बना। उसने प्रधान मंत्री बन सब राजाओं की सभा की। राज को एक कर दिया। आपस के झगड़े मिटा कर देश को एक राज

बना दिया। धर्म संस्थापन कर दिया। आज दिन भी हम उसके परिश्रम का आनन्द भोग रहे हैं। यदि कान चुंग न हुआ होता तो अबभी हमारे बाल बिखरे होते और चोले की घुंडिया उल्टी ओर होतीं। (चीन के असभ्य लोग बाल बिखरे रखते थे और यह जंगली लोग चोले की घुंडियां बांई ओर लगाते थे)। क्या ऐसे महापुरुष से साधारण आदमियों के धर्म–नियम की आशा करते हो जो किसी नदी नाले में गिर कर आत्म हत्या करते हैं और जिनके नाम को कोई नहीं जानता ?

१९ मंत्री शीन जो कुंशहवान के वंश में उच्च पद पर था अपने स्वामी वान के साथ राजसभा में गया। जब कुङ्गमुनि ने यह बात सुनी तो बोले : हां ! वह वान ही समझना चाहिए।

२० गुरूदेव यह कह रहे थे कि राजा लिं कैसा नियम पर न चलने वाला पुरुष है। के कांग ने पूछा : जब वह ऐसे निर्बल आचार का आदमी है तो उसका सिंहासन क्यों नहीं नष्ट हो जाता ?

कुङ्गमुनि ने उत्तर दिया : विद्वान् यू उसके अतिथि विभाग का अधिपति है। तो सरीखा चतुर ज्ञानी उसका धर्माध्यक्ष है। वांग सुग के उसका सेनापति है। जहां ऐसे योग्य पुरुष हों वहां के राजा का सिंहासन कैसे जा सकता है।

२१ जो बिना संकोच बातें करता है वह अपनी बातें बिना कष्ट पूरी न कर सकेगा।

२२ चिन चिग ने चे के राजा को मार डाला। कुंगमुनि ने व्रत किया, स्नान कर के राजा गाऊ से कहा: चिन चिग ने अपने राजा का बध किया है आप उसे दण्ड दें। राजा गाऊ बोले: वहां के तीन बडे वंशजों को यह बात सुना दो। कुङ्गमुनि अपने मन में कहने लगे: मैं पूर्व प्रधान अधिकारियों के समान यह बात बिना कहे नहीं रह सकता था पर मेरे राजा कहते हैं वहां के वंशजों को यह बात सुना दो। उन्हों ने यह बात उन लोगों को सुना दी पर उन्होंने कुछ भी न किया। कुङ्गमुनि मन में कहने लगे: मैं यह बिना कहे नहीं रह सकता था।

२३ चे लू ने पूछा: राजा की सेवा किस प्रकार करनी चाहिए।
कुङ्गमुनि बोले: राजा को आज्ञा मत दो और उसका प्रतिरोध मत करो।

२४ गुरूदेव ने कहा: महापुरुष ऊपर की तरफ़ बढ़ता है नीच नीचे की ओर चलता है।

२५ प्राचीन काल में लोग अपनी उन्नति करने के निमित्त विद्या पढ़ते थे आज कल लोग अपने मान के लिए विद्या पढ़ते हैं।

२६ क्यू पी यू ने कुङ्गमुनि की कुशल क्षेम पूछने को दूत भेजा। मुनिराज ने उसे पास बिठाया और पूछा : इनदिनों आपका स्वामी किस काम काज में लगा है। उसने उत्तर दिया : मेरा स्वामी अपने आचरण के दोषों को कम करने में लगा है पर अभी तक उसे सफलता नहीं हुई। दूत चलागया तो आपबोले : ठीक दूत है। ठीक दूत है।

(एक वार यात्रा में कुङ्गमुनि क्यू पी यू के घर ठहरे थे और उसका मुनि से प्रेम होगया। स्वयंभी विद्वान् और धर्म-प्रेमी था)।

२७ जो मनुष्य किसी पद पर नहीं है, उसे उस पद के काम काज की बातों से क्या प्रयोजन ?

२८ ज्ञानी चांगने कहा है : महापुरुष अपने विचारों में अपने स्थान से बाहर नहीं जाता (अपने निज कर्तव्य और स्वधर्म के बाहर नहीं जाता)।

२९ महापुरुष बातें थोडी करता है और काम बडे बडे करताहै।

३० मुनिवर बोले :

महापुरुष का आचरण तीन प्रकार का होता है पर मैं अभीतक उसको प्राप्त नहीं कर सका। जो धर्मात्मा होता है इस कारण वह चिन्तारहित भी होता है जो बुद्धिमान् होता है वह घबराता नहीं है। जो साहसी होता है वह भय रहित भी होगा।

चे कुङ्ग ने कहा : महाराज ! यह सब गुण आपमें है ।

३१ चेकुङ्ग मनुष्यों की आपस में तुलना किया करता था। गुरुदेव बोले : चेकुङ्ग गुण में बढ चढ कर योग्यता पा चुका है। मुझे अभी तक दूसरों के गुण दोषों की तुलना करनेका अवकाश नहीं है।

३२ गुरुदेव बोले : मुझे इसबात की चिन्ता नहीं है कि लोग मुझे नहीं जानते, पर हां यह चिन्ता है कि मेरी योग्यता कम न रहे ।

३३ गुरुदेव ने कहा :
जो मनुष्य उन उपायों को जो उसे धोखा देने को किए जाते हैं पहिले से नहीं समझ जाता, और पहिले से यह नहीं जान लेता कि दूसरे उसका विश्वास नहीं करते और धोका खा कर चिन्ता में पड जाता है तो ऐसा मनुष्य बडी योग्यता वाला नहीं है ।

३४ वे शंग मो कुङ्गमुनि का आधा नाम ले कर बोला : तुम क्यों मारे मारे फिरते हो । क्या तुम चाटुकारी की बातें करने वाले हो ?
मुनिराज ने उत्तर दिया : मैं ऐसा वाकपटु होने का साहस नहीं कर सकता पर मुझे दुराग्रह से घृणा है ।
(शे वांग मो एक वृद्ध पुरुष था और अपने आप को बड़ा चतुर समझता था। ऐसे असभ्य प्रश्न का उत्तर मुनिराज ने कैसी शान्ति से दिया है)।

३५ गुरुदेव बोले : चीनी भाषा में अश्व को की कहते हैं। शारीरिक बल ही कोई विशेष प्रशंसा की वस्तु नहीं है।

३६ किसी शिष्यने पूछा महाराज। एक यह सिद्धान्त है कि बुराई के बदले में भलाई करनी चाहिए। आप इस विषय में क्या उपदेश करते हैं? गुरुदेव ने कहा : जो बुराई के बदले में भलाई करोगे तो यह कहो कि दया के बदले में क्या करोगे?

जो तुह्मारी हानि करे उसके साथ न्याय करो और दया के बदले में दया।

(कुङ्गमुनि का उपदेश राजाओं, संसारी पुरुषों के लिए है, सन्यासियों के लिए नहीं। संसार में हानि के स्थान में न्याय ही ठीक है। राजा का धर्म यह नहीं है कि सब चोर, दुष्ट लुटेरों के साथ दया करें। ईसाई लोगों का सिद्धान्त कि जो तुह्मारे बांए गाल पर चपत मारे तो दांया गाल भी उसकी ओर फेर दो केवल कहने मात्र को है। पोप ने कभी ऐसा नहीं किया। यूरप के सात भीषण युद्ध जो ईसाइयत के नाम पर, तुर्कों के साथ किए गए सब को याद हैं)।

३७ गुरुदेव ने कहा : हा शोक! मुझे कोईभी नहीं जानता (सदा धर्म पालन करते हुए दूसरों के परोपकार के अर्थ

उपदेश में जीवन बिताते हुए भी कुङ्गमुनि कष्ट में रहे। कभी विश्राम न मिला।

आप कहा करते थे कि केवल ईश्वर मुझे जानता है और यही मुझे बस है)।

चेकुङ्गने पूछा : महाराज ! इसका क्या अर्थ है कि " मुझे कोई भी नहीं जानता "

मुनिराजने उत्तर दिया : न मुझे आदमियों की निन्दा करना है न ईश्वर से प्रार्थना। मेरी विद्या अपूर्ण है और ज्ञान–जिज्ञासा भारी है। पर हां ईश्वर है और वह मुझे देखता है।

३८ कुंगपी ने के सुन से चेलू की घोर निन्दाकी। जेफू ने कुङ्गमुनि से यह बात कही और बोला : कुंगपी हमारे गुरुदेव को सत्मार्ग से पदभ्रष्ट करता है। मुझ में इतनी शक्ति है कि उसका सिर काटकर उसका शरीर चौहट्टा में फैक दूं।

गुरुदेव बोले : यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो मेरे सिद्धान्तों का प्रचार हो जायगा और उसको इच्छा न हुई तो प्रचार न होगा। उसकी इच्छा में किसी का प्रवेश नहीं है।

(कुंङ्गमुनि ने गीता का सिद्धान्त कह दिया। कर्म करने में मेरा अधिकार है फल देना ईश्वर के हाथ में है)।

३९ गुरुदेव बोले : कुछ धार्मिक लोग संसार त्यागी बन जाते हैं। कुछ केवल एक देश का त्याग करते हैं। कुछ

अनादर देख कर त्यागी बनते हैं। कुछ लोग अपने विरुद्ध सुनने का सामथ्य न रख कर त्यागी हो जाते हैं।

४० सात पुरुप अब तक त्यागो बन चुके हैं।

४१ चेल् एक रात्रि शी मुन नामक नगर में ठहरा। द्वार पाल ने पूछा : किसके पास से आए हो ? चेल् ने कहा : कुङ्गमुनि के पास से। "हां ! हां !! वही तो कुङ्गमुनि हैं कि जो जानते हैं कि इस समय उनका उपदेश कोई ग्रहण न करेगा फिरभी उपदेश में लगे हुए हैं।" द्वारपाल ने कहा।

४२ एक बार कुङ्गमुनि पत्थर के बाजे को बजा रहे थे। उधर से टोकरा लिए एक आदमी आया और कहने लगा : जो बाजे को ऐसे बजाता है उसका मन भरा हुआ होना चाहिए।

कुछ देर पीछे उसने फिर कहा : इन स्वरों में एक हो ताल है वह भी अच्छा नहीं। जब कोई यह देखे कि लोग मेरी नहीं सुनते तो सबसे उपेक्षा कर लेना ठीक है। गहरी नदी में कपडे पहिने हुए उतरना होता है और छोटी को कपड़े उतार कर पार करते हैं।

गुरुदेव बोले : यह आदमी अपने स्वार्थ में कैसा दृढ़ है। पर यह कठिन बात नहीं है।

४३ चे चांग ने कहा । शृके इस कथन का क्या भाव है ? महाराजा की मृत्यु का शोक करते हुए को चुंग तीन वर्ष तक चुप चाप रहा ।
गुरुदेव ने कहा : को चुंग ही नही परंच प्राचीन काल में यह प्रथा थी ।
महाराजा की मृत्यु पर प्रायः लोग तीन वर्ष तक प्रधान मंत्री की अनुमति लेते थे ।

४४ जब राजा धर्म-प्रिय होता है तो लोग प्रसन्नता पूर्वक सेवा को उद्यत रहते हैं ।

४५ चेल्ह ने पूछा : महाराज ! महापुरुष के लक्षण क्या है ? गुरुदेव बोले : महापुरुष आदर पूर्वक दूसरों के सुख का ध्यान रखता है । चेल्ह बोला : बस यही और कुछ नहीं ? मुनिराज ने उत्तर दिया : महापुरुष दूसरों में सुख देने का स्वभाव डालता है । वह मनुष्य मात्र के सुख का यान रखता है । यो और शुन भी इसी सिद्धान्त पर सदा चलते थे ।

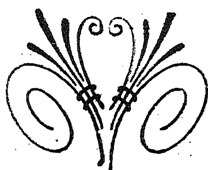
४६ यूइन जंग असभ्यता से बैठा हुआ गुरुदेव की प्रतीक्षा कर रहा था । आप ने कहा : जो जवानी में अपने से बड़ों का आदर नहीं करता, बडा हो कर कोई ऐसा पदार्थ अथवा विद्या नहीं छोड़ जाता जिस से औरों का भला हो और फिर भी बुढ़ापे तक बना रहता है ऐसा

आदमी महा मारी का रूप ही है। (यह पुरुष वृद्ध था और लाऊ का शिष्य बन कर शिष्टाचार भूल गया था)।

४७ क्यूचि नामक ग्राम का एक लड़का कुङ्गमुनि का नौकर था। वह मुनि के दर्शक लोगों के पास संदेशा और चिट्ठी पत्री ले जाया करता था।

किसी ने उसके विषय में पूछा : मैं विचार करता हूं कि इस बालक ने बड़ी उन्नति कर ली होगी।

गुरुदेव ने कहा : मैंने देखा है कि यह बालक बड़ों के आसन पर चाव से बैठता है और अपने से बड़ों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलता है। इसे विद्या में उन्नति करने का ध्यान नहीं है। यह तो शीघ्र बड़ा आदमी बनना चाहता है।



अध्याय १८

१ वे के राजा लिं ने कुङ्गमुनि से युद्ध विद्या के प्रश्न किए। आपने कहा : हे राजन् ! मैंने यज्ञ के विषय में ज्ञान प्राप्त किया है। युद्ध विद्या मैं कुछ नहीं जानता। दूसरे दिन उसके राज से चले गए।

(कुङ्गमुनि युद्ध को अनावश्यक, पाशविक और अधर्म कहा करते थे। मुनिका काम लोगों में शान्ति प्रचार करना है। यह राजा मूर्ख था जो मुनि से भी युद्ध की बातें पूछता था)।

जब मुनिराज चीन राज में थे तो खाने पीने को कुछ भी पास न रहा और शिष्य ऐसे रोगी हो गए कि उठ भी न सकते थे।

चेल घबरा गया और कहने लगा : क्या महापुरुष को ऐसा संकट भी भोगना पडता है।

गुरुदेव बोले : हां महापुरुष को कभी कभी दरिद्रता भी भोगनी पडती है पर नीच पुरुष निर्धनों में धर्म को भूल कर अमर्य्यादित बन जाता है।

२ गुरुदेव बोले : हे चे ! मेरा विचार है कि तुम यह समझते हो कि मैं बहुतसी बातें सीखकर उनको स्मरण कर लेता हूं। चेकुङ्ग ने कहा : हां महाराज ! क्या यह बात नहीं है ? मुनिराज ने कहा : नहीं ! मैं सब में सर्व व्यापी समता को खोजता हूं।

(यह परम महत्त्वका कथन है। गुरुदेव मस्तिष्क में विद्या को भरना अपना कर्तव्य नहीं मानते थे। विद्या द्वारा उस ज्ञान को प्राप्त करना चाहते थे जिससे सब जगत् में व्यापक एक सत्य का अनुभव हो जाय। द्वैत का भ्रम दूर हो और सब पदार्थों में स्थित एक ही सत्य देव ईश्वर को देख लें। लोगों को रिझाने अथवा यश प्राप्त करने का धन लाभ के लिए विद्या संग्रह करना मानो चिंतामणि को भुने चने प्राप्त करने के अर्थ खोजना है। उपनिषद, गीता, कुरान आदि का वही सिद्धान्त है जो कुङ्गमुनि का)।

३ गुरुदेव बोले : हे यू ! धर्म को जानने वाले कम हैं। (कुङ्गमुनिका सिद्धान्त है कि धर्म पर चलने से सुख प्राप्त होता है और धर्म को जानना मोक्ष को पाना है)।

४ मुनिराज ने कहा : महाराजा शुन विना शारीरिक श्रम के निपुणता से राज करते थे। वह क्या किया करते थे? महाराजा शुन गम्भीरता और आदर पूर्वक सिंहासन पर विराजे रहते थे।

(महाराज शुन ईसा मसीह से २६०० वर्ष पहिले चीन के महाराजा थे। बाल्यपन में किसानी करते थे। बाप अंधा और माता सौतेली थी। माता और सौतेले भाइयों का द्वेष दिन दिन उठाते थे। सारा दिन खेत में काम कर घर आते तो माता मारती, खाना बचा कुचा

फैंक कर देती। एक वार भाईने कूप में फैंक दिया था। पर शुन एक बार भी क्रोधित न हुए। सदा शान्त और अहिंसा में स्थित रहे। जब महाराजा यावो को सूचना मिली तो इनकी शांति और अहिंसा-प्रेम देखकर अपने साथ ले आए। इनको योग्य देख अपनी कन्या शुन को विवाह दी और निज पुत्र को अयोग्य जान राज्य भी शुन को देगए। महाराज शुन चीन में आदर्श होगए हैं। ९० वर्ष राज किया और पूर्ण धर्मात्मा हुए। इनके मंत्री चतुर और धर्मज्ञ थे। सारी आयु और धन महाराजा शुन ने प्रजा की भलाई में लगाया)।

९ चे चांग ने पूछा महाराज ! मनुष्य किस प्रकार संसार में ऐसा रहे कि सबलोग उसका मान करें ?

गुरुदेव बोले : जोकुछ कहे वह सच्च और निष्कपट हो और जो कुछ करे वह सुशीलता और सावधानी से करे। ऐसे आचार का अभ्यास उत्तर और दक्षिण के योद्धा लोगों में जाकर करे। यदि किसी की बात सच्ची और निष्कपट नहीं हैं तो उसके पास पड़ोसी भी उसको अच्छा न समझेंगे। जब खड़ा हो तो समझे कि सच्चाई और निष्कपटता उसके सामने है। जब रथ में बैठा हो तो देखे कि यह गुण उसकी सवारी में जुते हैं। फिर इन पर चले।

चे चांग ने अपनी चौखट पर यह बातें लिख रक्खी थीं।

६ गुरुदेव बोले :

ऐतिहासिक यू वास्तव में खरा आदमी था। जब शासन अच्छा होता तो सीधे तीर के समान रहता और जब शासन बुरा होता तो भी सीधे तीर के समान रहता।

के पी यू वास्तव में महापुरुष है। जब राज में शासन अच्छा होता है तो अधिकारी बनजाता है। जब शासन बुरा होता है तो अपने धर्म—नियमों को समेट छाती के भीतर रख एक ओर होजाता है।

७ जबकिसी आदमी से बात करना जरूरी हो उससे न बोलना उसके साथ भूल करना है। जिससे न बोलना हो उससे बात करना अपने शब्दोंको मिथ्या करना है। बुद्धिमान् न तो आदमी के साथ और न अपने शब्दों का विरोध करता है।

८ पक्के मन वाला विद्वान् और धर्मात्मा कभी भी अपने धर्म के विरुद्ध न चलेगा। भूखा मर जायगा पर धर्म को हाथ से न देगा।

९ चे कुंग ने पूछा : धर्मचर्य्या की विधि कहिए। कुङ्गमुनि बोले : जो लुहार अपना काम ठीक करना चाहता है वह शस्त्रों को पैना बना लेता है। जब तुम किसी राज में रहो तो वहां के सबसे योग्य अधिकारी के नीचे सेवा करो और वहां के बड़े सेबड़े धर्मात्मा विद्वान् से मित्रता करो।

१० यन यूइन ने पूछा : महाराज ! देश का शासन किस प्रकार करना चाहिए।

गुरुदेव बोले : ही राज वंश की रीति पर चलो। यन के राज मार्ग पर चलो। चाव के समय का बाना पहिनो। शाव के समय की राग विद्या लो। चिंग के समय के रागजो विषय वासना पूर्ण हैं निकाल बाहर करो। कपोल कल्पना वालों की मत सुनो।

(चीन में ज्योतिषशास्त्र ने खूब उन्नति की थी। शादी, गमी, यात्रा सब लग्न देख कर होती थीं। ऊपर·यह कहा है कि एक लकीर के फकीर मत बनो। जो बात जहां अच्छी हो उसे ले लो। महाराजा यन का रथ सोने चांदी का न था, भाव यह है कि राजा या अफसर अपने ऊपर धन उतनाही खर्च करे जितना ज़रूरी हो)।

११ जो आदमी दूर की बातों को भूल जाता है शोक को अपने नज़दीक पावेगा।

१२ बस ! बस ! ऐसा कोई न देखा जो धर्म (पुण्य) को उतना प्रेम करे जितना सुन्दरता को।

१३ गुरुदेवबोले : क्या चांग वान ऐसा न दीखता था मानो उसने अपना पद चुरा लिया हो। वह ह्वे के धर्म और योग्यता को खूब जानता था। तो भी उसके सामने दर्बार में खड़ा न हुआ।

(ईर्षा बुरी बात है। चांग ह्वे को योग्य जान कर भी उसकी अभिशंसा न कर सका)।

१४ गुरुदेव ने कहा : जो पुरुष अपने से बहुत कुछ आशा करता है और दूसरों से बहुत न्यून वह दूसरों के आगे बुरा न बनेगा।

१५ जिस पुरुष में यह कहने का स्वभाव नहीं है : "यह क्यों है ? कैसे है ?" वह मेरे किसी काम का नहीं है।

१६ गुरुदेव बोले : यदि कुछ लोग दिनभर साथ साथ रह कर एक बार भी सत्य, पुण्य, धर्म की बात चीत न करें और छोटी छोटी कलह की बातों पर उतर आवें तो वे व्यर्थ लोग हैं।

१७ गुरुदेव ने कहा : महापुरुष प्रत्येक बात में, प्रत्येक काम में भलाई, न्याय, धर्म को अत्यावश्यक समझता है। वह जो कुछ करता है सभ्यता के नियमानुसार करता है। अपने किए काम को आधीनता के साथ औरों को दिखाता है। अपने काम को निष्कपटता से पूरा करता है। हां ! ऐसा पुरुष सचमुच महापुरुष है।

१८ महा पुरुष को अपनी अयोग्यता पर दुःख होता है। इस बात का दुःख नहीं होता कि लोग मुझे नहीं जानते।

१९ महापुरुष नहीं चाहता कि उसकी मृत्यु के पीछे लोग उसका नाम भलाई से न लें।

२० महापुरुष जो कुछ चाहता है अपने में खोजता है। नीच पुरुष दूसरों में खोजते हैं। (पुण्य, धर्म, न्याय अपने अन्दर देखने चाहिए। दूसरों में इनकी खोज व्यर्थ है)।

२१ महापुरुष योग्य होता है पर झगड़ा नहीं करता। मिलनसार होता है पर पक्षपाती नहीं।

२२ महापुरुष किसी की बातें सुन कर उसकी उन्नति नहीं करता और न आदमी के पक्षमें भले शब्दों को एक तरफ रख देता है।

२३ चे कुंग ने पूछा : महाराज ! क्या कोई ऐसा एक शब्द है जिस में सदाचार का सार आ जाय। गुरुदेव ने कहाः हां ! "परस्पर प्रेम अर्थात् जो कुछ तुम अपने लिए किया जाना नहीं चाहते वह दूसरों के साथ मत करो।"

२४ गुरुदेव ने कहा :

मैं अपने लेख में और भाषण में लोगों के चरित्र को खूब विचार कर उनकी भलाई या बुराई करता हूं।

प्राचीन तीन महाराजाओं (यो, शुन, यू) ने यह भलाई के नियम बनाए हैं।

२५ मेरे बालकपन में ऐसे आदमी थे जो इतिहास लिखते समय खाली स्थान छोड़ देते थे (बिना समझे किसी की भलाई या बुराई न लिखते। अपना घोड़ा दूसरों से फिरवा लेते थे)।

२६ लम्बी लम्बी बातें पुण्य में विघ्न डालती हैं। छोटी छोटी बातों में अक्षमा बडे बडे उपायों को बिगाड कर देती है।

२७ गुरुदेव बोले : यदि आदमियों का समूह किसी को घृणा करे तो उस विषय में जांच न करनी चाहिए। जब कोई समूह किसी को अच्छा कहे तो भी जांच करनी चाहिए। (किसी आदमी की बुराई और भलाई का निर्णय इस बात से नहीं करना चाहिए कि बहुत लोग उसे चाहते हैं या घृणा करते हैं)।

२८ आदमी धर्म की वृद्धि कर सकता है पर धर्म बिना किए आदमी की वृद्धि नहीं कर सकता।

२९ दोष होना इसको कहते हैं कि आदमी दोषों को देख ले और फिर भी उनका सुधार न करे।

३० न मैंने दिनभर भोजन किया है न रात को सोया हूं। सोच विचार में मग्न रहा हूं। यह सब व्यर्थ है। सोचने से सीखना अच्छा है।

३१ गुरुदेव ने कहा : महापुरुष का लक्ष सत है। भोजन उसका लक्ष नहीं। कभी कभी हल जोतने पर भी फ़सल नहीं होती। विद्या आप ही अपना प्रसाद है। महापुरुष को सत प्राप्ति की चिन्ता रहती है। उसको निर्धनता की परवाह नहीं होती।

३२ यदि विद्या द्वारा कोई पदार्थ प्राप्त कर लिया और साथ ही साथ नेकी (धर्म) न हो तो वह पदार्थ खोया जायगा। यदि किसी राजा या अधिकारी में विद्या तो है और धर्म नहीं है तो वह ठीक ठीक हुकूमत न कर सकेगा और लोग उसका आदर भी न करेंगें।

यदि किसी में विद्या, धर्म और तेज है पर वह राज काज में लोगों से यथा योग्य नहीं बरतता तोभी वह सफल न होगा।

३३ महापुरुष छोटी छोटी बातों से नहीं पहिचाना जाता। उसको बड़े बड़े काम देने चाहिएं। लघुआत्मा को बड़े बड़े काम सुपुर्द करने की जरुरत नहीं वह छोटी छोटी बातों से पहिचाना जाता है।

३४ गुरुदेव बोले :

मनुष्य को धर्म की आवश्यकता आग और पानी से भी अधिक है। आग और पानी पर चलते आदमियों को मैंने मरते देखा है पर धर्म पर चलने वाले को कभी मरते नहीं देखा।

३५ अपने काम काज में देखो कि तुह्मारा धर्म क्या है। दूसरों का धर्म मत देखो। अपने गुरु की बात भी मत मानो यदि वह धर्म विरुद्ध हो।

३६ महापुरुष केवल दृढ़ ही नहीं होता परंतु ठीक बात पर दृढ़ होता है।

३७ मंत्री को राजा की सेवा वेतन का ध्यान छोड़ कर करनी चाहिए।

३८ यदि लोगों को विद्या ठीक रीति पर दी जाय तो ऊंच नीच वर्ग न रहेंगे।

३९ गुरुदेव ने कहा :

जिन लोगों के आपस के मार्ग भिन्न हैं वह एक दूसरे को अनुमति नहीं दे सकते।

४० भाषा का यही मतलब है कि बोलने वाले के मन का भाव प्रगट हो जाय।

४१ राग विद्या का आचार्य्य मीन गुरुदेव से मिलने आया। जब गुरुदेव और वह सीढ़ियों पर आए तो गुरुदेव ने कहा : देखिए सीढ़ी हैं। जब वह अतिथि—आसन पर आए तो आपने कहा : यह आसन है। जब सब लोग बैठगए तो गुरुदेव ने उनसे औरों का परिचय कराया। जब वह चलागया तो चे चांग ने पूछा : महाराज! क्या यह नियम है कि अतिथि को यह बातें बतलाई जांय। मुनिराज बोले : अतिथि अंधा हो तो ऐसा ही करना चाहिए।



अध्याय १६

१ की वंशका सरदार च्यून वू पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहाथा। यन यू और केल्ह ने कुङ्गमुनि से इस विषय में बात चीत की और कहा : हमारा सरदार च्यून वू पर आक्रमण करने वाला है। कुङ्गमुनि ने कहा : इसमें तुम्हारा अपराध नहीं है। तुम्हारा सरदार महाराजा के आधीन है। छोटा सरदार है और च्यून वू का राजा महाराजा का दरबारी है। तुम्हारा सरदार क्यों उस पर आक्रमण करता है ?

यन यू बोला : हमारे सरदार ने यह ठानली है। हम दोनों मंत्रियों में से कोई भी यह नहीं चाहता कि च्यन वू से युद्ध हो।

कुङ्गमुनि बोले : सुनो भाई ! चावजिन का कथन है जब तक कोई अधिकारी योग्यता से काम कर सके अपने पद पर रहे और जब अधर्म को न रोक सके तो पद त्याग दे वह पुरुष अन्धे आदमी का पथ दर्शक नहीं हो सकता जो उसको गिरने से न बचा सके और गिर पड़ने पर न उठा सके। विचार कर देखो। कोई व्याघ्र या जंगली सांड पिंजरे से भाग निकले या कच्छप घर में चोट खा जाय तो किसका अपराध है।

यन यू फिर कहने लगा : महाराज बात यह है कि इन दिनों च्यन वू बलशाली है और पे के निकट है और

हमारा सरदार अब इस राज को न ले तो फिर उसके बच्चे उसे कोसेंगे (वह हमारा राज ले लेगा)।

कुङ्गमुनि बोले : देखो क्यू ! महापुरुष ऐसा कहने में कि मैं यह चाहता हूं लज्जा और घृणा होती है और अपने आचरण पर टीका टिप्पण करना भी बुरा समझता है।

मैंने सुना है कि राजाओं और रईसों को इस बात की परवा नहीं होती कि हमारी प्रजा संख्या में न्यून है। उनको यह चिन्ता रहती है कि वह अपना धर्म पालन कर पद पर बने रहें। उनको ग़रीबी का भय नहीं रहता पर इसबात का भय रहता है कि ऐसा न हो कि उनकी प्रजा संतुष्ट और आराम से शांति में रहे। जब लोग शांति और आराम से अपने अपने काम में लगे रहें तो ग़रीबी न आवेगी। जब देश में शान्ति रहेगी तो प्रजा की कमी न रहगी और जब प्रजा संतुष्ट होगी तो राजद्रोह कभी न होगा। तुम याद रक्खो जब कभी दूर के लोग आज्ञावर्ती न हों तो नेकी, धर्म, विद्या, कला कौशल की उन्नति करके उनको रिझाना चाहिए।

तुम राजा के मंत्री हो। तुम्हारे राज में दूर के लोग आज्ञावर्ती नहीं हैं और तुम उनको नहीं आकर्षण कर सकते। तुहारे राज में शान्ति नहीं है। लोग आपस में मिलते हैं और फिर जुदा हो जाते हैं, झगड़े हर जगह हो रहे हैं और तुम अपने प्रयत्न से प्रबंध नहीं कर सकते। फिर भी तुम दूसरों के राज्य पर आक्रमण करना चाहते हो।

देखलो ऐसा करने से तुह्मारे सरदार को दुःख भोगना पड़ेगा।

२ अच्छे शासन का प्रयोजन है कि सब राजा महाराजा की आज्ञा पर चलें और बुरे शासन में प्रत्येक राजा अपने मन की बात पर चलता है। जब ऐसी दशा हो तो जान लो कि दस वंशों के भीतर राज नष्ट होजायगा।

बड़े अधिकारी के हाथ में शासन का होना बताता है कि ठीक राज नहीं हो रहा। जब राज में धर्मानुसार शासन होता है तो प्रजा आपस में विवाद नहीं करती।

३ कुङ्गमुनि ने कहा: देश का कर पांच वंशों से राजा के कोष में नहीं गया। राजकाज बड़े अधिकारी के हाथ में है जो राजा को कुछ नहीं समझते। इसी कारण आज दरिद्रता चारों ओर फैल रही है।

(मसीह से ६०८ साल पूर्व वान का राजा मार गया और एक दासी पुत्र को गद्दी पर बिठा अधिकारी मुल्क को लूट खसोटने लगे। यह उसी समय का वर्णन है)।

४ कुङ्गमुनि बोले: तीन प्रकार की मित्रता लाभ दायक होती है और तीन ही प्रकार की मित्रता हानिकारक होती है। सुनो! सदाचारी की मित्रता, निष्कपट की मित्रता, और जिसने संसार देखा है उसकी मित्रता। यह तीनों लाभ दायक हैं।

बात बात में अपने को बड़ा जताने वाले की मित्रता, मीठी मीठी बातें बना कर दिल में घर करने वाले की मित्रता और गप्पाष्टकी की मित्रता हानि करती है।

५ कुङ्गमुनि बोले : तीन प्रकार का आनन्द लाभ दायक होता है और तीन ही प्रकार का कष्ट दायक होता है :। शास्त्रोक्त कर्म और रागों के विवेक युक्त अध्ययन में आनन्द, दूसरों की भलाई के वर्णन में आनन्द, अनेक भले और विद्वान् मित्रों की संगत का आनन्द, यह तीन आनन्द लाभ दायक होते हैं। अपव्यय की रुचि में आनन्द, आलस और व्यर्थ फिरने में आनन्द, भोज निमंत्रण देने और खाने में आनन्द, यह तीन कष्ट दायक होते हैं।

६ भले और बड़े आदमी के सामने लोग तीन प्रकार को भूल कर जाते हैं: जब बोलने की जरूरत न हो तो भी बोलना इस का नाम उतावलापन है। जब बोलने की जरूरत हो उस वक्त चुप रहना, इसकानाम भेद छिपाना है। बड़े आदमी के मुख की तरफ न देख कर बोलना इसको अंधा पन कहते हैं।

७ महापुरुष तीन कामों से बचता है: जवानी में जब शारीरिक बल नहीं पका तब काम लोलुपता से। जब शरीर में बल बढा हो तो लड़ाई झगडे से। जब वृद्धावस्था में बल नष्ट हो गया हो तो लोभ से।

८ कुङ्गमुनि बोले : महापुरुष तीन बातों से दबता है: ईश्वर की आज्ञा से। महात्माओं से, मुनिके वाक्यों से।
वह आदमी जो ईश्वर की आज्ञा को नहीं जानता वह उसका भयभी नहीं करता। वह महात्माओं के साथ अविवेक करता है और मुनियों के वाक्य पर हंसता है।

९ जो ज्ञान को लेकर जन्मते हैं वह परम श्रेष्ट पुरुष हैं। उनसे नीचे वे हैं जो विद्या पढ कर शीघ्र ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। तीसरे वर्ग के वे लोग हैं जो मंद बुद्धि हैं पर यत्न से ज्ञान प्राप्त करते हैं, और जो मंद बुद्धि आलसी होकर फिरभी यत्न नहीं करते वे सबसे नीच हैं।

१० महापुरुष नौ बातों का विचार करता है: आंखों से साफ साफ देखता है। कानों से साफ साफ सुनने की चिन्ता में रहता है। चहरे से भलामानसकी परख होती है, व्यवहार में सुशील दीखता है, बोल चाल में निष्कपटता का ध्यान रखता है। अपने व्यवहार का काज सावधानी और मान के विचार से करता है। जिस बात में संदेह हो उसे दूसरों से पूछता है, जब क्रोध आजाय तो यह सोचता है कि क्रोध उसे किन किन कष्टों में डाल देगा। जब रुपए पैसे का लाभ हो तो सोचता है कि यह धर्म के विरुद्ध तो नहीं।

११ मैंने ऐसे आदमी न्यून देखे हैं जो धर्मका ध्यान रखते हुए उत्पर पर यह विचार कर लगातार चलते जांय कि

इसकी प्राप्ति कठिन है, और अधर्म का विचार कर उससे इतना भय करें जितना खौलते हुए गरम पानी में हाथ डालने से।

एकान्त में रह कर अपने कर्तव्यका विचार करने वाले और कर्तव्य पालन में धर्मको न भूलने वाले मैंने इन दिनों नहीं देखे।

१२ चे के राज के यहां चार सहस्र अश्व थे पर जब वह मरा तो लोगों ने उसकी एक बात (नेकी) की भी तारीफ न की। पीह ई और शुत्से भूखे मर गए पर लोग आज तक उनकी नेकी के राग गाते हैं।

१३ चिनकांगने पीह यू (कुङ्गमुनिका पुत्र) से पूछाः क्या तुमने अपने पिताजी से उस शिक्षाके अतिरिक्त जो हम सबको मिली है कुछ और भी सुना है ? पीह यू ने कहाः नहीं ! एक बार पिताजी अकेले खड़े थे और मैं नीचे की तरफ जल्दी जल्दी पैर बढ़ाता निकल चला। पिताजीने पूछाः क्या तुमने प्राचीन काव्य विचारा है ? यदि तुमने प्राचीन काव्य का विचार नहीं किया है तो तुम बात चीत करने के योग्य न बनोगे। मैं चला गया और उस काव्य को ध्यान से पढ़ने लगा।

एक बार फिर मैं जल्दी जल्दी चलता निकला और मुनिराज भी अकेले खड़े थे। मुझसे पूछने लगेः क्या तुमने शिष्टता के नियम विचार लिए हैं। मैंने कहाः अभी नहीं। आपने कहाः यदि यथायोग्यता के नियम नहीं

विचारोगे तो तुम्हारा चाल चलन पक्का न होगा। मैं चला गया और उक्त नियमों को विचारने लगा, बस मैंने यही दो बातें उनसे सुनी हैं।

चिन कांग यह सुन प्रसन्न होकर चलागया और मनमें कहने लगा मैंने एक बात पूछीथी और तीन बातें ज्ञात होगई। मैंने काव्य के विषय में सुना है और यथायोग्यता के नियमों की चर्चा भी सुनी है, और मैंने यह भी सुनलिया कि महापुरुष अपने पुत्र को भी उदासीनता से देखता है।

१४ राजा की पत्नी राजा द्वारा फूजिन कही जाती है। (फूजिन का अर्थ है सहायक) रानी अपने आपको सियावो टुंग कहती है (छोटी बालिका) प्रजा गण उसको क्यू फूजिन कहते हैं (महल की स्वामिनी)। (चीनी में ' पत्नी का अर्थ है ' अपनी बराबरी की स्त्री। चीन में बड़ी बड़ी विदुषी, राज कुशला, वीरांगना नारियां हुई हैं। चीनी इतिहास इनके पातिव्रत धर्म, धर्म-प्रेम और, आत्मसमर्पण से भरा हुआ है। महाराजा कांङ्गसी के कोष में २४०० महास्त्रियों का वर्णन है। चीन की गलियों में पतिव्रता स्त्रियों के चरित्र गाए जाते हैं। जनरल मा फील की माता ने १४ वर्ष की आयु में अपने पुत्र की कमर पर स्याही से लिख दिया था : " तुम को देश सेवा के अर्पण किया)।

अध्याय १७

१ यांग हो कुङ्गमुनि से मिलना चाहता था पर मुनि उसके यहां नहीं गए। उसने एक शूकर मुनि के घर भेट भेजा। मुनि ऐसा समय विचार कर जब वह घर न हो उसको धन्यवाद देने गये। वह मुनि को मार्ग में मिल गया। हो ने कुङ्गमुनि से कहा : पधारिये ! मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं। फिर वह कहने लगाः क्या उस पुरुष को परोपकारी कह सकते हैं जो अपने रत्नोंको अपनी छाती में छिपा रक्खे और अपने देश को अशान्ति में रहने दे ?

कुङ्गमुनि ने कहा : नहीं।

उसने फिर पूछा : क्या वह मनुष्य जो पर हित के लिए राज में पद खोजा करे और मिलने पर पद न ले बुद्धिमान् कहा सकता है ?

कुङ्गमुनि ने कहा : नहीं।

उसने कहा : दिन और रात बीत जाते हैं। समय हमारे लिये नहीं ठहरता।

कुंगमुनि बोले : ठीक ! मैं पद स्वीकार करूंगा।

(यांग यू के का मंत्री था। अपना प्रभाव चाहता था प्रजा का हित नहीं, धर्म–प्रेमी न था)।

२ गुरुदेव बोले:
सब मनुष्यों की प्रकृति एक सी ही है। भेद केवल स्वभाव का है।

३ प्रथम श्रेणी के बुद्धिमान् और वीर मूर्ख नहीं बदल सकते (और सब-प्रकार के पुरुष बदलते हैं)।

४ गुरुदेव वू शिंग नामक रियासत में आए और वहां तारों वाले बाजे सुने और गान सुना। प्रसन्न होकर मुसकराते हुए कहने लगे: चिड़िया मारने को बैल मारने के चाकूकी जरूरत नहीं है।
चे यू ने कहा: गुरुदेव! आपने एक बार उपदेश किया था कि यदि ऊंचे दर्जे के आदमी को सतविद्या मिले तो वह मनुष्यों से प्रेम करता है और कम दर्जे के आदमी को विद्या प्राप्त हो तो वह आसानी से आधीनता स्वीकार करता है। गुरुदेव बोले यह बात ठीक है।

५ कुंग शा फूजोने द्रोह कर पे पर अधिकार जमा लिया और कुङ्गमुनि को राज सेवा के लिए बुलाया। आपने जानेकी इच्छा प्रकट की।
चे ल्द नाराज होकर बोला: आपकी उस द्रोही के यहां जाने की क्या जरूरत है?
गुरुदेव बोले: कोई बात ही तो है जो उसने मुझे बुलाया है। यदि मुझे कोई रईस नौकरी दे तो मैं रियासत को आदर्श बनादूं। (कुङ्गमुनि नहीं गए)।

६ चे चांग ने पूर्ण धर्म के विषय में प्रश्न किया। गुरुदेवने उत्तर दिया। इन पांच बातों पर चल सकने की सब स्थानों पर योग्यता रखने का नाम पूर्ण धर्म है:
गम्भीरता, उदारता, निष्कपटता, उद्योग और दया।
यदि गम्भीर रहोगे तो तुह्मारा अपमान न होगा। यदि उदार रहोगे तो सब लोग तुह्मारे बन जाएंगे। यदि निष्कपट होवोगे तो सब तुह्मारा विश्वास करेंगे। पुरुषार्थी बन कर तुम जो चाहो सो प्राप्त कर सकोगे। दयावान बनोगे तो और लोग रुचिसे सेवा करेंगे।

७ पीह ह्वी ने कुंगमुनि को निमंत्रण भेजा। आप जाने को राज़ी होगए।

चेल्हने कहा : महाराज! मैंने आपसे यह सुना है कि यदि कोई आदमी अधर्मी हो तो महापुरुष उसका साथ नहीं देगा। पीह ह्वी द्रोह कर रहा है और चुंग मो प्रान्त पर अधिकार जमा बैठा है, और यदि आपने उसका साथ दिया तो लोग क्या कहेंगे?

गुरुदेव बोले : ठीक है मैंने यह कहा था। पर यह भी तो कहा जाता है कि यदि कोई वस्तु वास्तवमें कठोर हो तो बिना बारीक किए चूर्ण की जासकती है। यदि कोई वस्तु सर्वथा श्वेत रंग की हो तो काले रंग में डालने पर भी काली स्याह नहीं होती।

भाई मैं कटु भाषी नहीं हूं। मुझे जहां टांगोगे वहीं खाने वाले पहुंच जावेंगे।

८ कुंगमुनि बोले : तुमने वे छ शब्द सुने हैं जिनमें छ धोखे हैं ?

यू ने कहा : नहीं महाराज !

आप बोले : अच्छा बैठ जाओ। मैं बतलाता हूं।

एक है परोपकार का प्रेम बिना विद्या प्रेम के इसमें यह धोखा निकलता है कि ऐसा मनुष्य सीधा साधा उल्लु बन जाता है।

ज्ञान का प्रेम बिना विद्या प्रेम के। इससे आदमी का दिमाग व्यर्थ बातों में खर्च हो जाता है।

विद्या रहित निष्कपटता का प्रेम का धोखा यह है कि ऐसा मनुष्य हानिकारक परिणाम को ध्यान में नहीं लाता। विद्या रहित उचिंत वक्ता को यह धोखा है कि वह सन्मान को भूलजाता है। निर्भयता विद्या रहित प्रेम पर निर्भर हो तो मनुष्य बड़ों से नहीं दबता। दृढ़ता हो और विद्या प्रेम न हो तो मनुष्य का चरित्र बेठिकाना हो जाता है।

९ गुरुदेव ने कहा : मेरे बच्चो ! तुम प्राचीन काव्य क्यों अध्ययन नहीं करते। काव्य आत्मविचार में तुमको लगावेगा, तुमारे मन को उत्तेजित करेगा समाजमें प्रिय

बनना सिखावेगा, क्रोध को बस में करना बतावेगा, इन बातों से तुम पिता की सेवा के योग्य बनोगे।
काव्य के द्वारा तुम अनेक पक्षी, बनस्पति; और पशुओं के नाम भी जान जाओगे।

१० गुरुदेवने पीह यू से कहा : तुम प्राचीन काव्य शोमान चोमान को अवश्य विचारो। बिना इन को जाने आदमी के नेत्र नहीं खुलते।

११ यथा योग्यता के नियम गम्भीर हैं। "ऐसा करो, ऐसा मत करो" से दूर हैं। राग विद्या घंटी और नक्कारे से बहुत दूर है।

१२ गुरुदेवने कहा : जो दिलमें कमज़ोर है और सूरत बहादुरों कीसी बनाकर दिखाता है वह बहुत छोटे दिल-वाला कमीना है। हां वह उस चोर के समान है जो दीवार कूद कर घर में चोरी करने जाता है।

१३ तुह्मारे 'नेक और ख़बरदार' गांव के लोग वास्तव में चोर हैं।

१४ रास्ता चलते उस धर्म का वर्णन करना जो रास्ते में सुना हो धर्म को फेंक देना है।

१५ वे कैसे छोटे दिल के लोग हैं। वे कैसे राजा की सेवा कर सकेंगे। जब तक उनका अपना मतलब नहीं निकलता, उनका ध्यान मतलब पर रहता है और जब

काम निकल गया तो इसबात पर ध्यान रहता है कि जो मिला है वह खो न जाय। अपना लाभ बचाने के लिए वह सब कुछ नीच कर्म करने को तैय्यार हो जाते हैं।

१६ गुरुदेव ने कहा :

प्राचीन काल में मनुष्यों में तीन दोष थे। जो अब देखने में नहीं आते।

वे लोग अपनी उदारता में छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं देते थे। आज कल की उदारता छोटी छोटी बातों में ही रह गई है।

प्राचीन काल में जो गम्भीर होते थे वह कम बोलते थे। आज कल नित नए झगड़ों को गम्भीरता कहते हैं।

प्राचीन काल की मूर्खता का सूचक निष्कपटता थी। आज कल की मूर्खता बिलकुल धोखे बाज़ी में रह गई है।

१७ मीठी मीठी बातें और धीरे धीरे दिल में घर करने वाली शकल में धर्म बहुत कम देखा जाता है।

१८ मैं उनको घृणा करता हूं जो अपनी चलती ज़बान से ख़ान्दानों और रियासतों को तबाह करते हैं।

१९ कुंगमुनि बोले : जो मेरे चरित्र से शिक्षा नहीं सीखते उनको मैं जबान से भी नहीं सिखाऊंगा।

चे कुंग ने कहा : महाराज ! अगर आप उपदेश नहीं करेंगे तो हम क्या लिखेंगे ?

गुरुदेव बोले : क्या ईश्वर मुख से उपदेश करता है। चारों ऋतु अपने अपने समय पर आती हैं, और प्रकृति के सब काम सदा होरहे हैं पर ईश्वर मुख से नहीं बोलता।

२० जूपेय कुङ्ग मुनिसे मिलना चाहताथा। कुङ्गमुनि ने यह कह कर कि मेरी तबीयत अच्छी नहीं है उससे मिलना न चाहा। जब दूत यह संदेशा लेकर द्वार पर गया तो आपने सारंगी लेकर बजाई और गाना गाया जिससे जू पेय सुनले और जानजाय कि मुनि उससे मिलना नहीं चाहते थे। (यह पुरुष एक समय कुङ्ग मुनिका शिष्य था पर भलाई से दूर था)।

२१ चेवूने कहा : माता या पिता की मृत्यु पर तीन साल शोक मनाने की अपेक्षा एक साल काफी है। अगर महापुरुष तीन साल तक शोक मनाता हुआ यथा योग्यता और राग विद्या को त्याग देगा तो इनका ह्रास होना सम्भव है।

चे वू इस संबंध में कहने लगा : महाराज ! एक साल में अन्न निबट जाता है और नया नाज पैदा होता है। एक साल में काष्ट में भी नाना प्रकार की तब्दीली हो जाती है। एक साल के बाद शोक भी समाप्त हो जाना चाहिए।

गुरुदेव ने पूछा : माता या पिता की मौत के एक साल बाद अगर तुम अच्छे चावल खाओ या कलाबतून के जूते पहिनो तो क्या तुह्मारा जी खुश रहेगा ? वू ने कहा: हां जी रहना तो चाहिए।

गुरुदेवने कहा : अच्छा तुम्हारा जी खुश रहे तो ठीक है। देखो ! महापुरुष तीन साल के शोक में खानें में या राग में आनन्द नहीं पाता और रहने सहने में भी उसे आनन्द नहीं आता। इसी कारण उसे एक साल बस नहीं है।

जब चे वू बाहर चला गया तो मुनिराज बोलेः चे वू में अभी धर्म की कमी है। देखो ! जबतक बालक तीन वर्ष का न हो माता पिता उसे गोद में रखते हैं और चीन के महाराज्य में तीन साल का शोक हर स्थान पर मनाया जाता है। कोई पूछो तो सही कि तू ने बालकपन के प्रथम तीन साल में माता पिता के प्रेम का स्वाद लिया या नहीं ?

२२ गुरुदेव बोले :

उस पुरुष के बारे में क्या कहा जाय जो दिन भर ठूंस ठूंस के पेट भरता है और अपने मन को किसी भी नेक बात या काम में नहीं लगाता। जुआरी और चोपड खेलने वाले भी तो हैं ? हां ! यह लोग उनसे अच्छे हैं जो कुछ भी नहीं करते।

(गीता में श्री भगवान् ने रजोगुणी को तमोगुणी से अच्छा कहा है)

२३ चेल्हने कहा : महाराज ! क्या महापुरुष शूरता की कदर करता है ?

गुरुदेवने कहा : महांपुरुष धर्म को सबसे अच्छा समझता है। बिना धर्म के शूरता मनुष्य को अनाज्ञाकारी बना देती है। किसी छोटे आदमी में शूरता हो और धर्म न हो तो वह डाकू बन जाता है।

२४ चेकुंगने पूछा : क्या महापुरुष किसी को घृणा भी करता है ?

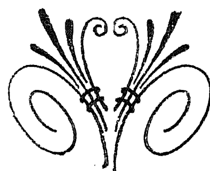
गुरुने उत्तर दिया : हां ! महापुरुष में घृणा भी होती है। जो दूसरों की बुराइयों को इधर उधर कहते फिरते हैं, जो छोटे पद पर होकर अपने से बड़ों की निन्दा किया करते हैं, जो केवल शूर हैं और धर्मरहित, जो अगुआ बनते हैं और पक्के हैं मगर छोटे दिलके हैं इन सब से महापुरुष नफरत करता है।

गुरुदेव ने पूछाः चे ! क्या तुमभी किसी से घृणा करते हो ? चेकुंग बोले : हां महाराज ! उनपुरुषों से जो दूसरों के भेद जानने को इधर उधर झांकते फिरते हैं और उनको कह कर अपनी बुद्धिमत्ता जताते हैं, उनको जो नम्रता रहित हैं पर अपने को शूर जताते हैं। उनको जो दूसरों

के भेदों को कहते फिरते हैं और अपने को स्वच्छ हृदय जताते हैं ।

२५ गुरुदेव बोले : सबसे ज्यादा मुश्किल नौकरों और बालाओं से बर्ताव करना है । अगर उनके साथ खुलकर मिलो तो वे नम्रता को भूलजाते हैं और गम्भीर रहो तो वे असंतुष्ट रहते हैं ।

२६ अगर चालीस साल की आयु वालेको लोग पसंद नहीं करते तो वह आदमी फिर सारी उम्र अप्रिय रहेगा ।



अध्याय १८

१ वे का राजा दर्बार से चला गया। के का राजा चाव महाराजा का गुलाम बन गया। पीकांग ने उनसे प्रति भाषण किया और वह मर गया।

(पिन वंशका अंतिम महाराजा चाव जो मसीहसे ११५३ साल पूर्व चीनका सम्राट था अति क्रूर और अधर्मी था)।

२ कुङ्ग मुनिने कहा: यिन वंश में यह तीन पुरुष धर्मात्मा होगए हैं:

लिव ही का जज्ज ह्वी। वह तीन बार पदच्युत किया गया। किसीने कहा: क्या अब आपको चला जाना योग्य नहीं है? उसने उत्तर दिया: धर्म के साथ मनुष्यों की सेवा करने में हर स्थान पर कष्ट होते हैं। कहां जाऊं? हर जगह से निकाला जा सकता हूं, और अगर फ़रेब, मक्कारी दग़ा से काम लेकर नौकरी करूं तो मुझे अपने माता पिता की भूमि त्यागने की आवश्यकता नहीं।

३ चे के राजाने कहा। मैं कुङ्ग मुनि का सन्मान के सर्दार के समान नहीं कर सकता। मैं उनका आदर उससे कम करूंगा।

मैं वृद्ध होगया हूं और कुङ्गमुनि के सिद्धान्त पर चलने की योग्यता नहीं रखता।

कुङ्गमुनि वहां से चलेगए।

४ चे के राजा ने लू के राजा को जिसके दर्बार में कुङ्गमुनि थे और जिनकी राज-पद्धति से लू का राज आदर्श बनगया था सुन्दर युवतियों को भेट में भेजा। लू का राजा तीन दिन इन सुन्दरियों के भोग विलास में मग्न हो दर्बार में न आया।

कुङ्गमुनि वहां से चलेगए।

५ ची यू नामक पागल जो चू राज में बसता था कुङ्गमुनि के पास से यह कहता निकल गया : हे कुंग, हे कुंग! तुम धर्म से कहां तक गिर गए हो! गत चरित्र पर तुम विचार कर सकते हो। तुह्मारी कोई न सुनेगा। क्यों व्यर्थ उद्योग करते हो? जो राज काज में भाग लेते हैं भय में पड़ते हैं।

कुङ्गमुनि रथ से उतरे और उससे बात करने की इच्छा प्रकट की, मगर वह चला गया। (यह कोई लालची का शिष्य था)।

६ चंग चू और कीनिह क्षेत्र में साथ साथ खेती का काम कर रहे थे। कुंग मुनि उधरसे निकले और चेलू को भेजा कि उनसे नदी के पार करने का स्थान मालूम करले।

चंग चू ने कहा: यह कौन है जो रथकी रस्सी थामें खड़े हैं?

चेलूने कहा : यह कुङ्ग महाशय हैं।

उसने पूछा : क्या लू राज के निवासी कुङ्ग महाशय यही है

चेल्हूने उत्तर दिया : हां । दूसरे ने कहा । उसको घाट मालूम है । चेल्हूने की निह से घाटका पता पूछा । उसने कहा : आप कौन हैं ? उसने उत्तर दिया मैं कुङ्ग मुनि का शिष्य चेल्हू हूं । यह सुन कर की निह कहने लगा : भाई ! इन दिनों तमाम चीन में बद अमनी की बाढ़ आ गई है । कोई भी मार्ग दिखाने वाला नहीं है । तुम ऐसे पुरुष के शिष्य बने हो जो आज यहां कल वहां मारा मारा फिरता है । तुम को किसी संन्यासी का शिष्य बनना चाहिए जो संसार त्याग बैठा हो । वही मार्ग बता सकेगा । यह कह कर की निह अपने काम में लग गया । चेल्हू ने जाकर यह बात कुङ्गमुनि को सुनाई । मुनिने स्वांस भर कर कहा : पक्षियों और पशुओं के साथ समान भाव पर रहना असम्भव है । यदि मैं आदमियों के साथ न रहूं तो किसके साथ रहूं ? अगर देशमें धर्म और शान्ति होती तो मेरी सेवा की आवश्यकता न थी । (यह दोनों पुरुष संन्यासवादी लाव ची के शिष्य थे । इनका मत था कि प्रकृति सब काम आपही करती है । मनुष्य का काम दिनरात ध्यान, वैराग्य रहता है । कुङ्गमुनि का सिद्धान्त त्याग वैराग्य नहीं है, जन सेवा और धर्म प्रचार है, सत्यपालन और निष्काम कर्म है ।)

७ गुरुदेव के साथ चलते चलते एक दिन चेल्हू पीछे रहगया ।

उसे मार्ग में एक वृद्ध पुरुष मिला जिसके कंधे पर खर पतवार रखने का टोकरा था। चेल्लने उससे पूछा : तुमने हमारे गुरु देव तो इधर जाते नहीं देखे? वह बोला : तुमको महनत करने की आदत नहीं है। न तुम पांच क़िसम के नाजों की पहिचान जानते हो। कहो तो सही तुह्मारा गुरु कौन है? यह कह कर उसने अपना दण्ड ज़मीन पर रख दिया और घास काटने लगा।

चेल्ल छाती पर हाथ रखकर वहां खडा रहा। इस वृद्ध ने चेल्ल को रात हो जाने पर अपने घर जाने को कहा। घर लाकर चेल्ल को आराम से रात भर रक्खा उसकी खातिर मुर्गा पकाया, जौका दलिया बनाया और खूब खातिर की। अपने दो पुत्रों से भी मुलाकात कराई।

दूसरे दिन चेल्ल जाकर कुङ्ग मुनि से मिला और वृद्धकी खातिर का हाल कहा। कुङ्गमुनि बोले : यह महात्मा था। जाओ और उससे मिलकर कुछ सीखो। चेल्ल फिर वहां गया पर वृद्ध महात्मा वहां न थे।

चेल्लने कुटुम्बियों से कहा : सरकारी पद ग्रहण न करना धर्म नहीं है। छोटे और बडों के परस्पर संबंध को पालन करना धर्म है तो राजा और प्रजा के परस्पर संबंध को पालन करना धर्म संगत है। वह महात्मा अपनी आत्मा को तो पवित्र रखते हैं पर जन पद में गड़ बड़ को नहीं मिटाते। महापुरुष सर्कार का अफ़सर बन कर अपना धर्म पूरा

करता है। उसको यह विदित है कि कभी कभी धर्म का प्रचार बेकार भी होता है।

८ निम्नलिखित महात्मा संसार त्याग कर विरक्त होगए हैं : पीहए, शूनत्जे, यू चंग, ई ईह।

९ चाव के राजाने अपने पुत्र को यह शिक्षा दी: धर्मात्मा राजा अपने कुटुम्बियों को नहीं भूलता। प्रधान प्रधान मंत्रियों को पछताने का मौका नहीं देता। उनको दर्बार में स्थान देता है। पुराने खान्दानी नौकरों को बिना किसी बड़े और बेइन्साफ वाले कसूर के मौकूफ नहीं करता।

चाव के राज में यह पुरुष उच्च पदाधिकारी होगए हैं:। पिहटा, पीह को, छुंग टूह, छुंग कुह, शुह याये, शुह ही, के स्वे, और के क्वा। (यह आठों भाई थे। दो दो एकमाता से उत्पन्न हुए थे। जब महापुरुष होते हैं तभी राज उन्नत होता है।)

चू चांग, ह्वे, और शाव लीन।

आधीनता स्वीकार न कर अपना चरित्र पवित्र रखने के अर्थ संसार त्यागी पीहए और शूनत्जे हुए हैं।

ह्वे और शाव लीव ने आधीनता स्वीकार की पर अपने चरित्र पर भी धब्बा लगाया पर उनका कथन युक्ति संगत है और उनके कर्म आदर्श रूप हैं।

यू चिंग और ई ईह धर्मरक्षार्थ संसार को त्याग गए पर इन्होंने अपनी ज़बान पर क़ाबू न पाया। जंगल में बस

कर इन्होंने समय के अनुसार (धर्मानुसार नहीं) चलन रक्खा।

मेरा विचार इन सब से निराला है। मैं पहिले से अपना विचार व चरित्र किसी मामले में स्थिर नहीं करता। धर्म और यथा योग्यता मात्र पर चलता हूं।

१० चे और ची राज के गायनाचार्य्य दर्बार त्याग कर अन्य स्थानों पर चले गए।

(चीन के राजा भोजन के समय गान सुनते थे। नोबत प्रात: सायं बजती थी)।



अध्याय १९

•

१ चे चांग ने कहा : वह विद्वान् जिसने राज सेवा सीखली है भय उपस्थित होने पर प्राण बलिदान करने को तैय्यार होता है। जब लाभ प्राप्ति का अवसर हो तो वह विद्वान् धर्म का विचार करता है। यज्ञ के समय उसके विचार सन्मान पूरित होते हैं। शोक (मृत्यु) के समय यथोचित शोक करता है। हम अवश्य ऐसे पुरुष का आदर करते हैं।

२ चे चांग ने कहा : ऐसा पुरुष का होना न होना एक सा है जो धर्म में स्थिर होता हुआ उसमें उन्नति करन का उद्योग नहीं करता। सद् नियमों में विश्वास करता है पर निष्कपटता में दृढ़ नहीं।

३ चे ही के शिष्यों ने चे चांग से आपस में मेल मिलाप के विषय में प्रश्न किए। चे चांग पूछने लगा : चे ही इस विषय में क्या कहते हैं ? वे बोले: जिससे फायदा न कर सकें उनको दूर करो।

यह सुन चे चांग बोला : जो मैंने (इस विषय में) सुना है आप के कथन से भिन्न है महापुरुष गुणों और धर्मात्माओं को आदर करता है और शेष सबके साथ निबाह करता है। नेक की तारीफ़ करता है। अयोग्य पर रहम करता है।

क्या मैं गुण और धर्म सम्पन्न हूं ? संसार में ऐसा कौन है जिसके साथ मैं निर्वाह नहीं कर सकता ? क्या मैं गुण और धर्म रहित हूं ? तो आदमी मुझे दूर रक्खेंगे ? मुझे दूसरों को अपने से दूर रखने की क्या ज़रूरत ?

४ छोटी विद्या और रोजगारों में भी कुछ न कुछ खूबी है। अगर सदा ऊंचे ऊंचे गुणों का ही ध्यान किया तो छोटे गुणों और छोटे विद्वानों का काम ही न रहेगा। यह महापुरुषका विचार है।

५ चे ही बोला : वही पुरुष ज्ञान–प्रेमी कहाता है जो नित नित यह विचारे कि मैंने अब तक क्या क्या नहीं सीखा और प्रति मास जो कुछ जाना है उसे न भूले।

६ चेही ने कहा : धर्म प्राप्ति का मार्ग यह है : दृढ़ और निष्कपट अभिप्राय रख कर खूब विद्या सीखना। उत्साह सहित विचार करना, धर्मका आचरण करते हुए विचार में लगा रहना।

७ लुहारों की दुकानें एक अलग मुहल्ले में होती हैं जिससे उन्हें अपने काम में सुविधा हो। महापुरुष इस लिए ज्ञान प्राप्त करता है कि परम धर्म कि प्राप्ति हो।

८ नीच पुरुष अपने दोषों पर निश्चय कलई करता है।

९ चेही ने कहा : महापुरुष में तीन बातें अलग अलग होती हैं: दूर से देखने में महापुरुष रूखा (कठोर) मालूम

होता है। मिलने पर नम्र मालूम होता है। जब बात करता है तो उसकी भाषा दृढ़ और असंदिग्ध होती है।

१० महापुरुष पहिले लोगों में विश्वास उत्पन्न करता है फिर उनसे काम लेता है। अगर उनका उसमें विश्वास न हो तो उसे ज़ालिम समझेंगे। राजा का विश्वास ग्रहण कर उससे वाद विवाद करता है।

११ चे ही ने कहा : जब कोई मनुष्य परम धर्म को पालन करता है तो छोटी छोटी बातों में भी वह धर्मको नहीं त्यागता।

१२ जे़ यू कहने लगा : जेही के विद्यार्थी और शिष्य फरश साफ करने, बुहारी देने और आगे पीछे चलने में चतुर हैं। पर यह बातें ज्ञान की शाखाएं हैं। जो सच्चा ज्ञान है उससे यह लोग दूर हैं। कैसे कहें कि इन्होंने आवश्यक विद्या ग्रहण करली है ?

चे ही ने यह बात सुनी और कहा : शोक ! जे़ यू नहीं समझा। महापुरुष अपनी शिक्षा में कौनसी बात को सबसे ज़रूरी समझता है और सबसे आगे सिखाता है ? कौनसी बात को कम ज़रूरी समझकर पीछे सिखाता है ? पर हां जैसे पौदे अपने वर्ग के अनुसार छांटे जाकर लगाए जाते हैं वैसे ही महापुरुष अपने विद्यार्थियों को उनकी योग्यतानुसार शिक्षा देता है। वह किसी को भी मूर्ख नहीं बनाता।

मुनि अपने शिष्यों में छोटी छोटी बातें और महा गम्भीर ज्ञान दोनों मिला देता है ।

१३ चेही ने कहा : जब अफसर को फुर्सत मिले तो उसे अपना समय विद्याध्ययन में लगाना चाहिए । विद्यार्थी जब विद्याध्ययन कर चुके तो उसे अफसर बनना चाहिए ।

१४ मृत्यु पर शोक की सीमा होनी चाहिए ।

१५ मेरा मित्र चंग कठिन कठिन कामों को करलेता है तोभी पूर्ण धर्मात्मा नहीं है ।

१६ ज्ञानी चांग ने कहा : चंग का चलन कितना शानदार है ! पर उसके साथ साथ पूर्ण धर्म पर चलना कठिन है ।

१७ ज्ञानी चांग बोला: मैंने अपने गुरुजी से सुना है कि और बातों में मनुष्य अपनी पूर्ण योग्यता प्रकाश नहीं करते पर माता–पिता की मृत्यु पर शोक में कमी नहीं करते ।

१८ ज्ञानी चांग ने कहा : मैंने गुरुदेव से सुना है कि मान चांग पितृ–धर्म में और बातों में तो साधारण लोगों के समान था पर उसने पिता के चुने हुए मंत्रियों को पद पर रक्खा और हुकूमत में उनके अनुसार चला । यह बात कुछ मामूली नहीं है ।

१९ मांग राजाने यांग फू को न्यायाधीश बनाया । इसने ज्ञानी चांग की सलाह ली । चांग ने कहा : राजा अपना धर्म त्याग

चुके हैं इससे प्रजा में बेचैनी होरही है और अमन में खलल आ गया है। जब तुम को किसी के अपराध का पूरा प्रमाण मिल जाय ता अपराधी पर शोक और दया करना। अपनी योग्यता पर घमंड न करना।

२० चे कुंग ने कहा : चाव ऐसा पापी नहीं था जैसा लोगों ने उसे नाम दे रक्खा है। महापुरुष ऐसी नीची अवस्था में रहना नहीं चाहता जहां सब स्थान की गंदगी बह कर उस पर आपड़े।

२१ चे कुंग ने कहा : महापुरुष के दोष ऐसे होते हैं जैसे सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण में ग्रस जाना।
उसमें दोष हैं तो उनको सब लोग देखते हैं और जब वह उन दोषों को त्याग देता है तो सब लोग उसकी ओर देखते हैं।

२२ वे के निवासी कुंग–सुन–चावो ने चे कुंग से पूछा : चांग ने किससे ज्ञान सीखा ?
चे कुंगने उत्तर दिया : वान और वू की शिक्षा अभी तक बाकी है। गुणी और धर्मात्मा उसको जानते हैं। जिनमें पूर्ण धर्म अभी नहीं है वह छोटी बातों में उस शिक्षा पर चलते हैं। सब लोग वान और वू की शिक्षा पर चल रहे हैं।
आपके गुरुदेव मुनि थे इस कारण उनको किसी एक शिक्षक की आवश्यकता न थी।

२३ शू सुन ने राज दर्बार में कहा : चे कुंग तो कुङ्गमुनि से आगे निकलगया। चे कुंगने यह बात चेफु—कुंग—पी से सुनी और बोला : घर के चारों ओर घेर वाली दीवार और घर में तुलना करो। मेरे घर की दीवार मेरे कंधे तक आती है। कोई भी उसपर से झांक कर मेरा सारा घर देख सकता है।

गुरुदेव के घर की दीवार कई मंजिल ऊंची है। जब तक किसी को द्वार का पता न लगे और भीतर न जा सके वह वहां के सुन्दर मंदिर और पुस्तकालय और अफसरों को नहीं देख सकता।

हां! मैं यह कह सकता हूं कि अबतक किसी बिरले ने ही गुरु गृह का द्वार पाया है। सर्दार ने जो कुछ कहा वह मेरी आशा के अनुसार ही है।

२४ शूह—शिन—वू—शुह ने कुङ्गमुनि की निन्दा की। चे कुंग कहने लगा: मुनिराज की निन्दा में समय नष्ट करने से क्या लाभ? और पुरुषों के गुण और धर्म छोटी छोटी पहाड़ियां और मिट्टी के ढेर के समान हैं जिन पर हो कर कोई भी गुजर सकता है। कुङ्गमुनि सूर्य अथवा चन्द्रमा के समान हैं जिन पर से कोई भी पार नहीं हो सकता। अगर कोई पुरुष गुरुदेव से दूर रहे तो इस में उन की क्या हानि है? वह सूर्य को उससे अलग रहकर कोई नुकसान

नहीं पहुंचा सकता। वह यही बताता है कि उसे अपनी शक्ति का आप पता नहीं।

२९ चेकिन ने चे कुंग से कहा : तुम हद से ज्यादा नम्र हो। कुंग मुनि तुमसे अधिक गुणी और धर्मात्मा कैसे हो सकते हैं ?

चे कुंगने कहा : अवसर एक शब्द में आदमी की बुद्धिमत्ताका और एक शब्द में ही उसकी मूर्खता का पता लग जाता है। इस कारण हर एक शब्दको सोच समझ कर कहना चाहिए।

गुरुदेव की बराबरी कोई नहीं कर सकता। नसेनी लगा कर कोई आसमान पर नहीं पहुंच सकता।

अगर हमारे गुरुदेव किसी रियासत के वज़ीर होते तो तुम देखते कि जो चिन्ह मुनिने राज्य के कहे हैं वह सब उस रियासत में होते। वह यह हैं।

वह जहां लोगों को लगावेगा वहीं पौदे की माफिक लग जावेंगे। वह आगे चलेगा तो तुरंत लोग पीछे हो लेंगे। वह उनको उत्तेजित करेगा तो लोग तुरंत एक हो जावेंगे।

जीवन में वह प्रकाशवान् होगा। मृत्यु पर सब उस का शोक करेंगे। भला उसकी बराबरी कौन कर सकता है।



अध्याय २०

१ महाराजा यात्रो ने कहा : हे शुन ! ईश्वर दत्त राज्याधिकार अब तुमको मिला है । सदा बीच का मार्ग सर्वोत्तम समझना । अगर चार समुद्र के बीच कहीं भी लोगों में दुःख या आपत्ति देखी गई तो ईश्वर की कृपा का तुम पर अंत हो जायगा ।

(यह आदर्श महाराजा चीन में मसीह से २६०० साल पूर्व हुए हैं । इन्होंने शुन को अपना राज दिया । पुत्र धर्मात्मा न था इस लिए उसे राज न दिया । १२० साल की आयु में १०० वर्ष राज्य भोग कर प्रजा का सब प्रकार हित करते हुए परलोक सिधारे) ।

शुव ने जब यू को राज सौंपा तो यही शब्द कहे ।

२ महाराजा टांग ने कहा : हे सर्वोच्च और महा प्रभु परमात्मा देव ! मैं छोटा हूं । मैं यह कहता हूं, हे देव ! मैं पापी को क्षमा नहीं करता; और तेरे योग्य मंत्रियोंको नहीं भूलता । उनके मन का भाव तो हे परमात्मन् ! तुम ही जानते हो । मेरे अपराध सब मेरी गर्दन पर हैं, हे मेरी प्रजा, वह तुम्हारे ऊपर नहीं । जो अपराध तुम करते हो वह सब मेरे हैं ।

(यहां पापी से मतलब ज़ालिम महाराजा ही है । राजा यदि प्रजा को शिक्षा देकर सुखी न रक्खे तो देश में

अपराध नहीं होते । यदि राजा स्वयम् स्वार्थी और अधर्मी हो तो प्रजा में अपराध होते हैं । रामचन्द्र के राज में अपराध कहां थे ?)

महाराजा चावो ने गुणियों को बहुत कुछ दिया और उन को कभी कमी न रही ।

वह तोल के वजन और तराजू को ठीक रखता था । कानून को विचारा करता था । अफसरों को न्याय पूर्वक पद देता था । उसके राज में धर्म रहा ।

उसने मरे राज्यों को फिर जीवित किया । जिन वंशों का अंत हो गया था उन को फिर उठाया । जो गुणी लोग भाग गए थे उन को बुलाया और प्रजा का दिल उसके हाथ में रहा ।

जिन पदार्थों को वह सबसे अधिक जरुरी समझता था वह यह हैं : आदमियों को भोजन, शोक की रीति, और यज्ञ ।

अपनी उदारता से वह सब पर अधिकार करता था । अपनी निष्कपटता से सब लोगों का विश्वास (श्रद्धा) खींचलेता था । अपने सच्चे पुरुषार्थ द्वारा बडे बडे काम करलेता था । उसके न्याय से सब प्रसन्न थे ।

३ चे चांग ने कुंग मुनि से पूछा कि किस कर्म के करने से हुकूमत अच्छी तरह स्थापित हो सकती है ।

मुनिराजने कहा पांच बातों को ग्रहण करे और चार को

त्याग दे। चे चांग बोला : महाराज ! कौन सी पांच वस्तु उत्तम हैं जो ग्रहण करनी योग्य हैं ?

गुरुदेव ने कहा : जब अधिकार प्राप्त हो तो परोपकार करे पर फजूल खर्च न बने। आदमियों से उतना काम ले कि वे हद से ज्यादा न थकजाएं। अपने लाभ प्राप्ति में लालची न बने। गम्भीर रहे पर घमंड न करे शान रक्खे पर भयानक न बने।

चे चांग ने कहा : "बिना फ़जूल खर्ची के परोपकार करे" इस वाक्य का क्या मतलब है ?

मुनि बोले : जिन पदार्थों से पुरुष लाभ उठाते हैं उनको और अधिक लाभ दायक बनाना। इसी प्रकार लोगों से यथा योग्य काम ले तो वे नहीं थकेंगे। जब किसी की भीतरी इच्छा लोगों का उपकार करने की है तो उसे कौन लालची कहेगा ?

चाहे बहुत आदमियों से व्यवहार करे चाहे कम से सबके साथ इज्जत का बरताव करे ! ऐसा करेगा तो घमंडी नहीं कहावेगा। अपने वस्त्रों को योग्यतानुसार पहिने, टोपी को सीधी लगाकर गम्भीर बने तो लोग उसे भयंकर न कहेंगें।

चे चांग ने फिर पूछा : चार बुरी बातें कौन सी हैं ?

गुरुदेव बोले : मनुष्यों को शिक्षा न देना और उनको मारडालना (या सज़ादेना) इसका नाम जुल्म है।

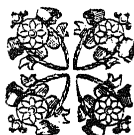
लोगों को बिना चेतावनी दिए एकदम घोर कर्म में लगाना क्रूरता कहाता है।

हुक्म निकालने के समय यह दिखाना कि इन की अभी जरूरत नहीं पर वक्त पड़ने पर काम आवेंगे और फौरन उन पर सख्ती के साथ अमल कराना इसको सताना कहते हैं। लोगों को इनाम या वेतन तो देना मगर कंजूसी के साथ इसका नाम अफ़सरी जताना है।

४ गुरुदेवने कहा : बिना ईश्वर की आज्ञा को स्वीकार किए कोई भी महापुरुष नहीं हो सकता।

शब्दों की शक्ति को बिना जाने आदमियों की पहिचान होना असंभव है।

इति



श्रीसयाजी साहित्यमाला में प्रकाशित

धर्म, नीतितत्त्व व तत्त्वज्ञान

विषयों के ग्रंथ.

---

१. (६)–**हिंदुस्थानना देवो**:–स्व. कमळाशंकर प्राणशंकर त्रिवेदी, बी. ए. E. E. O. Martin कृत " Gods of India " का गुजराती अनुवाद (१९१७) किं. रु. ४–०–०

२. (७)—**नीतिशास्त्र**:–प्रो. अतिसुखशंकर कमळाशंकर त्रिवेदी, एम. ए., एलएल. बी. Reshdall's " Ethics " नामक ग्रंथका गुजराती अनुवाद (१९१८) किं. ०–१४–०

३. (२३)—**दीघनिकाय भाग १ ला.** :–स्व. प्रो. चिंतामण वैजनाथ राजवाडे, एम्. ए., बी. एससी. [**मराठी**] (१९१८) किं. १–८–०

४. (२७)—**नीतिविवेचन**:–मेसर्स ए. जी. विजरी, अतिसुखशंकर क. त्रिवेदी, और मणिलाल मो. झाला. (१९१८–१९२६) किं. १–२–०

५. (३२)—**तुलनात्मक धर्मविचार** :–मूळशंकर माणेकलाल याज्ञिक बी. ए. (१९१९) किं. ०–१३–०

६. (३६)—**धर्मनां मूळतत्त्वो** :–रामप्रसाद काशीप्रसाद देसाई बी. ए., Stanley Cooks कृत " Foundations of Religion " का अनुवाद (१९१९) ०–१०–०

७. (३७)—**नैतिक जीवन तथा नैतिक उत्कर्ष** :–कांतिलाल केशवराय नाणावटी, एम्. ए. " The Moral life and Moral Worth " का गुजराती अनुवाद. (१९१८) किं. ०–१५–०

८. (४१)—**विविध धर्मोनुं रेखादर्शन** :–रामप्रसाद काशीप्रसाद देसाई. बी. ए. मेक्युलोक कृत " Religion " का गुजराती अनुवाद (१९२०) किं. ०–१२–०

९. (४४)—**उत्तर युरोपनी पुराणकथा** :–
काजी, बी. ए. होफमेन कृत " Northern
गुजराती अनुवाद (१९२०) किं. ०–१४–०

१०. (७१)—**उदासीपंथनां नीतिवचनो**:–प्रो.
एम. ए. (१९२३) किं. ०–१०–०

११. (७६)—**नीतिविवेचन**:–कांतिलाल केशवराय
नीतिविवेचनका हिंदी भाषांतर (१९२३) किं. १–

१२. (८०)—**तुलनात्मक धर्मविचार**:–राजरत्
राधाकृष्ण. [**हिन्दी**] (१९३१) किं. १–०–०

१३. (८१)—**सत्यमीमांसा**:–हीरालाल व्रजभूखणद
विद्याभूषण Wildon Carr कृत " The Prob
का गुजराती अनुवाद. (१९२३) किं. १–१–०

१४. (८६)—**अवतार रहस्य**:–शांतिप्रिय आत्मारा
(१९२२) किं. ०–१४–०

१५. (९७)—**मनोधर्मविद्यानां मूळतत्त्वो**:–हिंम
बक्षी. बी. ए. W. Mcdougall कृत " Ps
अंग्रेजी का गुजराती अनुवाद (१९२५) ०–११–

१६. (११२)—**तत्वज्ञानांतील कूट प्रश्न**:–दाजी
एलएल. बी. Bertrand Russell कृत "
Philosophy " का **मराठी** अनुवाद (१९२६

१७. (११८)—**सिद्धान्तदर्शन**:–वे. शा. सं. छोटा
कलादीप. (१९२७) किं. १–११–०

१८. (१२२)—**परिवर्तनवाद**:–दयाशंकर जयशंकर
Henry Bergson कृत " Philoshopy of
गुजराती अनुवाद (१९२८) ०–१०–०

१९. (१३२)—**श्रीमद् भगवद्गीता:**-(श्री शंकरानंदी टीका सहित) **भाग प्रथम,** मोतीलाल रविशंकर घोडा. बी. ए एलएल बी. गुजराती अनुवाद (१९२८) किं. २-४-०

२०. (१३५)—**रुद्री अष्टाध्यायी:**-पुरुषोत्तम जोगीभाई भट्ट, बी. ए. एलएल. बी. (गुजराती) (१९२८) किं. १-८-०

२१. (१५१)—**श्रीमद् भगवद्गीता भाग २:**-मोतीलाल रविशंकर घोडा, बी. ए. एलएल बी. गुजराती अनुवाद (१८२८) किं. १-१०-०

२२. (१६९)—**वैयासिक न्यायमाला:**-वे. शा. सं. छोटालाल नरभेराम भट्ट, (गुजराती) कलादीप. (१९२८) किं. १-८-०

२३. (१७७)—**श्रीमद् भगवद्गीता:-भाग ३.** मोतीलाल रविशंकर घोडा बी. ए., एलएल. बी. किं. २-२-०

२४. **स्वयंप्रेरणा:**-रविशंकर अंबाशंकर छाया बी. ए., एलएल. बी. 'Auto-suggestion' का गुजराती अनुवाद (१९३०) किं. १-१-०

२५. (१८२)—**ऋग्वेद संहिता:-अष्टक पहेलुं-पूर्वार्ध:**-मोतीलाल रविशंकर घोडा, बी. ए. एलएल. बी. गुजराती (१९३०) किं. २-८-०

२६. (१८६)—**ज्ञानकांतिल निवडक गोष्टी:**-प्रो. चिंतामण विनायक जोशी, एम. ए. (१९३०) [**मराठी**] किं. १-१२-०

२७. (१९२)—**पाश्चात्य तत्त्वज्ञान:**-कै. प्रो. दत्तात्रय गो. केतकर, एम. ए. [**मराठी**] (१९३१) किं. १-१२-०

२८. (१९५)—**ऋग्वेद संहिता:-अष्टक पहेलुं:-उत्तरार्ध:**-मोतीलाल रविशंकर घोडा. बी. ए. एलएल. बी. (गुजराती) (१९३१) किं. २-९-०

२९. (१९६)—**दीघनिकाय भाग २ रा :**-स्व० प्रो. चिंतामण वैजनाथ राजवाडे [**मराठी**] (१९३२) किं. २-८-०

३०. (२००)—**धर्मोनी बाल्यावस्था**:–चुनीलाल म. देसाई. बी. ए. 'Childhood of Religions' का गुजराती अनुवाद (१९३२) किं १-२-०

३१. (२०२)—**बौद्धधर्म अर्थात् धर्मचिकित्सा**:–रा. रामचंद्र नारायण पाटकर बी. ए. Mrs. Rhys Davis कृत Buddhism का मराठी अनुवाद (१९३२) किं. १–०–०

३२. (२०५)—**वीरशैव संस्कृति**:–रा. शंकर गोविंद साखरपेकर, स्वामी रामसिंग करमाळेकरके मराठी पुस्तकका गुजराती अनुवाद (१९३२) किं. ०–१३–०

३३. (२११)—**सुलभनीतिशास्त्र**:–दाजी गणेश आपटे बी. ए. एलएल. बी. [मराठी] (१९३३) किं. ०–११००

३४. (२१३)—**नीतिशास्त्रप्रबोध**:–दाजी गणेश आपटे बी. ए. एलएल. बी. [मराठी] (१९३३) किं. २–०–०

३५. (२१५)—**कुङ्गमुनि ज्ञानामृत**:–डा. हरिप्रसादशास्त्री डी. लिट्. चीनदेशके कन्फ्यूशिअस के असल चीनी ग्रंथ के उपदेश का हिन्दी अनुवाद यह कुङ्गमुनि के चार ग्रंथोंमें प्रधान माना जाता है। इसकी सहस्रों टीकाएं और भाष्य विद्यमान हैं। जिस एक पुस्तक ने चीनी जाति को सभ्यता सिखाई और अबतक जीवित रखा वही यह पुस्तक है। पृ. सं. (२११) (१९३३) किं. १–०–०